

।। ॐ श्री सत्नाम साक्षी ।।



युगपुरुष आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के जीवन से जुड़े हुए...

108



प्रस्तुतकर्ता 'साधक' प्रेमप्रकाशी संत मोनूराम श्री अमरापुर दरबार (डिब), जयपुर

युगपुरुष आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के

जीवन से जुड़े हुए

108



संकलन एवं सम्पादन 'साधक' प्रेमप्रकाशी संत मोनूराम श्री अमरापुर दरबार (डि<u>ब</u>), जयपुर 3ੱ੦ श्री ਜ

स त् ना म

म सा क्षी **५**

५५ ॐ श्री स त्

ना म सा क्षी **५५** % श्री

स त्ना म सा क्षी

ॐ श्री स त्ना म सा क्षी

क्षी **५५** ॐ श्री स त्

म

सा

क्षी

卐

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

30

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

स

त्

ना

म

सा

क्षी

श्री प्रेम प्रकाश पंथ के संस्थापक

मंगलमूर्ति आचार्य सद्गुरु खामी टेऊँराम जी महाराज

परब्रह्म परमात्मा की घोषणा है कि जब जब धर्म का विनाश होने लगता है, तब-तब मैं अनेक रूपों में प्रकट होता हूँ। भगवान श्रीराम, भगवान श्रीकृष्ण आदि पूर्णावतार और संत-महात्मा साक्षात् धर्म के अवतार होते हैं और इन्हीं साक्षात् धर्म के अवतारों में श्री प्रेम प्रकाश पंथ के संस्थापक आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज भी एक हैं।

यदा हि देशे यवनं प्रकोपात्, सिन्धोसमीपे बत धर्म हानिम्। जनाञ्च सर्वान व्यथितान विलक्ष्यः, श्री टेऊँरामेण धृतोऽवतार।।

आचार्यश्री का इस पृथ्वी पर अवतरण सम्वत् 1944 को आषाढ़ माह के शुक्ल पक्ष की षष्ठी तिथि, शनिवार (6 जुलाई सन् 1887) के दिन प्रातः 5 बजे धर्ममयी माता कृष्णादेवी व पिता श्री चेलाराम के घर हुआ। आचार्यश्री के अवतरण के समय चारों ओर शीतल मन्द सुगन्धित पवन चल रही थी। आनन्द की लहरें उठकर, वर्षा की नन्ही बूंदें, पुष्पों के रूप में बरस रही थीं, प्रकृति ने अपना पूरा आनन्द बिखेर कर वातावरण स्वर्ग के समान कर दिया। कुल-पण्डित आचार्य श्री जयराम जी ने ग्रह नक्षत्र देखकर भविष्यवाणी की "बच्चा होनहार होगा तथा अवतार के रूप में कहलायेगा।" नामकरण संस्कार में आचार्यश्री का नाम 'टेऊँराम' रखा गया।

निर्गुण पूर्ण पारब्रह्म, जो सत् चित सुखधाम। कृष्णा के घर प्रकटिया, बालक टेऊँराम।।

बचपन से ही आपको ईश्वर भक्ति सम्बन्धी वातावरण प्राप्त हुआ। माता ने सर्वप्रथम आपको 'राम'का नाम बोलना सिखाया।

आपके खेलने का ढ़ँग सबसे अलग था, बच्चों को एकत्रित कर स्वयं नेत्र बन्द कर आसन लगवाकर 'राम-नाम' की धुनि लगाया करते थे, जिससे पूरा वातावरण ही 'राम-मय' हो जाता था।

आपका चित्त तो सदैव ईश्वर-भिक्त में ही रहता था। प्रतिदिन नदी िकनारे अथवा एकांत में जाकर ईश्वर का ध्यान करते रहते, भूख-प्यास से बेखबर अपनी ही मौज में रहकर विचार करते िक मुझे इस संसार सागर से उस पार अर्थात् परमात्मा की ओर जाना है। परमात्मा की ओर जाने में मोह, ममता बाधक बनी हुई है, इन सबका त्याग करके परमात्मा की ओर जाने के लिये सत्पुरुषों का मार्गदर्शन लेना होगा। कर्म करते हुए मन में यही इच्छा है िक मैं 'परमात्मा' को

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना

म

सा क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

άE 纲 स त् ना म सा क्षी 卐 άE 纲 स त् ना म सा क्षी 卐 άE 纲 स त् ना म सा क्षी 卐 άE 纲 स त् ना म सा क्षी **5**5 άE 纲 स त् ना

म

सा

क्षी

卐

'प्यारा' लगूँ। मात्र 14 वर्ष की अवस्था में आपने स्वामी आसूरामजी महाराज से गुरु दीक्षा प्राप्त की। आपने गुरुदेव के सानिध्य में रहकर भूख-प्यास, दुःख-सुख, सर्दी-गर्मी आदि कष्टों को सहन करने की शक्ति प्राप्त की।

सत्गुरु के युग चरण की, सेवा करि निष्काम। स्वामी आसूराम से, मंत्र लिया सुख धाम।।

अपने सदुपदेशों में गुरु महाराज जी कहते थे कि मानवता से बड़ा कोई धर्म नहीं है। कुदरत ने इस पृथ्वी पर करोड़ों जीव-जन्तु पैदा किये हैं, उनमें केवल मनुष्य ही अलग-अलग धर्मों में बंटे हुए हैं। क्या पेड़-पौधों, पशु-पिक्षयों में धर्म का विभाजन हुआ है? जब उनमें धर्म का विभाजन नहीं हुआ है तो मनुष्य ने क्यों अपने को अलग-अलग धर्मों में बाँट रखा है। प्रकृति के सभी नियम जैसे गर्मी, सर्दी, वर्षा सभी धर्मों में एक से लागू हैं तो फिर मनुष्य जाति क्यों धर्म के नाम पर अलग-अलग बंटी हुई है।

श्री गुरु महाराज जी द्वारा ऐसे सच्चे धर्म के प्रचार का परिणाम यह हुआ कि उनके अनुयाइयों में हिन्दू-मुस्लिम आपस में प्रेम-पूर्वक रहने लगे।

सत्य-मार्ग पर लोगों को राह दिखाने हेतु गुरु महाराज जी ने संत मण्डल की स्थापना की, जिसका नाम 'प्रेम प्रकाश मण्डल' रखा। एक बार अपनी सन्त-मण्डली के साथ देशारटन करते गुरु महाराज जी सिन्ध प्रान्त के नवाबशाह जिले के टण्डाआदम शहर के दक्षिण में एक घने जंगल में आकर रुके। इस घने जंगल में जगह- जगह रेत के टीले थे, यहीं पर अपनी मण्डली के साथ कर-सेवा करके २०-२५ झोपड़ियों व सत्संग स्थल का निर्माण कर 'श्री अमरापुर स्थान' की स्थापना की। यह स्थान डिब् के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

श्री गुरु महाराज जी ने अपने मूल मंत्र 'सत्नाम साक्षी' को प्रणाम-मन्त्र के रूप में प्रेमियों को आत्म-सात् करने की दीक्षा दी। 'सत्नाम साक्षी' महामंत्र आज भी पूरे विश्व में अपनी खुशबू बिखेर रहा है। 'प्रेम प्रकाशी' एक दूसरे का अभिवादन 'सत्नाम साक्षी' के सम्बोधन से ही करते हैं।

सद्गुरु महाराज जी ईश्वर से यही प्रार्थना करते थे कि सभी को सद्बुद्धि दो ताकि मानव सत्यधर्म पर चलते हुए, सच्चे कर्तव्यों का पालन करते रहें और अपने निश्चित जीवन का सफर शान्ति से पूरा कर सके।

श्री अमरापुर स्थान के सम्बन्ध में आचार्यश्री का कथन है कि इस पावन स्थान के दर्शन करने मात्र से मनुष्य की वृत्ति सत्कर्मों की ओर बढ़ती जाती है और इस पावन स्थल पर सत्संग का श्रवण करने से मनुष्य अमर हो जाता है।

देखो प्रेमी आय के, अमरापुर स्थान। संत समागम पाय के, अपना करो कल्यान।।

धर्म के सम्बन्ध में आचार्यश्री का कथन है- कि धर्म के कारण ही जीवन की उन्नति होती है और सद्गति की प्राप्ति होती है, इसलिए जिस धर्म में जन्म लिया है, उसे कभी भी नहीं छोड़ना

άE 纲 स त् ना म सा क्षी 卐 άE 纲 स त् ना म सा क्षी 卐 Š 纲 स त् ना म सा क्षी **5**5 Š 纲 स त् ना म सा क्षी **5**5 άE 纲 स त् ना म

सा

क्षी

卐

चाहिए। प्राचीन समय में अपने धर्म की रक्षा के लिए अनेक ऋषि-मुनियों व धर्मात्मा राजा-महाराजाओं ने शीश न्यौछावर कर दिये।

धर्म अपने मांहि हरदम प्यार कर नटना नहीं। शीश जावे जान दे पर धर्म से हटना नहीं।।

सद्गुरु महाराज जी के उपदेशों के माध्यम से अनेक रचनाएँ (कृतियाँ) रची गई हैं, जिनमें प्रमुखतः श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ है, जिसमें ब्रह्मदर्शनी, दोहावली, कवितावली, छन्दावली, सलोकमाला, सोलह शिक्षाएँ, शान्ति के दोहे आदि हैं। श्री गुरु महाराज जी द्वारा रचित भिक्त-भजन, अमरापुर वाणी पुस्तक में संकलित हैं जो आज पूरे विश्व में अनन्त जीवों को मार्ग- दर्शित कर रही है।

अमर देश से आगमन, अमर देश प्रस्थान। अमरापुर वाणी अमर श्री अमरापुर स्थान।।

सम्वत् 1999 के पुरुषोतम मास की चार तारीख, दिन शनिवार को 55 वर्ष की अल्प आयु में आचार्यश्री ने प्रेम प्रकाश आश्रम, हैदराबाद (सिन्ध) में आसन मुद्रा में अपना नश्वर शरीर छोड़ा। उनकी आत्म-ज्योति पारब्रह्म की महाज्योति में समा गई पर उनका आलोक आज भी प्रेम-प्रकाशियों का पथ-प्रदर्शन कर रहा है।

समूचे देश-दुनिया में लाखों प्रेम प्रकाशीगण अनेक शहरों-कस्बों में स्थित प्रेम प्रकाश आश्रमों में नित्य-प्रित सत्संगों के माध्यम से सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के उपदेशों का श्रवण कर अपना जीवन सफल बना रहे हैं। देश विभाजन के बाद सद्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज ने अपनी तपोस्थली जयपुर में 'श्री अमरापुर स्थान' की स्थापना की। जो आज 'प्रेम प्रकाश मण्डल' का 'मुख्यालय' है। इसी पावन स्थल पर सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज एवं सद्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज का भव्य 'श्री मंदिर एवं समाधि स्थल' स्थापित है। जहाँ हजारों श्रद्धालुजन प्रतिदिन आकर अपनी आस्था का अर्ध्य चढ़ाकर श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं।

अब तो अमरापुर बनी, अद्भुत आलीशान। जाँका दर्शन करत ही, आनन्द होय महान।।

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज भक्ति और कर्म के अद्भुत उपासक थे। वैदिक सनातन धर्म की रक्षार्थ श्री गुरुदेव भगवान ने अपने साधना-तप-तपस्या के बल अथवा भक्ति- ज्ञान के प्रचण्ड प्रताप से एक नये निराले पंथ का शुभारम्भ किया। उनके द्वारा स्थापित श्री प्रेम प्रकाश पंथा, श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ, सत्नाम साक्षी महामंत्र, पावन तीर्थ श्री अमरापुर स्थान का निर्माण, विश्व के इतिहास में अमिट है।

संकलन व संपादन

'साधक'

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी **५**५

άE

網

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना

म

सा क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

प्रेम प्रकाशी संत मोनूराम जी श्री अमरापुर दरबार (डि<u>ब</u>), जयपुर 'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

麲

स

त्

ना

म

सा क्षी

網

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

纲

स

त्

म

सा

क्षी

55

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

स

त्

ना

म

सा

क्षी

ॐ श्री

स

त्

ना

म

सा

क्षी

斯 3次 網

स

त्

ना

सा

क्षी

卐

Š

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा–१

सेवा – भक्ति

(आश्रम की स्वयं साफ-सफाई सेवा कर देना)

योगी महापुरुष सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज प्रातःकाल शीघ्र उठकर सभी संत— महात्माओं एवं सेवादारियों को उठाकर पूरे आश्रम की साफ— सफाई सेवा कार्य करवाते थे, फिर सभी से नाम— स्मरण का अभ्यास करवाते थे। महापुरुष अध्यात्म के साथ— साथ स्वावलम्बन की शिक्षा भी देते थे। कभी— कभी तो युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ब्रह्ममुहूर्त में उठकर स्वयं ही साफ — सफाई सेवा कार्य कर लेते थे। प्रातःकाल उठकर संत— सेवादारी देखते, तो बड़ा आश्चर्य होता... आज पूरे आश्रम की साफ — सफाई कैसे हो गयी? किसने की..?

इसी प्रकार एक समय जब श्री अमरापुर स्थान में चैत्र मेला चल रहा था। भक्तों की बहुत भीड़ आई हुई थी। चारों ओर कचरा ही कचरा, जूते – चप्पल इधर—उधर बिखरे पड़े थे। अनेक जूते – चप्पलों पर रेत व गन्दगी लगी हुई थी... तब नियमानुसार ब्रह्मवेला में उठकर सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज आश्रम का अवलोकन कर रहे थे। उस समय स्वामी जी ने किसी को नहीं उठाया— और स्वयं ही आश्रम की साफ – सफाई की, साथ ही एक कपड़ा लेकर सभी के जूते – चप्पलों को साफ करके अच्छी तरह से जमा कर रख दिए। देखो! स्वामी जी में कितनी ना निष्कामता – निर्मानता थी! इतने बड़े योगी महापुरुष! पर तुच्छ से तुच्छ सेवा कार्य से भी पीछे नहीं हटना.... कहना तो सरल होता है पर ऐसा तुच्छ कार्य करना बहुत ही कठिन.... महाराज श्री मे 'कथनी और करनी 'दोनों समान रूप से थीं।

ऐसे महापुरुष के पवित्र प्रेरणा प्रसंग सुनते है... तो हृदय द्रवित हो जाता है। श्रद्धा से मस्तक झुक जाता है... हमें भी महापुरुषों से ऐसी सुंदर प्रेरणा लेनी चाहिए।

शत- शत नमन.... धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज **S. M. R.**

त् ना म

सा क्षी 卐

Š 纲 स त् ना म सा क्षी

卐 άE 纲 स त् ना

म सा क्षी **5**5 Š 纲 स त् ना म

सा क्षी **5**5 άE 網 स त् ना म सा क्षी 卐

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा-2

संत होते हैं, कृपा–निधान

(सूर श्याम बालक बना पांरगत गायक)

एक समय युगप्रुष सदग्रु स्वामी टेऊँराम जी महाराज संत मण्डली के साथ कहीं जा रहे थे। मार्ग में एक सूरदास भिखारी बालक दिखाई दिया। वह बालक बड़े ही मीठे स्वर में भजन की पंक्तियाँ गाकर भीख माँग रहा था। युगपुरूष गुरूदेव स्वामी जी ने उसे देखा। स्वामी जी उस बालक के पास गये। सिर पर हाथ रखकर बड़े दुलार – प्यार से पूछा– बेटा! 'यह भीख माँगने का तुच्छ कार्य क्यों कर रहे हो'? बालक ने कहा- 'बाबा जी! रोटी खाने के लिये... अगर ऐसा कार्य नहीं करूँगा... तो घरवाले मुझे भोजन (रोटी) नहीं देंगे।'

सदगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का दिल पसीज गया और उस बालक के ऊपर दया आ गई। महाप्रुष तो कृपा निधान, दया के सागर होते हैं, उनसे किसी का द्ःख– दर्द देखा नहीं जाता। तब स्वामी जी ने कहा- बेटे! केवल रोटी के लिए ये 'भीख माँगने' जैसा तुच्छ काम कर रहे हो। चलो ! हमारे साथ- आश्रम पर सेवा करो, भरपूर भोजन - प्रसाद पाओ और भजन -सुमरण करो। इतना सुनकर बालक प्रसन्न हो गया और स्वामी जी के साथ आश्रम पर आ गया।

बालक के सूरदास होने के कारण किसी संत- सेवाधारी ने स्वामी जी से कहा- 'कौन इसका ध्यान रखेगा? कौन इसकी सेवा करेगा? तब वात्सल्य भाव से करुणा निधान सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने कहा- 'सभी में प्रभु- परमात्मा निवास करते हैं। हम सब उसी की संतान हैं। इस बालक की सेवा "मैं" स्वयं करूँगा और इसका ध्यान भी रखूँगा।' ऐसा सुनकर सभी को बड़ा आश्चर्य हुआ। देखो! दिव्य महापुरुषों की करूण- निर्मानता, कितना स्नेह, कितना दुलार!

कहते हैं - कि स्वामी जी की उस बालक के ऊपर इतनी अनन्य कृपा हुई कि वह सूरदास बालक आगे चलकर एक पारँगत गायक (गवैया) बन गया और जीवन भर गुरु आश्रम की खूब तन मन से सेवा करता रहा... नित्य नये- नये भजन गाकर सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज को स्नाता रहा। ऐसी होती है महापुरुषों की दिव्य विलक्षण कृपा!

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

網

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

麲

स

त् ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE 麲

स त्

ना

म

सा

ॐ श्री स

स त् ना

म सा क्षी **५**

ैं औ स त्ना

म साक्षी **५**% श्री

स त् ना म सा

> **फ** ॐ श्री स त्ना

म सा क्षी **५** % श्री

त्रा त् ना म सा

卐

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा-3

परम उदारता व दयालुता

जितना भोजन माँगे - उतना देते जाओ....

युगपुरुष सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज में अनन्त सद्गुणों के भण्डार में उदारता का विशेष गुण था। एक बार श्री अमरापुर दरबार, टंडाआदम में चैत्र का मेला चल रहा था। भण्डारे में आसपास के बहुत ग़रीब अनाथ आये हुए थे। वे खाते भी थे और ले भी जाते थे। सेवाधारी संत उन्हें भोजन खिला रहे थे। एक माता बार — बार भोजन लेकर झोले में डाल रही थी — उसके पुनः माँगने पर सेवाधारी ने देने के लिए मना किया... इस पर वह माता जोर — जोर से स्वामी जी को पुकारने लगी... सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज को तो, जो भी दिल से कहीं भी याद करते हैं — गुरु महाराज जी वहाँ उपस्थित मिलते है! स्वामी जी हाथ में लाठी लिए घूमते हुए वहाँ आ पहुँचे। माता ने स्वामी जी को शिकायत की — कि आप तो कहते हैं कि, खूब भण्डारा प्रसाद आकर खाओ और...... आपके सेवाधारी हमें भोजन नहीं देते हैं.....

स्वामी जी ने संत की ओर देखकर कहा – इन्हें चावल क्यों नहीं दे रहे हो? तब संत ने उस माता का झोला उल्टा कर दिया – उसमें बहुत सारे चावल भरे हुए थे... सत्गुरु महाराज जी ने संत से पूछा – ये फिर और क्यों माँग रही है? संत ने कहा – महाराज जी! ये बहुत ग़रीब हैं – ये चावल ले जाकर इन्हें सुखाते हैं – फिर जिस दिन मजदूरी नहीं लगती, उस दिन इन्हें पुनः पकाकर खाते हैं। उनकी ऐसी स्थिति सुनकर स्वामी जी का दिल पसीज गया – उनकी आँखो में जल भर आया। उन्होंने संत जी से कहा – ये जितना माँगे, उतना भोजन दो... इतनी उदारता एवं प्रेम भाव से युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज भण्डारा – प्रसाद चलाते थे।

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

纲

स

त्

ना

म

सा क्षी

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

纲

स

त् ना

म

सा

क्षी **५**५

ॐ श्री

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

श्री स

त्

ना

म

सा

άE 纲 स त् ना म सा क्षी 卐 Š 纲 स त् ना म सा क्षी 卐 άE 纲 स त् ना म सा क्षी **5**5 Š 纲 स त् ना म सा क्षी **5**5 άE 網 स त् ना म

सा

क्षी

卐

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी' **सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा–4**

भगवान की होटल (अतिथि सेवा)

महायोगी सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज भेदभाव रहित होकर संत – साधु – राहगीर – मुसाफिरो की तन – मन – धन से खूब सेवा किया करते थे। उनके लिए कोई भी अपना – पराया नहीं हुआ करता था। सभी के प्रति समदृष्टि। कोई भी उनके यहाँ आ जाता, तो उन्हे प्रेम से भरपेट भोजन – भण्डारा जरूर खिलाते थे। उनका कहना था कि सभी में भगवान की व्यापकता है। सब कुछ भगवान का ही प्रसाद है।

इसी प्रकार एक बार दोपहर के समय खण्डू गाँव में जब युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज घर के बाहर खड़े थे। तब एक अंग्रेज अधिकारी घोड़े पर सवार होकर कहीं जा रहा था। स्वामी जी को बाहर खड़ा देखकर रुक गया और उनसे पूछा – यहाँ कोई अच्छी सी होटल है, जहाँ हमें कुछ खाने – पीने के लिए मिल जाए... हमें बहुत भूख लगी है। स्वामी जी ने कहा – हाँ– हाँ– नीचे उतरो – यहीं पास में ही बहुत बढ़िया होटल है। वहाँ आपको बहुत स्वादिष्ट भोजन मिलेगा।

युगपुरुष सद्गुरुस्वामी टेऊँराम जी महाराज बिना कुछ बोले उस अंग्रेज को स्वयं के घर पर ले आए और 'अतिथि देवो भवः' की वैदिक उक्ति को चिरतार्थ कर उसे बड़े स्नेह – भाव से बैठाकर, जो घर का सादा भोजन बना हुआ था, उसे बड़े प्रेम – भाव से खिलाया... घर का सादा भोजन खाकर और लस्सी (छाछ) पीकर वह अंग्रेज बड़ा ही तृप्त हो गया और बहुत प्रसन्न हुआ।

जब उसने स्वामी जी से खाने के पैसे पूछे? तब सत्गुरु महाराज जी ने कहा – बेटा! यह भगवान की होटल है... इसमें पैसे नहीं लगते! सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज सभी दीन, दुःखी, गरीब, अनाथ, मुसाफिर एवं राहगीरों की सेवा बड़े प्रेम भाव से किया करते थे।

शत – शत नमन! धन–धन सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त् ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

ॐ श्री सत्नाम साक्षी फ ॐ श्री सत्नाम साक्षी फ

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

ॐ श्री

स

त्

ना

म

सा क्षी

卐

Š

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा-5

अतिथि देवो भवः

युगपुरुष सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज में निर्मानता के साथ – साथ सेवा का भी विशेष गुण था। किसी भी सेवा कार्य में वे कभी भी शर्म महसूस नहीं करते थे। कितनी भी पद – प्रतिष्ठा प्राप्त हो जाने पर भी वे कभी सेवा से पीछे नहीं हटे। ऐसा उनके जीवन काल में अनेको बार देखा गया। गुरु महाराज जी में कथनी के साथ साथ करनी भी विद्यमान थी।

एक समय की बात है। दोपहर का समय था। कुछ अतिथि सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का दर्शन व सतसंग श्रवण करने के लिए श्री अमरापुर दरबार 'डिब' पर आये। उन्होंने कभी गुरु महाराज जी के दर्शन तक नहीं किये थे— उनका नाम — यश — कीर्ति सुनकर ही दर्शन करने के लिए आये थे। दिन के समय सभी संत—सेवादारी विश्राम कर रहे थे। उस समय गुरु महाराज जी ही जाग रहे थे। वे अतिथि स्वामी जी से मिले और पूछा— भक्तवत्सल सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज कहाँ हैं? हम सब उनके दर्शनों के लिए बहुत दूर से आये हैं।

इस पर गुरु स्वामी जी ने कहा- 'पहले आप लोग भोजन प्रसाद ग्रहण करो... विश्राम कर लो... शाम को दर्शन कर लेना।' उस समय स्वयं स्वामी जी ने अपने हाथो से साफ – सफाई कर भोजन खिलाया, जल पिलाया और आराम के लिए आसन दिया।

दूसरों को उपदेश करना कितना सरल होता है किन्तु स्वयं उस पर चलना होता है बड़ा कठिन... परन्त् स्वामी जी में कथानी और करनी एक समान थी।

सांयकाल जब अतिथि स्वामी जी के दर्शन करने पहुँचे, तो देखकर हैरान हो गए– अरे। इन्होंने ही तो दोपहर को हमारी सेवा की थी– भोजन खिलाया, जल पिलाया और आसन दिया।

ऐसे निर्मानी संत – महापुरुष के दर्शन करके हम तो धन्य– धन्य हो गए.... हमारा जीवन सफल हो गया।..

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐 ॐ

纲

स

त्

ना

म सा

क्षी

55

Š

纲

स

त्

ना म

सा

क्षी **५**५

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

Š

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

🕉 श्री सत्नाम साक्षी 🖪 🕉 श्री सत्नाम साक्षी 🖫 🕉 श्री सत्नाम साक्षी 🖫 🕉 श्री सत्नाम साक्षी 🖫

ॐ श्री सत्नाम साक्षी फ ॐ श्री सत्नाम साक्षी फ

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

30

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

30

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

Š

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

Š

夘

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा–6

गुरू भक्ति (सेवा) का फल

(श्री गुरुदेव की चरण पादुका मस्तक पर धारण करके लाना)

शास्त्रों में सेवा का बड़ा महत्व बतलाया गया है। सेवा भी एक प्रकार की ईशभिक्त होती है। गुरु की सेवा यानि भगवान की सेवा। निःस्वार्थ भाव से की गई सेवा समय पर अवश्य ही फलीभूत होती है। तन के द्वारा की गई सेवा अहंकार व अभिमान को चूर करती है। युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज भी गुरु की सेवा तन्मयता श्रद्धा – भाव से किया करते थे। जिसके फलस्वरुप आज उनका इतना यशोगान हो रहा है। ये सब सेवा का ही फल है। सेवा कभी व्यर्थ नहीं जाती। समय पर अवश्य ही फलीभूत होती है।

सिन्ध प्रदेश में एक समय बड़ी भारी सत्संग सभा लगी हुई थी – दादा गुरुदेव साईं आसूराम जी महाराज के मुखारविन्द द्वारा हजारों श्रद्धालुजन सत्संग गंगा का अमृत पान कर रहे थे। सत्संग समाप्ति पर गुरुदेव दादा आसूराम जी महाराज ने स्वामी जी से कहा– किसी सेवादारी से कह दो– कि हमारे जूते (चरण पादुका) ले आए... श्री गुरुदेव की आज्ञा शिरोधार्य कर स्वयं स्वामी जी चरण पादुका मस्तक पर रखकर भरी सभा में श्री गुरुदेव के पास लेकर आए।

मेले में गुरु आसूराम ने - जूता जब मँगवाया। खुद ही लेकर चरण पादुका - पल में टेऊँ आया। गुरु जी तुम पे, थे बलिहार - तुम थे सेवा के अवतार। तुम्हारी गुरु सेवा भक्ति को है प्रणाम।।

दादा गुरुदेव साईं आसूराम जी महाराज ने जब स्वामी जी को चरण पादुका मस्तक पर लाते हुए देखा... बड़े गद्गद् हो गये। बड़ा आश्चर्य भी हुआ और स्वामी जी को प्रेम भाव पूर्वक अपने हृदय से लगा लिया। दादा गुरु साईं मन ही मन सोचने लगे – 'टेऊँ'! तुम धन्य – धन्य हो! तुम्हारे इतने हजारों शिष्य सेवक होते हुए भी तुम स्वयं भरी सभा में हमारे जूते अपने मस्तक पर रखकर लाये! तुमने हमारा दिल जीत लिया। ऐसे शिष्य धन्य – धन्य हैं। जिसके मन में गुरु के प्रति इतनी निष्ठा व समर्पण भाव हो। ऐसे शिष्य स्वयं का नाम तो उज्ज्वल करते ही हैं, साथ ही गुरु की यश – कीर्ति को भी बढाते हैं।

चरण पादुका चाहते - स्वामी आसूराम। सत्संग से उठ शीश पर - लाये टेऊँराम।।

दादा गुरुदेव श्री साईं आसूराम जी महाराज ने स्वामी जी का ऐसा स्नेहात्मक सेवा भाव देखा तो सहज ही हृदय से आशीर्वाद निकला 'टेऊँराम तुम धन–धन हो – तुम्हारे माता – पिता भी धन – धन हैं, जो ऐसे सुसंस्कारी बालक को जन्म दिया – तुम्हारी सदैव जय – जयकार होगी – यश– कीर्ति बढ़ेगी। टेऊँराम.... तुम्हारा नाम सदैव अजर अमर रहेगा – सारा जहान तुम्हारे सामने नत मस्तक होगा।' गुरुदेव दादा जी का आशीर्वाद फलीभूत हुआ।

गुरुदेव सांईं आसूराम जी महाराज के आशीर्वाद से सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की यश – कीर्ति चहुँ ओर दिनों दिन बढ़ती रही है..... आज सारे जहान में स्वामी जी की जय – जयकार है। ये सब 'गुरु – सेवा' का फल है। ऐसे सेवा अवतारी श्री गुरुदेव जी को हमारा शत – शत नमन! धन–धन सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज!

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

फ़ ॐ

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

Š

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

🕉 श्री सत्नाम साक्षी 🖪 🕉 श्री सत्नाम साक्षी 🖫 🕉 श्री सत्नाम साक्षी 🖫 🕉 श्री सत्नाम साक्षी 🖫 🅉 श्री सत्नाम साक्षी 🖼

त् ना म

सा क्षी 卐

Š 纲 स त् ना

म सा क्षी 卐 Š 纲 स

त् ना म सा क्षी 卐

άE 纲 स त् ना म सा

क्षी **5**5 άE 纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा-7

कडी वृक्ष ने छोड़े अपने कटीले कॉंटे...

कंडी ने काँटे तजे - गुरु का सुन उपदेश। मीठी वाणी बोलिए - सद्गुरु का संदेश।।

य्गप्रुष सत्ग्रु स्वामी टेऊँराम जी महाराज को प्रकृति से विशेष लगाव था। सृष्टि के हर एक पेड़, पौधे, वनस्पति से स्नेह – प्रेम किया करते थे... बिना कारण प्रकृति की किसी भी वस्त् को न्कसान नहीं पहुँचने देते थे।

एक समय महायोगी सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज से किसी सेवाधारी ने कहा – हे प्रभु! श्री अमरापुर स्थान पर लगे हुए कंडी के वृक्ष को कटवा दें... क्योंकि आने – जाने वाले संतों भक्तों व सेवाधारियों को इस वृक्ष के काँटे चुभते हैं... साथ ही आँधी तूफान आने पर इसके काँटे आश्रम में चारों ओर बिखर जाते है – जिसके कारण काँटे चुभने पर सभी को बड़ी पीड़ा होती है।

इस पर स्वामी जी ने कहा – 'वृक्ष – पेड़ – पौधे प्रकृति की अनमोल धरोहर है। इसे काटना नहीं चाहिये – इनकी रक्षा करनी चाहिये... इनसे हमें छाया व शुद्ध हवा मिलती है। इनके नीचे बैठकर भजन – ध्यान – स्मरण में सभी साधकों का मन लगता है। आप इसे काटो नहीं, हम वृक्ष से कह देते हैं, आगे से ये काँटे न बिखेरे..'

कौन समझे संत महात्माओं की रहस्यमयी लीलाओं को! बस! कह दिया वृक्ष देवता को... आज के बाद काँटे नहीं बरसाना... महापुरुषों की वाणी सत्य हुई। भक्ति में होती हैं अद्भुत शक्ति। उस दिन के बाद कंडी वृक्ष ने हमेशा – हमेशा के लिये अपने काँटे बरसाने बंद कर दिये।

ऋद्धि-सिद्धि के मालिक श्री गुरु महाराज जी के वचनों में थी अनन्त शक्ति... जिसके प्रताप से कंडी वृक्ष ने काँटे बरसाने बंद कर दिए.....

शत- शत नमन! धन-धन सद्ग्रु टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

網

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी 55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

3ॐ श्री स त

त् ना म

सा क्षी **५** ॐ

श्री स त् ना म सा

क्षी **५५** ॐ श्री स त्ना म

म सा क्षी **५५** ॐ श्री स त्ना

ਜ ਦੀ ਸ਼ੀ **ਮ** ਲੀ **ਮ** % श्री

क्षी **५५** ॐ श्री स त्ना म साक्षी **५५**

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा–8

अनन्य बाल प्रेमा-भक्ति

एक समय युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज संत मण्डली सिहत भजन – संकीर्तन करते किसी शहर में पधारे। उस शहर के प्रेमी – भक्त गुरु महाराज जी को देखकर बड़े प्रसन्निवत हुए। स्वामी जी का सत्संग – भजन श्रवण कर लोग बड़े गद्-गद् हुए। सत्संग समाप्ति पर सभी लोग सद्गुरु महाराज जी को माथा टेककर आशीर्वाद लेने लगे। कोई भक्त भेंटा तो कोई प्रसाद लेकर आता तो कोई फूल माला पहनाता.... सभी आशीर्वाद ले रहे थे। इस बीच एक छोटा– सा अबोध बालक सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के पास आया। माथा टेककर बड़े ही भाव से स्वामी जी का हाथ पकड़कर कहता है – ये लो बाबा! पैसे...

उस जमाने में पाई – पैसे चलते थे। उस छोटे– से बच्चे ने, वे पैसे स्वामी जी को दिये। बाल-लीला देखकर प्रेमस्वरूप सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज मंद – मंद मुस्कराते हुए उस बालक से कहने लगे– 'मैं इसका क्या करूँ ? यह पैसे तुम हमें क्यों दे रहे हो ?'

बालक तो बालक ठहरा। बच्चा कहता है– 'बाबा जी! इसे आप खर्चना – बिस्कुट – टॉफी लेकर खाना.....' उस नन्हें मुन्ने का प्रेम भाव देखकर गुरु महाराज जी बहुत प्रसन्न हुए और मंद–मंद मुस्काने लगे... स्वामी जी ने पुनः कहा– 'ये मुझे क्यों दे रहे हो?' तो बालक कहता है– 'ये सब भी तो आपको दे रहे हैं.... तो मेरी दिल भी हो गई..... मैं भी आपको पैसे दूँ..... मैं अपने पिता जी से खर्ची लेकर आया और मैंने आपके आगे रख दी! सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज उसके निर्मल भाव को देखकर बड़े प्रसन्न हुए। इसे कहते हैं – स्वच्छन्द प्रेम – शृद्ध भाव!

इसलिए जितना हो सके, माता – पिता, बड़े – बुजुर्ग अपने बच्चों को मंदिर, सत्संग व संतो के पास लेकर जायें, जिससे बच्चे गुणवान् व संस्कारवान् बनेंगे। शतु–शतु नमन – धन–धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

άE

麲

स

त्

ना

म

सा क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना म

सा

क्षी **५**५

άE

麲

स

त्

ना

म

सा क्षी

55

ॐ श्री

स

त्

ना

म

सा

ॐ श्री स

स त् ना म

म सा क्षी **५**

ॐ श्री सत्नम

सा क्षी **५** औ स

त् ना म सा

क्षा **55** 3% श्री स

त् ना म सा

新 55 3次 刻

स त् ना म सा क्षी 'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा–9

रेत और जल से बना भोजन

सिन्ध प्रदेश के टण्डे आदम में रेतीले टीले के ऊपर युगपुरुष सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की 'श्री अमरापुर दरबार' 'डिब् '! उस समय खाने – पीने का अभाव था। सीधे – सादे संत – महात्माओं का निवास स्थल। आश्रम पर निर्माण का कार्य चल रहा था... लोगों का पहुँचना भी बहुत कठिन था।

एक समय खाने के लिए आश्रम पर कुछ भी नहीं था। भूख से सभी संत — सेवादारी व्याकुल थे... महायोगी सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज अपनी निर्विकल्प समाधि में लीन.... तब सभी संत स्वामी जी के पास आए और कहा— हे प्रभु! दीनानाथ! आज आश्रम पर भोजन की कुछ भी सामग्री नहीं है। सभी संत — महात्मा भूख से व्याकुल हो रहे हैं। हे कृपानिधान! दया कीजिये! महापुरुषों की अपनी मौज.... अवधूती मस्ती का आलम.... इतना सुनकर गुरु महाराज जी ने कहा— ऐसा करो एक देग (तपेले) में जल व आश्रम की रेत डालकर अग्नि पर रखकर और ढक्कन से ढक दो! भोजन के समय पर 'सत्नाम साक्षी....महामन्त्र—' 2—3 बार बोलकर भण्डारा पंगत शुरु कर देना.....

खत्म हुआ राशन सभी - सेवक कहे पुकार। रेत नीर से तुरन्त ही - भोजन किया तैयार।।

कौन समझे संत – महापुरुषो की अद्भुत रहस्यमयी लीलाओं को! संत वचन में होती है अद्भुत शक्ति! देखते-ही-देखते समय पर उस रेत – पानी से नमकीन चावलों की देग (तपेला) तैयार हो गया – यह कौतुक देखकर सभी बड़े आश्चर्यचिकत हुए! कहाँ तो पानी और मिट्टी और कहाँ ये भोजन..... ये सब कैसे हो गया? हम सब की समझ से बाहर... आज तक उस फ़क़ीर योगी महापुरुष सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की लीला को कोई नहीं समझ पाया....

सभी ने आराम से भरपेट भोजन – प्रसाद ग्रहण किया। तभी तो कहा गया है कि भक्ति में होती है अद्भुत शक्ति! संत – महापुरुषो की ऐसी अद्भुत शक्तियों को समझ पाना बड़ा कठिन है। धन्य धन्य हैं ऐसे संत महापुरुष....

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

網

स

त्

ना

म सा

क्षी

55

άE

纲

स

त् ना

म

सा

क्षी

卐

άE

麲

स

त्

ना म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

3ॐ श्री स त्

स त् ना म

म सा क्षी **५**

ॐ श्री स त् ना म

ਸ साक्षी **55** % श्री

श्री स त् ना म सा क्षी

. ५५ ॐ श्री सत्नामसा

क्षी **५** ॐ श्री स त् ना म

सा

क्षी

卐

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा– 10

सिंह ने भी किया गुरुदेव को नमन

श्री अमरापुर दरबार 'डिब्',.... दोपहर का समय... आश्रम के चहुँ ओर घना जंगल ही जंगल...! एक बार दोपहर काल के समय स्वामी गुरुमुख दास जी एवं एक — दो संत भ्रमण कर आश्रम की देखरेख कर रहे थे। अचानक दूर जंगल की झाड़ियों से एक सिंह (शेर) श्री अमरापुर स्थान पर आ गया। उस वक्त कोई भी सेवादारी या संत — महात्मा नहीं थे। केवल एक — दो संत और स्वामी गुरुमुखदास जी ही निगरानी कर रहे थे। शेर देखकर संत भयभीत होने लगे। अब क्या किया जाए? कुछ समझ नहीं आ रहा था। तब तक शेर आश्रम में इधर— उधर चक्कर लगाने लगा— कोई भी नुक्सान न पहुँचा कर काफी समय तक चहुँ ओर भ्रमण करता रहा.....

कौन समझे उस मूक प्राणी की भाषा को...आखिरकार कुछ समय के बाद महायोगी सद्गुरुस्वामी टेऊँराम जी महाराज की कुटिया के समक्ष बैठ गया।

कहते हैं- वह हिंसक शेर आँख मूंद कर दोनों पंजों से हाथ जोड़कर बैठ गया! दर्शनों की लालसा से वह शेर तब तक बैठा रहा, जब तक कि गुरु महाराज जी कुटिया से बाहर नहीं निकले। युगपुरुष सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के चेहरे पर था अद्भुत तेज! गुरु महाराज जी ने देखा- सामने हाथ जोड़कर एक शेर बैठा है! स्वामी जी ने उस मूक प्राणी पर अपनी दिव्य कृपा दृष्टि की।

वह शेर युगपुरुष सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के समक्ष काफी देर तक बैठकर दिव्य दर्शन करता रहा... उसके हाव-भाव से स्पष्ट परिलक्षित हो रहा था कि स्वामी जी के दर्शनों से वह कितना आनन्दित हो रहा है और अपने आपको धन्य – धन्य मान रहा है... कुछ देर बाद सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के श्रीचरणों में झुककर प्रणाम किया– पंजों से हाथ जोड़कर दर्शन किया। स्वामी जी ने भी बड़े ही दुलार से उसके मस्तक पर कृपा का हाथ रखा। आशीर्वाद पाते ही वह बहुत गद्गद् हो गया... कुछ समय बाद वह शेर अपनी मस्ती व प्रसन्न मुद्रा में पुनः जंगल की ओर लौट गया... ऐसे दिव्य महापुरुषों के आगे हिंसक से हिंसक मूक प्राणी भी नत मस्तक हो जाते हैं....

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

άE

網

स

त्

ना

म सा

क्षी

卐

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

ॐ श्री

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

ॐ श्री स त्

त् ना म

सा क्षी **५** ॐ श्री

स त्ना म सी

ना म साक्षी ५ ॐ श्री स त्ना म साक्षी

ना म साक्षी **५** ॐ श्री स त्ना म

सा

क्षी

卐

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा-11

भगवान की अनन्य कृपा

(मुहर्रम मुसलमान बना स्वामी जी का भक्त)

युगपुरुष सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज जब 'श्री अमरापुर दरबार' 'डिब' पर कण्डी वृक्ष के नीचे बैठकर भजन – साधना किया करते थे। उस समय वहाँ कुछ भी खाने-पीने की व्यवस्था नहीं रहती थी। केवल जंगली पेड़ – पौधे। अब देखो लीला पुरुषोत्तम महापुरुषों की अद्भुत लीला!

एक समय सभी संत-महातमा एवं वैराग्यमूर्ति सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज भजन – कीर्तन कर रहे थे। तभी वहाँ एक "मुहर्रम" नाम का मुसलमान आया। वह बड़े ही ध्यान पूर्वक सत्संग श्रवण और स्वामी जी का दीदार – दर्शन करने लगा। दर्शन करने मात्र से उसके हृदय में गुरु महाराज जी के प्रति अथाह श्रद्धा भाव व प्रेम जाग्रत हो गया। बार – बार एकटक नज़र से गुरुदेव को निहार रहा था... मानो उसे कोई रब़ मिल गया हो.... प्रेमाश्रु बहाकर गुरु महाराज जी के श्रीचरणों में आकर कहने लगा– 'हे फकीर साईं। आज मुझे आपमें साक्षात् रब – अल्लाह के दर्शन हो रहे हैं – आप साधारण मनुष्य नहीं हैं.... आप तो ईश्वरीय अवतार हैं... मैं आपका दर्शन – दीदार कर धन्य – धन्य हो गया। हे फकीर साईं! हमारे खेत और घर इस जंगल के पास में ही हैं – कोई भी सेवा इस दास के लिए हो तो यह दास हर समय हाज़िर है। ' बस फिर क्या था– महापुरुषों की आशीर्वाद उसके ऊपर हो गई और वह प्रतिदिन संत–महात्माओ के लिये आटा, दूध और राशन सामग्री सेवा में लाने लगा।

जिसको भगवान पर पूर्ण विश्वास होता है— भगवान उसके निमित्त मात्र बनकर सब कार्य कर देते है। इसी के साथ — साथ जिसके ऊपर स्वामी जी की कृपा दृष्टि हो जाती थी, उसका जीवन भी धन्य — धन्य हो जाता था। महापुरुष अपनी कृपा कब किस के ऊपर कर दें... ये कोई नहीं जानता... पर जिसके ऊपर कर दें... उनका लोक परलोक सँवर जाता है। समय — समय पर ऐसी अनेक लीलाएँ रचकर परमात्मा की सत्ता का भान करवाते हैं— संत—महापुरुष! गुरु महाराज जी के आश्रम (दरबार) पर हर समय सत्संग भजन भोजन की सेवा चलती रहती थी।

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

Š

網

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

ॐ श्री स त

त् ना म

सा क्षी **५**

ॐ श्री स त्

ना म सा क्षी **५५**

फ ॐ श्री स त्

्र ना म सा क्षी

ॐ श्री स त् ना म सा

> क्षी **५५** ॐ श्री स

ना

म

सा

क्षी

卐

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा– 12

निर्मानता – निष्कामता

संत संत के प्राण हैं - संत संत पर ध्यान। सबके प्यारे संत हैं - करते सबका मान।।

सिन्ध प्रदेश के टण्डाआदम 'श्री अमरापुर स्थान' 'डिब' पर सत्संग सभा लगी हुई थी। सभी संत – महात्मा मंचासीन होकर सुशोभित हो रहे थे। युगपुरुष सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का स्थान खाली रखा गया था। पहले सभी संत – महात्मा सत्संग कर रहे थे।

इसी बीच बिना कुछ बताये अपरिचित अचानक एक संत मंच पर आकर श्री गुरु महाराज जी के आसन पर बैठ गये... सभी संत व सेवाधारी उस संत पर क्रोधित और नाराज होने लगे।

एक संत ने जाकर गुरु महाराज जी को बताया कि आपके स्थान (आसन) पर कोई एक संत आकर बैठ गये हैं।

स्वामी जी ने मंद – मन्द मुस्कराकर कहा– 'ये तो बहुत अच्छी बात है – कि हमारे आसन पर संत आकर बैठे हैं, इसमें गुस्सा करने वाली क्या बात है ?' हमारा तो सौभाग्य है कि हमारे आसान पर संत आकर बैठे है। इससे पहले इस आसन पर न जाने कितने कीड़े – मकोड़े, मक्खी – मच्छर बैठे होंगे... उन पर तो आप गुस्सा नहीं हुए और न ही उन्हें कुछ कहते हो और एक संत के बैठने पर नाराज हो रहे हो। स्वामी जी के ऐसे मृदुल वचन सुनकर सभी नतमस्तक हो गये। धन्य – धन्य है ऐसे निर्मानी – निष्काम संत – योगी महापुरुष...

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

Š

纲

स

त्

ना

म

सा

ॐ श्री स -

स त् ना म

. सा क्षी **५**

ॐ श्री स त्

ना म साक्षी **५** ॐ

ॐ श्री स त् ना म

सा क्षी **५** ॐ श्री स

त् ना म सा क्षी फ श्री

क्षा अत्र अप्रीस त्ना म साक्षी अत्र ॐ

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा–13

बाबा जी का अखण्ड भण्डारा प्रसाद

अँजली में जल लेकर तुमने - भोजन पर जो मारा। तेरी दया से खत्म न होता - था भरपूर भण्डारा। जितना बाँटा बढ़ता जाये - तेरे खेल समझ न आये। तेरी महिमा है अनन्त अभिराम - कि लीला तेरी तू ही जाने...

एक समय खण्डू गाँव में सायंकाल विशाल सत्संग सभा का आयोजन हुआ। सत्संग में अनुमान से अधिक श्रद्धालु – भक्तगण आये। सभी सत्संग – भजन में हो गये मंत्रमुग्ध... गुरु महाराज जी का भजन – सत्संग वैराग्य भरा था। महापुरुषों की अलौकिक मस्ती!

सत्संग समाप्ति के पश्चात् युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने सभी से कह दिया— सभी भक्तजन भोजन — प्रसादी यहीं खाकर जाना — कोई भी बिना भोजन प्रसाद के न जाये। इतना सुनकर माता कृष्णादेवी ने स्वामी जी को बुलाकर कहा— अबा! यहाँ तो 30—40 लोगों का ही भोजन बनाया है परन्तु यहाँ तो चार पाँच सौ से अधिक लोग बैठे हैं — अब क्या किया जाय...? घर में अनाज का एक भी दाना नहीं है ! अब— साईं बेटा! जैसा आप कहो— वैसा करें।

विश्व व्यापक, विश्वम्भर प्रभु परमात्मा के अस्तित्व का परिचय देकर माताश्री को स्वामी जी ने साँत्वना दी और दृढ़विश्वास से कहा – 'जो परमात्मा सबका भरण – पोषण करता है, वह ही अपने आप सबको भोजन – प्रसादी अवश्य ही खिलायेगा।'

इतना कहकर युगपुरुष सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने जलपात्र लेकर 'सत्नाम साक्षी'.... 'सत्नाम साक्षी'.... उच्चारण कर अँजलि भरके जल का छींटा भण्डारे पर छिड़ककर ऊपर से चादर ढक दी....

भक्त मंघनराम व सेवाधारियों को कह दिया कि आप चादर मत हटाना.... और जितना चाहिये, अन्नपूर्णा माँ का भोजन परोसकर 'सत्नाम साक्षी' कहकर.... खिलाते जाना... प्रभु – परमात्मा सब भली करेंगे... महापुरुषों के द्वारा कहा वचन सार्थक हुआ। ऐसा अदभुत दृश्य देखकर सभी आश्चर्य चिकत हो गये। कहाँ तो 30–40 लोगों का भोजन और कैसे 400–500 लोग भोजन करके गए... भगवत् कृपा से सभी ने भरपेट भोजन – प्रसाद खाया... यहाँ तक कि दीन – अनाथ, गरीबों को भी भरपेट भोजन खिलाया गया। कौन समझे ऐसे महापुरुषों की लीला को! कहते हैं कि तभी से सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी बाबा का अखुट भण्डारा प्रसिद्ध है।...

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

纲

स

त्

ना

म

सा क्षी

卐

άE

網

स

त् ना

म

सा

क्षी

卐

άE

麲

स

त्

ना म

सा

क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

ॐ श्री सत्नाम साक्षी फ ॐ श्री सत्नाम साक्षी फ

纲

άE

स त् ना म

सा क्षी 卐

Š 纲 स ना म सा क्षी

卐 άE 纲 स त् ना म सा

त्

क्षी **5**5 Š 纲 स त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

網

स

त् ना

म

सा

क्षी

卐

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा–१४

भाव के भूखे होते हैं – संत और भगवान

एक बार शाहिभट्ट नामक करने में, जहाँ कुछ दिनों से युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज मण्डली सहित संगत को भगवन्नाम का अमृत पिला रहे थे। वहाँ के भक्त रूपचन्द बड़े संत सेवी थे। संतों की खूब सेवा किया करते थे और संतों से बडा प्रेम था।

उस दिन किसी कारणवश ग्रु महाराज जी के सत्संग में नहीं आ सके, किन्तु अनेक प्रेमी - भक्तों की मन में था कि स्वामी जी स्वयं उनके घर पर चलें... स्वामी जी तो अंर्तयामी थे... सभी के मन की बात जान गए और कहा – 'चलो... अभी रूपचन्द के घर चलते हैं।' यह सुनकर सभी को बड़ा आश्चर्य हुआ, हम तो सोच ही रहे थे... और फिर मण्डली को साथ लेकर गुरु महाराज जी पहुँचे भक्त रूपचन्द के घर..... इक ही प्रेम प्रभु को भाया...

भाई रूपचन्द- वह तो ग्रु महाराज जी के दर्शन करके बड़ा गद्गद् हुआ - बहुत पसन्न हुआ। अपना अहोभाग्य मानते हुए कहने लगा कि आज तो मैं धन्य – धन्य हो गया... मेरा घर पवित्र हो गया। घर बैठे ऐसे वैरागी – तत्त्ववेता संतों के दर्शन प्राप्त हुए हैं। मै तो अनेकानेक जन्म – जन्मांतर के पापों से मृक्त हो गया... जय हो प्रभ् - तेरी जय हो...

इतना ही नहीं स्वामी जी ने 'भक्त रूपचन्द' से कहा – सुना है – आप अपने हाथों की चक्की का आटा पीसते हो और उसी आटे की रोटियाँ बनाकर साध् – संतों व भक्तो को खिलाकर सेवा करते हो। अतः हमें भी रोटी खिलाओ - हमें भी बड़ी भूख लगी है। इतना सुनकर भक्त और भी अत्यधिक प्रसन्न हो गया... खुशी का ठिकाना न रहा। 'सबसे ऊँची प्रेम सगाई' भक्त रूपचन्द गुरु महाराज जी की ऐसी आज्ञा स्नकर तो निहाल हो गया। उस समय उसके घर में जैसी भी रोटी और साग (सब्जी) उपलब्ध था, वह स्वामी जी के सामने बड़े प्रेमभाव से परोस दिया और बेस्ध होकर हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। स्वामी जी ने भी यह प्रसाद वैसे ही पाया जैसे भगवान श्री कृष्ण ने विद्र के घर जाकर केले के छिलके.... सुदामा के तन्द्ल..... खाकर उसे कृतार्थ किया था.... आज वहीं भक्त और भगवान का दिव्य दर्शन सभी को हो रहा था... ऐसी अलौकिक दिव्य लीला – दर्शन देखकर सभी भक्त बहुत प्रसन्न हुए। इसे कहते हैं - 'भक्तऔर भगवान का अनन्य प्रेम!'

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

網

स

त्

ना

म

सा क्षी

55

άE

纲

स

त् ना

म

सा क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲 स

त्

ना

म

सा

त् ना म

सा क्षी 卐

Š 纲 स त् ना म सा

क्षी 卐 άE 纲 स त् ना म

सा क्षी 卐 άE 纲 स त् ना

άE

म सा क्षी **5**5 纲 स त् ना म सा क्षी

卐

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा– 15

गुर्त्त कृपा से कुँए का खारा जल हुआ मीढा

एक समय सिन्ध प्रदेश में युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज मण्डली सहित बडाणी के पास बख्शापुर कस्बे में पहुँचे। जहाँ लगी सत्संग की बसंत- बहार... गुरु महाराज जी की ओजस्वी वाणी..... जो सभी के दिल को छू जाती थी। साधारण जन तो क्या मूक प्राणी पशु – पक्षी भी सुनने के लिये हो जाते थे आतुर! साथ ही थे स्वामी जी ऋद्धि– सिद्धियों के मालिक!

महाराज श्री का नाम स्नकर दूसरे दिन शहर के पंच - सरपंच सभी मिलकर प्रातःकाल स्वामी जी के पास आये। स्वामी जी उस समय ध्यानस्थ थे। क्छ समय पश्चात् पंचों ने स्वामी जी से प्रार्थना की- 'हे प्रभु! दीनानाथ! हमारे गाँव में पीने के पानी की बहुत तकलीफ है। पानी भी बहुत कम है और एकमात्र कुँए का पानी..... वो भी खारा है। पानी न होने के कारण पूरा बरखापुर कस्बा बड़ा परेशान रहता है। खारे पानी पीने से बीमारियाँ भी बहुत हो जाती हैं। पीने योग्य पानी भी प्राप्त नहीं हो रहा है। कृपा करें – प्रभु! आप तो जग के पालनहार है। आपकी कृपा हो जायेगी तो जल मीठा व पीने योग्य हो जायेगा और जल की कमी भी नहीं रहेगी।

त्रिलोकीनाथ सद्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज जी उस समय भजनानंद की मौज में थे। स्वामी जी ने कहा- 'आप कल प्रातःकाल मीठे चावलों की देग तैयार करके गरीबों - अनाथो-कन्याओं में बाँटना... प्रभ् – परमात्मा अवश्य कृपा करेंगे। 'तपस्वी महाप्रुषों के श्रीमुख से निकला वचन कभी निरर्थक नहीं हो सकता।

गुरु महाराज जी के वचनानुसार पंचों ने दूसरे दिन मीठे चावलों की देग बनाकर गरीब -अनाथों – कन्याओं में बाँटी और गाँव के सारे घरों में मिष्ठान का प्रसाद भी बाँटा गया।

तब श्री समर्थ सदगुरू टेऊँराम जी महाराज पंचों के साथ कुँए पर गये, वहाँ अपनी चिपी (कमण्डल) से अभिमंत्रित कर जल का छींटा... सतनाम साक्षी-2... कह कर कुँए में डाल दिया। फिर क्या था- देखते ही देखते कुँआ जल से लबालब भर गया! जल निकालकर पीया तो क्या देखते हैं... जल एकदम साफ - मीठा - स्वच्छ और पीने योग्य हो गया था। यह लीला देखकर सभी भक्त बड़े आश्चर्य चिकत हो गए! फिर सभी लोग प्रसन्नचित हुए.... धन्य हो प्रभु-आपकी लीला अपरम्पार है.... इसे समझ पाना बड़ा मुश्किल है।

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐 άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

麲

स

त् ना

म

सा

क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना

म

सा क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

त् ना म

सा क्षी 卐

Š 纲 स त् ना म

सा क्षी 卐 Š 纲 स

त् ना म सा क्षी 卐

άE 纲 स त् ना

> म सा क्षी **5**5 άE

纲 स त्

ना म सा क्षी

卐

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना म

सा

क्षी

55

άE 麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा–16

महापुरुषों की अवधूती मस्ती

(सूरश्याम भक्त केवलराम को माँगना ही नहीं आया....)

एक समय युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज वृक्ष की छाँव तले भजनानंद की मस्ती में श्री अमरापुर स्थान पर बैठे थे। अवधूती मस्ती का अनोखा आलम ! मुखमंडल पर दिव्य आभा –भक्ति तपस्या का तेज पुँज! कौन समझे उन संत – फकीर – मुर्शिदों की रमझ को – भजनानंद की अलौकिक मौज! उसी समय आया एक गवैया सूरश्याम केवलराम भक्त। भक्त के पास थी संगीत की अद्भ्त कला, गाने-बजाने में था वह निप्ण... उसने ग्रु महाराज जी के सामने बहुत ही मघ्र – मध्र भजन गाए! भक्ति-भाव के भजन सुनकर सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज उस पर हुए बहुत प्रसन्न... उस समय स्वामी जी ने हृदय से प्रसन्न होकर गवैये केवलराम से कहा- 'भगत जी! आज हम तुम्हारे भजन – भाव से बहुत प्रसन्न हुए हैं- माँग लो - आज जो कुछ भी माँगोगे वह तुम्हें अवश्य ही मिलेगा।' परन्त् कहते हैं न, जिसके भाग्य में कुछ भी न हो या फिर जिसे संत महापुरुषों से माँगना नहीं आता हो, तो वह भाग्यहीन ही रह जाता है- उन्हें उस समय माँगना भी नहीं आता! क्या माँगे? उन भोले - भाले भक्तों को क्या मालूम कि उस समय तपस्वी महाप्रुषों की स्थिति कैसी न अद्भ्त होती है -उस क्षण जो भी माँगा जाये वह अवश्य ही मिल जाता है – परमात्मा भी उस वचन को टाल नहीं सकते! फिर समय निकल जाने पर कुछ भी हाथ नहीं आता....

बस! फिर क्या था उस समय भोले - भाले 'सूरश्याम भक्त केवलराम ' को स्वामी जी से माँगना भी नहीं आया और उनसे एक तुच्छ वस्तु गर्म कोट माँग लिया... अगर थोड़ा सोच - समझ या विचार करके युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज से नेत्र ज्योति (आँखो की रोशनी) माँग लेता तो वह भी उसे अवश्य मिल जाती और उसका जीवन सँवर जाता... उन नेत्रों से भगवान व श्री गुरूदेव के दर्शन भी करता... पर उस कृपादृष्टि का लाभ हर कोई नहीं ले पाता। महापुरुषों की उस समय की स्थिति बड़ी अद्भुत एवं विलक्षण होती है।

थोड़ी देर के बाद वैराग्यमयी नजरों से निहारकर सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने कहा- 'अरे भाई केवलराम! तुमने ये क्या तुच्छ वस्तु माँग ली, अरे! आज तुम्हें माँगना भी नहीं आया। आज अगर तुम नेत्र (आँखो को ज्योति) भी माँगते तो वह भी तुम्हें अवश्य प्राप्त हो जाती... किन्तु अब वह बन्दगी वाली स्थिति, समय, घड़ी हाथ से निकल गई -अर्थात बड़ा सुन्दर अवसर गँवा दिया।

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज! S. M. R.

त् ना म

सा क्षी 55 Š 纲

स त् ना म सा क्षी

卐 άE 網 स त् ना म सा

क्षी 卐 άE 纲 स त्

ना म सा क्षी **5**5 άE

纲 स त् ना म

सा

क्षी

卐

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु खामी टेऊँराम गुण गाथा–17

कौन लेकर आया बस – कौन था चलाने वाला उसकी लीला वो ही जाने.....

एक समय युगपुरुष सदगुरू श्री स्वामी टेऊँराम जी महाराज संत मण्डली के साथ यात्रा करके किसी गाँव में पहुँचे। वहाँ दिन भर सत्संग – भजन की मौज हुई। सायंकाल दूसरे स्थान पर, जहाँ पर पहले ही सत्संग का भव्य कार्यक्रम रखा हुआ था। किन्तु जहाँ सत्संग का कार्यक्रम किया गया था, वहाँ सत्संग की मौज बहार व भक्तों की प्रेमा भक्ति के कारण बहुत देरी हो गई। उस छोटे से गाँव में वाहन बसें भी समय पर ही चलती थीं। समय पर जाने वाली बस के बाद कोई बस अथवा द्सरा कोई साधन भी नहीं होता था। वहाँ देर हो जाने के कारण सायं 3 बजे जाने वाली अंतिम बस जा चुकी थी। अब कोई दूसरा साधन भी नहीं था। सभी संत व भक्तजन बस स्टेण्ड पर खड़े रहे। उस समय सद्गुरु महाराज जी की मण्डली में 40-50 संत - भक्त चल रहे थे। सभी परेशान होने लगे -अब क्या क्या किया जाये? कैसे पहुचेंगे दूसरे गाँव? दूसरा कोई साधन भी नहीं था और समय भी तीव्र गति से भागा जा रहा था। इसी बीच महायोगी सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की तो अपनी फकीरी वाली मौज, न कोई चिंता न कोई परवाह – अपनी अवधूती मस्ती में मस्त! सभी ने की – गुरु महाराज जी से प्रार्थना...

हे – दीनदयाल – अन्तर्यामी प्रभु! अब आप ही कृपा करो, जिससे समय से पहुँचकर सत्संग आयोजन को पूर्ण कर सकें। सद्गुरु महाराज जी ने कहा- 'आप चिंता मत करो । सब बैठकर भगवान का भजन– कीर्तन करो। सत्नाम साक्षी–2... धुनि लगाओ।'

स्वामी जी की आज्ञा अनुसार सभी संत और भक्तजन बड़े ही भावविभोर होकर 'सतनाम साक्षी सर्व आधार - जो सुमरें सो उतरे पार' धुनि - संकीर्तन करने लगे। बस फिर क्या था। लीला पुरुषोत्तम ने दिखाई अपनी रहस्यमयी लीला! थोड़ी ही देर में एक बस आकर खड़ी हो गई। यह देखकर सभी आश्चर्यचिकत हो गये। गाँव से अंतिम बस 3 बजे चली गई थी। उसके बाद दूसरी कोई बस जाती ही नहीं थी। यह बस कहाँ से आ गई। गाँव वाले भी बड़े हैरान! ऐसा पहले कभी भी नहीं हुआ। कौन लेकर आया यह बस? कौन था चलाने वाला? कुछ अता - पता नहीं । उसकी लीला वे ही जानें। उस फकीर सद्गुरु टेऊँराम बाबा की लीला को कौन समझे। सभी प्रसन्नचित होकर कहने लगे- हे गुरुदेव! आपको समझ पाना बड़ा मुश्किल है - प्रभु आप धन्य हैं! ऐसी अदभुत ऋदि – सिद्धियों के मालिक थे – सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज! आज तक कोई भी नहीं समझ पाया उनकी इस अद्भृत रहस्यमयी लीला को....

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55 άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त् ना

म

सा

क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

ॐ श्री स त

त् ना म

सा क्षी **५५** ॐ

纲

स त्ना म सा क्षी

५५ ॐ
श्री
त्ना
म
सा

म सा क्षी **५५** ॐ श्री स त्ना

ना म साक्षी **५** ॐश्री सत्ना

म

सा

क्षी

卐

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा– 18

मान–अपमान से परे – श्री गुरुदेव जी

(सोलह अलग-अलग रागों में गाया भजन)

समय – समय पर सत्पुरुषों की आलोचना भी होती रहती है, किन्तु उनकी सत्याचरण के सामने सभी को झुकना पड़ता है। ऐसे ही भगवत् प्रचार – सत्उपदेश देते हुए सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज शिकारपुर पहुँचे। वहाँ पन्द्रह दिनों तक धर्म – कर्म – भिक्त – प्रेम आदि का सत् उपदेशामृत जिज्ञासुओं को सुनाया। वहाँ की जनता भी बड़े स्नेहिल भाव से प्रतिदिन कथा – सत्संग श्रवण करती रही। लोगों को आत्मिक आनन्द की प्राप्ति होने लगी। भक्तों की भीड़ दिनों – दिन बढ़ने लगी। कई दिनों तक अद्भुत भिक्तमय माहौल बन गया। ऐसा लग रहा था मानों ईश्वरीय शिक्त की प्रचण्ड आभा प्रकाशित हो रही हो – किसी को कोई सुध – बुध नहीं.... सभी भिक्त के रंग में रंगे.... न समय का, न दिवस का भान.... अलौकिक मस्ती में मस्त.... सभी भक्तों का स्वामी टेऊँराम जी के प्रति अथाह प्रेम स्नेह जागृत हुआ। सभी करने लगे स्वामी जी की महिमा का गुणगान। यश – कीर्ति फैलने लगी।

ऐसे ही एक बार सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज संत – मण्डली सहित भजन – सत्संग कर रहे थे... उस समय एक ईर्ष्यालु व्यक्ति ने कहा – इन साधु – संतों को क्या पता राग – रागनियों में भजन कैसे गाये जाते हैं... किस प्रकार स्वर – ताल मिलाया जाता है... ये तो बस इकतारे और घुंघरू मण्डित डँडे ही बजा सकते हैं। इन्हें सुर गाजे – बाजे का कोई ज्ञान नहीं। ऐसे अपशब्द बोलकर स्वामी जी व संत मण्डली को नीचा दिखाने का प्रयास कर रहा था। जिससे कि महापुरुष स्वामी जी की यश – कीर्ति न हो पर उस नादान – मृद्ध अज्ञानी को क्या मालूम कि ये महापुरुष कोई साधारण व्यक्तिया संत नहीं है, ये तो साक्षात् ईश्वरीय अवतार हैं। लीला मात्र इस धरा धाम पर आये हैं। अनेक रहस्यमयी लीलाएँ रच कर न जाने कितनों को सत् मार्ग पर लगाया है। आखिरकार ये शब्द गुरु महाराज जी के कानों में भी पड़े। मान – अपमान से परे सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज कुछ भी न कहकर मंद – मंद मुस्कुराने लगे। उसी समय गुरुदेव भगवान ने स्वरचित भजन सोलह अलग – अलग राग – रागनियों एवं स्वर – तालों में गाकर सुनाया.....

मुरली मोहन जी, सत्गुर सुणाई... बदन जे ब्रज में, वेही मूं व<u>जा</u>ई

ऐसी अद्भुत ओजस्वी वाणी में सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने अलग – अलग राग – रागनियों में जब यह भजन गाया तो सभी अचिम्भत हो गये। भाव – विभोर होकर सभी स्वामी जी की अमृतवाणी श्रवण करने लगे। उस समय ऐसा प्रतीत हो रहा था... मानों संगीत के आचार्य भगवान शिव जी अपने मधुर स्वर सुना रहे हों। ऐसा अद्भुत अचरजमय करिश्मा देखकर वह व्यक्ति पश्चाताप करता हुआ स्वामी जी से क्षमा याचना माँगने लगा।

'हे प्रभु! मुझसे बहुत बड़ी भूल हो गई है – मुझे माफ कर दो – मै आपको पहचान न सका। श्री चरणों में गिरकर बारम्बार क्षमा की याचना करने लगा। महापुरुष तो कृपा निधान होते हैं। क्षमादान देते हुए बोले – 'वत्स! आज के बाद कभी किसी संत–महात्मा की निंदा नहीं करना।'

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

άE 纲 स त् ना म सा क्षी 卐 Š 纲 स त् ना म सा क्षी 卐 άE 纲 स त् ना म सा क्षी **5**5 άE 纲 स त् ना म सा क्षी **5**5 άE 網 स त्

ना

म

सा

क्षी

卐

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा-19

सिद्धों के मेले में पशु बलि राकवाना

मांस खान से मनुष्य की - होवे बुद्धि मलीन। कह टेऊँ बुद्धि भ्रष्ट से - कर्म धर्म हो खीन।।

एक समय की बात हैं- जब युगपुरुष सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज 'मिट्ट शाह' शहर में ठहरे हुए थे। उन दिनों में ठोढ़िन नामक गाँव में सिद्धों का बड़ा भारी मेला लगता था। एक भक्त ने अहिंसा के पुजारी युगपुरुष सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज को बताया कि इस मेले में बहुत से पशुओं की बिल दी जाती है।

तब गुरु महाराज जी 30–35 प्रेमियों को साथ लेकर उस मेले में पहुँचे – जहाँ सत्पुरुष पहले से ही भजन– सत्संग कर रहे थे। वहाँ के महंत भक्त पुरसूराम जी के निवेदन पर स्वामी जी ने भी सत्संग – प्रवचन किया कि संसार में किसी भी जीव को पाप कर्म नहीं करना चाहिए – पाप कर्म करने से यह जीव चौरासी के चक्कर में जाकर अनन्त दुःखों को प्राप्त करता है। इसलिए जीवन में पाप कर्म कभी नहीं करना चाहिए। इस धार्मिक मेले में हर महीने पशुओं की बिल दी जाती है, ये अच्छी बात नहीं है कि यहाँ निर्दोष मूक प्राणियों की हत्या की जाये। उसके पाप का भागीदार कौन होगा....? देवी – देवताओं को कभी भी माँस – शराब आदि का भोग नहीं लगाना चाहिए। यह तो सात्विक सत्पुरुषों का पवित्र स्थान व धार्मिक मेला है... उनको छप्पन भोग व षट्रस भोग लगाना चाहिए न कि तामसिक भोजन का..... धर्मशास्त्र व पुराणों में ऐसे भोजन के लिए स्पष्ट मना किया है। घर के पवित्र उत्सव, शादी, यज्ञोपवीत, नामकारण संस्कार आदि में भी ऐसे भोजन का उपयोग कभी नहीं करना चाहिए। जैसा कि शास्त्रों में बतलाया गया है— ये सब पाप के भागीदार होते हैं—

1. उपदेश करने वाला (खाने की सलाह देने वाला), 2. समर्थन करने वाला, 3. लाकर देने वाला, 4. काटने वाला, 5. पकाने वाला, 6. खाने वाला....

भगवान कहते हैं 'जीव द्या तो मम द्या' जो जीवों पर दया करते हैं – उसी पर भगवान की दया – कृपा होती है.....

स्वामी जी ने अनेक दृष्टान्त व प्रमाण देकर समझाया – जिसे सुनकर वहाँ के महन्त श्री ने भी प्रतिज्ञा की कि अब हम कभी भी ऐसे पवित्र स्थान पर माँस का उपयोग नहीं करेंगे। आज से यहाँ सिद्धों के उत्सव पर दाल व मीठे चावल का प्रसाद बाँटेंगे। उपस्थित सभी प्रेमियों ने भी प्रतिज्ञा की – कि हम आज के बाद माँस – शराब आदि का उपयोग नहीं करेंगे – देवी – देवताओं पर बिल भी नहीं चढ़ाएँगे और न ही हिंसा करेंगे – ना होने देंगे। इतना सुनकर सभी प्रेमी आपस में कहने लगे कि इस वर्ष मेले में आना सफल हुआ...।

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी **५**५

άE

麲

स त्

ना

म

सा

क्षी

55

ॐ श्री

स

त्

ना

म

सा क्षी

55

30

纲

स

त्

ना

म

सा

त् ना म

सा क्षी 卐

άE 纲 स त् ना म

सा क्षी 55 άE 纲 स त्

ना म सा क्षी 卐 άE

纲 स त् ना म सा

क्षी **5**5 άE 纲 स

त् ना म सा क्षी 卐

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा–20

आडम्बर से दूर एवं निर्मानता

युगपुरुष सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज टण्डाआदम – श्री अमरापुर स्थान पर ही निवास करते थे। वहाँ अनेक संत – महात्मा और सेवाधारी श्री गुरु महाराज जी की सेवा में सदैव तत्पर रहते थे। स्वामी जी भी अपने भजनानंद की मौज में सदैव साधनारत रहते थे। पूर्ण वैराग्यता....

एक दिन दोपहर के समय तपस्वी महायोगी सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज को कहीं जाना था... ज्येष्ठ का महीना... धूप भी अत्यंत तेज... तीव्र गर्मी... स्वामी जी तो अपने आसन से बिना कुछ बोले – उठकर चल दिये... संत – महाप्रुष तपस्वियों को क्या सर्दी.... क्या गर्मी.... बिना किसी को कुछ बोले अकेले ही उस तपती गर्मी में निकल पड़े... फकीरों की अलौकिक मौज!

उसी वक्त किसी प्रेमी – भक्त की नज़र स्वामी जी की ओर गयी तो उसने देखा – इतनी भीषण गर्मी में स्वामी जी अकेले ही कहीं जा रहे हैं – वह भागता हुआ पीछे से छाता लेकर आया और स्वामी जी के ऊपर छाता ढकने लगा.....

श्री गुरु महाराज जी ने उससे कहा – 'भाई! हमारे ऊपर छाता क्यों लगाया है...? और पीछे क्यों आये हो...?' प्रेमी हाथ जोड़कर कहने लगा- 'हे प्रभु! मैंने आपको देखा कि आप अकेले ही कहीं जा रहे हैं। सूर्य भगवान की तपन से गर्मी भी बहुत है। सो मैंने विचार किया। तेज धूप के कारण मैं आपकी सेवा में यह छाता लेकर आया हूँ। भगवन्! क्षमा करना......

तब स्वामी जी ने बड़े ही स्नेह भाव से समझाकर उससे कहा - 'भाई, आपकी भावना श्रद्धा - अच्छी है। यह आपकी गुरू निष्ठा है, परंत् हम छाता नहीं लगवायेंगे... क्योंकि आज अगर हम एक छाता लगवायेंगे तो हमारे पीछे वाले दस – दस छाते लगवायेंगे..... ये परम्परा बन जायेगी और आने वाली पीढ़ी हमारा अनुसरण करेगी।

देखो ! कैसी थी महाप्रुषों की सादगी व फकीरी! किसी भी प्रकार का कोई आडम्बर दिखावा नहीं... मान – यश – कीर्ति से कोसों दूर... दूर की सोच, सहजता – सरलता और आने वाली पीढ़ी को एक प्रेरणादायक सन्देश! अर्थात् कोई आडम्बर नहीं करना है.....

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना

म

सा क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

άE 纲 स त् ना म सा क्षी 卐 άE 纲 स त् ना म सा क्षी 55 άE 纲 स त् ना म सा क्षी **5**5 άE 纲 स त् ना म सा क्षी **5**5 άE 網 स त् ना म

सा

क्षी

卐

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा-21

नन्हें बालक का अटल विश्वास

श्री अमरापुर दरबार 'डिब' पर एक दम्पित अपने 7-8 साल के बालक साँवल के साथ पहुँचे। युगपुरुष सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की आज्ञानुसार 2-3 दिन आश्रम पर रहे। छोटे बालक साँवल का स्वामी जी से इतना स्नेह – प्रेम हो गया कि वह उनके साथ उठता – बैठता, खाता – पीता....

2-3 दिन के बाद माता-पिता ने साँवल को कहा कि आज शाम को हम अपने गाँव चलेंगे। तब वह बालक रोने लगा और कहने लगा कि मैं यहीं आश्रम पर स्वामी जी के साथ ही रहूँगा। माँ – बाप के बहुत कहने पर भी नहीं समझा। आखिर साँवल के माता – पिता ने श्री गुरु महाराज जी को कहा– कि आप ही इसे समझायें, जिससे यह घर चले..... जिद नहीं करे....

स्वामी जी ने नन्हे साँवल को कहा– 'बेटा! तुम जब भी याद करोगे..... हम तुम्हारे पास आ जायेंगे..... अभी तुम अपने माता – पिता के साथ घर जाओ। चैत्र मेले पर अवश्य आना.....' स्वामी जी की आज्ञा शिरोधार्य कर वह दम्पति विदाई लेकर अपने गाँव लौट गये।

समय अपनी रफ़्तार से बीतने लगा। चैत्र मास भी आ गया। साँवल के माता – पिता मेले में आने की तैयारी कर रहे थे कि मेले से एक दिन पूर्व साँवल की तिबयत बहुत खराब हो गई, तब साँवल के पिता ने कहा – तुम्हें बहुत बुखार है, अब तुम कैसे चलोगे... तुम यहीं रुको... मैं अकेला ही चैत्र मेले में होके आता हूँ।

तब नन्हें साँवल ने कहा – स्वामी जी को बोलना कि साँवल आपको बहुत याद करता है। आशीर्वाद करें मैं जल्दी ठीक हो जाऊँ... मेरे लिए गुरु बाबा जी से आशीर्वाद और लड्डू का प्रसाद लेकर आना.....

साँवल के पिता मेले पर पहुँचे। श्री गुरु महाराज जी से मिले और दंडवत प्रणाम किया। पाँच दिन तक सेवा – सत्संग – दर्शन सुमरण की त्रिवेणी का आनंद उठाया और अत्यधिक भीड़ होने के कारण बिना मिले ही मेला समापन के बाद पिता अपने घर को लौट आये। घर पर साँवल को देखकर उसके पिता की आँखो से अश्र बहने लगे और पुत्र से बोले – बेटा! मैं तुम्हारा कार्य नहीं कर सका... स्वामी जी से तुम्हारे लिए मैं लड्डू नहीं माँग सका... क्योंकि मेले में बहुत भीड़ थी... जिससे स्वामी जी से मिल भी न सका....

तब नन्हा साँवल हँसने लगा और अपने पिता से बोला कि गुरु बाबा श्री सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज तो मेरे पास आये थे और लड्डू प्रसाद भी मुझे दे गये हैं... साँवल कमरे में गया और वहाँ से स्वामी जी द्वारा दिये हुए लड्डू लाकर अपने पिता को भी खिलाये। यह सब देखकर उसके पिता आश्चर्य में पड़ गये। ये लड्डूअरे, ये तो वहीं लड्डू हैं – जो वहाँ भण्डारे में खिलाये गये थे। उसे विश्वास ही नहीं हो रहा था कि ये लड्डू यहाँ कैसे आ गये? 'बाबा टेऊँराम' आपकी लीला अपरम्पार है। इसे समझ पाना बड़ा कठिन है। इसे कहते है – अटल दढ़ विश्वास! सच्ची लगन और श्रद्धा – भक्ति!

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म सा

क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना

म

सा क्षी

55

άE

網

स

त्

ना

म

सा क्षी

55

άE

網

स

त्

ना

म

सा

ॐ श्री स

त् ना म

म सा क्षी **५**

ॐ श्री स त्

ना म सा क्षी

55 3% श्री स त् ना

सा

क्षी **५५** ॐ श्री स त्ना म

सा क्षी **५** औ स त्

अश्री सत्नाम साक्षी ५

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा–22

संत–महात्माओं का स्वावलम्बी जीवन

मजदूरी करके लिया, इकतारे का साज। भूल न किससे माँगिये, कैसा भी हो काज।।

महापुरुषों का जीवन सरल व सादगी पूर्ण होता है। उनका एक ही लक्ष्य होता है परमात्मा की बन्दगी करना और भगवान को प्राप्त करना... वे कभी भी किसी वस्तु की आवश्यकता होने पर भी किसी के आगे हाथ नहीं फैलाते... जैसा कि संतो की सीख है 'माँगन मरण समान है – मत माँगो कोई भीखा'।

ऐसे ही एक समय कर्मयोगी युगपुरुष सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज को भगवद् – भजन हेतु 'यकतारे 'वाद्ययंत्र की आवश्यकता पड़ी। पैसों का अभाव था। संतों का धन – दौलत से क्या काम? फक्कड़ संत महात्मा... 'माँगन मरन समान है ' अर्थात् किसी के सामने हाथ फैलाना अच्छी बात नहीं... ये संत– महात्माओं का काम नहीं... किसी के आगे भूल कर भी कभी हाथ नहीं फैलाना चाहिये... जिसे भगवान पर पूर्ण भरोसा होता है या स्वयं पुरुषार्थी होता है तो उसके सर्व मनोरथ सिद्ध हो जाते हैं।

इसी बीच किसी स्थान पर मकान बन रहा था, वहाँ स्वामी जी ने चार— पाँच दिन मेहनत— मजदूरी करके दस रूपये प्राप्त किए... उसी पारिश्रमिक धन से 'यकतारा' वाद्ययंत्र खरीदा... इकतारे को लेकर खूब भगवत् — भजन किया। सनातन धर्म का प्रचार — प्रसार किया। जगह — जगह परमात्मा की अलख जगाई..... इसी प्रकार पूरे जीवन भर कर्मयोगी सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने कभी भी किसी के सामने हाथ न फैलाकर 'स्वावलम्बन व आदर्श जीवन' का परिचय दिया। हमें भी कभी किसी के आगे हाथ नहीं फैलाना चाहिये। पुरुषार्थ परिश्रम करना चाहिए। संत— महापुरुष तो कर्मयोगी और कर्तव्य — परायण होते हैं..... स्वयं कर्मयोगी होकर दूसरों को भी शिक्षा देते हैं।

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

纲

स

त्

ना

म

सा क्षी

卐

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म सा

क्षी **५**५

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

Š

纲

स

त्

ना

म

सा

ॐ श्री स त्

स त् ना म

म सा क्षी **५**

न 3ँ% श्री सत्नाम

सा क्षी **५** ॐ श्री स त्ना म

सा

क्षी

म

सा

क्षी

卐

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा–23

हरीराम भण्डारी पर श्री गुरुदेव की असीम कृपा

युगपुरुष सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की पवित्र 'श्री अमरापुर दरबार' (डिब्) पर अनेक साधु— संत — सेवाधारी खूब तन — मन से सेवा किया करते थे। सभी के मन में यही भाव होता था कि स्वामी जी हमारी सेवा से सदैव प्रसन्नचित रहें और हमें आशीर्वाद दें। निश्छल भाव, निष्कामता। कोई सांसारिक पदार्थों की इच्छा नहीं — पवित्र निर्मल भाव.....

टण्डा आदम श्री अमरापुर दरबार पर 'हरीराम' नाम का एक भंडारी संतो की खूब सेवा किया करता था। उसका स्वभाव भी बड़ा अच्छा व मृदुल था। सदैव प्रसन्न मन से भोजन बनाने की सेवा करता था। पवित्र मन से भण्डारा बनाने से भोजन – प्रसाद भी बहुत अच्छा और स्वादिष्ट बनता था... सारे संत – महात्मा और गुरु महाराज जी भी उनकी सेवा से प्रसन्नचित रहते थे। उसकी निष्कामता, निर्मलता, पवित्रता और मृदुलता ने उसे सभी संत – सेवाधारियों व श्री गुरु महाराज जी का प्रिय बना दिया था।

एक समय हरीराम भंडारी हाथ जोड़कर **युगपुरुष सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज** से कहता है— 'हे प्रभु! दीनदयालु! आप कृपा करके इस दास को सदैव अपनी सेवा में ही रखना..... अपने से कभी भी अलग मत करना..... हमेशा अपने साथ व अपने पास रखना..... मैं सदैव आपके श्री चरणों की सेवा करना चाहता हूँ।'

श्री सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज उस समय भजनानन्द की मौज में बैठे थे। अवधूती मस्ती! स्वामी जी ने कहा – 'माई! आप किसी बात की भी चिंता मत करो – घबराने की कोई आवश्यकता नहीं। आपने हमारी दिल बहुत खुश की है, हम तुम्हारी सेवा से प्रसन्न हैं..... यह लोक तो क्या परलोक में भी तुम्हें अपने साथ ही रखेंगे.... तुम चिंता मत करो।' श्री गुरुदेव के वचन सुनकर 'हरिराम भंडारी' बड़ा प्रसन्न हुआ... इसे कहते हैं – 'श्री गुरुदेव की अनन्य कृपा'! ऐसा हर कोई नहीं कह सकता... जो पूर्ण ब्रह्मज्ञानी होगा... वह ही दावे के साथ कर सकता है कि हम तुम्हें परलोक में अपने साथ रखेंगे।

संत – महापुरुष जिसके ऊपर कृपा कर दें, तो उसका जीवन ही सँवर जाता है। बस! हम उन महापुरुषों को समझने का प्रयास करें। ऐसे कामिल महापुरुष इस लोक में तो क्या, परलोक में भी सहायक और हमराही बनते हैं। वहीं हमें इस संसार सागर से पार कर सकते हैं। ये सब होता है – निष्काम सेवा का फल....! हम भी श्री गुरु दरबार व संतो की खूब तन मन से निष्काम सेवा करें तो हमारा लोक–परलोक दोनों सँवर जायेंगे।

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

ॐ श्री सत्नाम साक्षी फ ॐ श्री सत्नाम साक्षी फ

ॐ श्री स त

स त् ना म

सा क्षी ५५ ॐ

38 शिस्त्नाम साक्षी 15

सा क्षा ५ ॐ श्री स त्ना म सा क्षा ५ ॐ

纲

स

त्

ना

म सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

4

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा–25

संत परम हितकारी

टण्डाआदम सिन्ध में स्थित युगपुरुष सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की 'श्री अमरापुर दरबार' जहाँ था चहुँ ओर विशाल बाग् – बगीचा। सभी संत – सेवादारियों को गुरु आश्रम की अपनी– अपनी सेवा। कोई कोठार, कोई भण्डारा, कोई संत सेवा, कोई खेती – बाड़ी तो कोई बाग् – बगीचे की सार – संभार में सेवारत रहते थे।

ऐसे ही सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की आज्ञा से संत अर्जुनदेव जी बाग् – बग़ीचे की सेवा किया करते थे। बग़ीचे में अमरुद, सेब, केला, अनार, अंगूर, आम आदि फल – फूल लगे हुए थे। संत जी दिन – रात लगन के साथ बग़ीचे की देखभाल किया करते थे।

एक दिन संध्याकाल के समय एक गरीब उस बग़ीचे में आकर आम की गठरी बाँधकर ले जाने लगा। तब संत अर्जुनदेव की दृष्टि उस गरीब पर पड़ी। उसे पकड़ लिया और कहा, चोरी करते हो? थोड़ा गुस्सा भी किया... बिचारा गरीब डर गया और क्षमा माँगने लगा... थोड़ी देर बाद परम उदारी भक्तवत्सल सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज भ्रमण करते हुए वहाँ आ पहुँचे। सारा वृत्तान्त जानकर गरीब के सिर पर स्नेह – दुलार का हाथ घुमाया – दया भाव रखकर उससे कहा– वत्स! कोई बात नहीं... तुम भी भगवान की सन्तान हो... ये फल – फूल सभी वस्तु परमात्मा की है। इन पर सबका अधिकार है। इसे हम सबको मिल– बाँटकर खाना चाहिये।

स्वामी जी ने संत अर्जुनदेव जी से कहा, इन्हें आम दे दो... आम किसके लिये हैं? इसे कौन खायेगा? इसे आवश्यकता थी, तो इसने भगवान की वस्तु समझकर फल ले लिये.... इसमें क्रोध करने की आवश्यकता नहीं.... इस बिचारे की भी कोई मजबूरी रही होगी। आज कोई काम नहीं मिला होगा – अर्थात् जितना माँगे इन्हें फल दे दो....

संत – महापुरुष तो सर्वगुण सम्पन्न, परम उदारी और अन्तर्यामी होते हैं। स्वामी जी ने बड़े ही स्नेहयुक्त वचन बोलकर उस गरीब से कहा – आपको जितने फल चाहिए.... आप ले जाओ... किसी प्रकार की कोई चिंता न करो... स्वामी जी उदारता व दयालुता को देखकर वह गरीब बड़ा प्रसन्न हुआ और श्री चरणों में प्रणाम करके चला गया। श्री गुरु महाराज जी की ऐसी दया कृपा को देखकर सभी संत– सेवाधारी बड़े प्रसन्नचित हुए।

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

위 5

άE

麲

स

त्

ना

म

सा क्षी

55

άE

纲

स

त् ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

ॐ श्री

स

त्

ना

म

सा

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

ॐ श्री

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

Š

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

Š

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स त्

ना

म

सा

क्षी

卐

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा–25

तपोबल के प्रभाव से बनाया – रेत के टीले पर कुँआ

संत-महापुरुषों का संकल्प बड़ा ही अद्भुत होता है, एक बार जो मन में संकल्प आ जाये तो उसे वह अवश्य ही पूरा करते हैं। फिर चाहे उस कार्य में कितनी ही कठिनाईयाँ क्यों न हों; क्योंकि उन्हें होता है भगवान पर पूर्ण विश्वास.... विश्वास की ही जय होती है। श्री अमरापुर दरबार डिब् जो रेत के टीले पर बनी, यह कार्य कोई साधारण कार्य नहीं था, जो कि रेत के टीले पर इतनी बड़ी दरबार बन जाये और तो और वहाँ कुँआ खोदना और फिर उसमें से जलधारा निकालना, ये तो और असंभव.... यह सब कार्य तो सिद्ध महापुरुषों द्वारा ही सम्भव हो सकता है... यह सब कार्य तो साधना व तपोबल के प्रभाव से ही सम्भव हो सकता है अन्यथा हम कितनी ही मशीनीकृत उपकरणों का प्रयोग कर लें फिर भी रेत के टीले पर कुँआ बनाना व उसमें से जल निकालना, अत्यंत दुष्कर कार्य.... कोई नहीं समझ पाता उन संत फकीरों की रहस्यमयी लीलाओं को... अवधूती मस्ती, फकीरी का अनोखा आलम, मुख मण्डल पर शोभित अद्भुत तेज... अपनी साधना में रत...

ऐसे ही एक समय युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज साधु-संतों को लेकर आये श्री अमरापुर दरबार डिब पर, अपनी लाठी से लकीरें खींचकर कहने लगे.... यहाँ पर कुआँ खोदिए, यह वह समय था जब संत-सेवाधारियों को दूर-दूर से जल लाने के लिए बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ता था। स्वामी जी ने कह दिया कि आज से दरबार साहब पर भण्डारा प्रसाद दोनों समय चलेगा.... आज्ञा पाकर सभी साधु-संत-सेवाधारी कुँआ खोदने लगे। एक भगत ने कुँए के लिए चक्का भी बनाकर तैयार कर दिया। सद्गुरु महाराज जी स्वयं लाठी लेकर कुँए की खुदाई के काम का निरीक्षण कर रहे थे, उस समय कुछ ऐसी घटना घटित हुई.... जिस समय कुँए में जलधारा निकली, तब उसमें चक्का डाला गया.... चक्का डालते समय एक और का रस्सा टूट गया.... सभी संत-सेवाधारी लोग चिन्ता में पड़ गये। उस समय ऐसी कोई यांत्रिक मशीनें भी नहीं हुआ करती थीं, जिससे वह चक्का बिना किसी बाधा के सीध में लगाया जा सके। सभी चिन्तित होकर सोचने लगे... हमारी मेहनत व्यर्थ जायेगी और पानी भी नहीं मिलेगा... किन्तु ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। जिसके साथ स्वयं समर्थवान् ईश्वर स्वरूप श्री गुरुदेव भगवान हों फिर भला कैसी चिन्ता....

स्वामी जी ने सभी साधुओं सेवाधारियों से कहा- आप चिन्ता मत करो, आप तो चक्का डाल दो (आज भी अनेक ग्रामीण क्षेत्रों में चक्के द्वारा बेल की सहायता से कुओं से पानी खींचा जाता है)। श्री गुरुदेव के तो कहने की देरी थी, जैसे ही चक्का कुँए में डाला तो वह एकदम सीधा समतल गिरा, मानो उसे किसी सधे हुए कारीगर द्वारा यत्नपूर्वक रखा जा रहा हो.... कौन रख रहा था उस चक्के को सीधा करके... ये तो वे सिद्ध महापुरुष ही जानें.... किस रूप में कौन सी लीला करते हैं ये महापुरुष, आज तक कोई नहीं समझ सका....

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

纲

स

त्

ना

म

सा

위 **5**

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

🕉 श्री सत्नाम साक्षी \rfloor 🕉 श्री सत्नाम साक्षी 🖫 🕉 श्री सत्नाम साक्षी 🖫 🕉 श्री सत्नाम साक्षी 🖫 🅉 श्री सत्नाम साक्षी 🖼

त् ना म

सा क्षी 卐

Š 纲 स त् ना

म सा क्षी 卐 άE 纲 स त्

ना म सा क्षी 卐 άE 纲

स त् ना म सा क्षी **5**5 άE 纲 स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरू स्वामी टेऊँराम गुण गाथा-26

तप–साधना–भक्ति के प्रभाव से बना तीर्थश्री अमरापुर स्थान

(उड़ती रेत को दिया आपने थाम......)

जिस बालू रेत से शहर वालों को बड़ा खतरा रहता था। आये दिन आंधी – तूफान से पूरा शहर मिट्टी – मिट्टी हो जाता था। जगह – जगह रेत के टीले बन जाते थे... सभी को बड़ा नुक्सान होता था। बड़े से बड़े सरकारी कर्मचारी अधिकारी भी इसका निराकरण नहीं कर पा रहे थे। सभी ने बहुत प्रयास किये... परन्तु सब व्यर्थ... किन्तु तप – तपस्या – साधना – भक्ति के बल पर महायोगी युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने संत – महात्माओं के साथ मिलकर उस बालू रेत को इस प्रकार बंद कर दिया कि उसका एक तोला भर भी उड़कर शहर में नहीं आ सकता था... शहर वालों पर बहुत बड़ा उपकार हो गया। वैसे भी साध् – संत – महात्मा तो परउपकारी होते ही हैं – जगत् कल्याण के लिए ही अवतरित होते है। साध् – संतों ने तो बहुत कड़ा परिश्रम कर जंगल में मंगल कर दिया... जो कार्य असम्भव था... वह भजन – साधना के प्रभाव से युगपुरुष सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने सम्भव कर दिया।

इस आश्चर्यजनक शक्ति को देखकर श्री गुरु महाराज जी के समक्ष जिलाधीश सहित बड़े -बड़े अधिकारी, मजिस्ट्रेट, पटवारी, सरपंच व पूरे शहर की जनता नत् मस्तक हो गये। सभी महाराज श्री के उपकार का यशोगान करने लगे।

ऐसा अद्भुत करिश्मा तो ईश्वरीय शक्ति ही कर सकती है... समतल जमीन से लगभग 30-35 फ्ट ऊपर श्री गुरुदेव जी की तप - साधना स्थली - वही रेत का टीला - 'श्री अमरापुर दरबार (डिब)' के नाम से सुविख्यात हुआ... आज भी वह पवित्र तीर्थ स्थल टण्डाआदम (सिन्ध) में बना हुआ है। हजारों भक्त प्रतिदिन दर्शन करते हैं। सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज 'डिब वाले साईं 'के नाम से प्रसिद्ध हुए... तभी किसी किव ने एक पंक्ति में लिखा-- 'उड्ती रेत को दिया आपने थाम – कि लीला तेरी तू ही जाने'... ऐसे युगपुरुष तपस्वी महापुरुषों को शत – शत नमन...

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

麲

स

त्

ना

म

सा क्षी

55

Š

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲 स

त्

ना

म

सा

3ॐ श्री स त्

स त् ना म

सा क्षी **५** ॐ श्री

श्री स त्ना म साक्षी **५**

άE

श्री सत्नामसाक्षी **५**%

纲

स

त्

ना

म साक्षी **५५** ॐश्री सत्ना

म

सा

क्षी

卐

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा–27

जंगल में कहाँ से आयी दूध की गागर....

सर्वगुण सम्पन्न, भक्ति – शक्ति के आधार स्तम्भ, सिच्चदानन्द स्वरूप, निर्गुण निराकार, सिन्ध प्रदेश के युगपुरुष महायोगी भगवद् स्वरूप सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज! जिनकी यश– कीर्ति सूर्य के सम चहुँ ओर प्रकाशित है – ऐसे परम योगीश्वर की महिमा का गुणगान करना सूर्य को दीप दिखाना जैसा ही है......

एक समय महायोगी तपस्वी सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज सिन्ध से हिन्द देश के तीर्थस्थलों की यात्रा पर निकले... कुछ संत महात्मा एवं भक्तगण उनके साथ थे। पूरे हिमालय, उत्तराखण्ड, चारों धाम, उत्तरकाशी, ऋषिकेश, हरिद्वार आदि सभी यात्राओं पर पैदल भ्रमण करते हुए तीर्थाटन कर रहे थे। सर्वशक्ति के आधार युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज मण्डली सिहत निर्भयता के साथ एवं भूख-प्यास, सर्दी-गर्मी को सहन कर तीर्थ दर्शन कर रहे थे। तभी उसी जंगली पहाड़ी क्षेत्र में किसी भक्त को बड़ी भूख-प्यास लगी... भोजन व दूध की इच्छा हुई – संतों व भक्तों ने उसे बहुत समझाया। यहाँ जंगल में दूध व भोजन कहाँ से मिलेगा... इस घोर जंगल में अन्य व्यक्ति तो क्या..... पशु – पक्षी तक भी नजर नहीं आ रहे.....

श्री गुरु महाराज जी अपनी मस्ती में मस्त, प्रमु – भक्ति में लीन – ब्रह्मचिन्तन में स्थित! क्या भूख... क्या प्यास... और भूख-प्यास से व्याकुल भक्त – स्वामी जी से मन ही मन पुकार कर रहा था... सर्वशक्ति के भण्डार....., अन्तर्यामी स्वामी जी ने उस भक्त की पुकार सुन ली... स्वामी जी ने दो मिनट ध्यान चिंतन किया। बस! फिर क्या था, अद्भुत करिश्मा! उसी क्षण एक सज्जन आया और भोजन व दूध की भरी गागर रखकर चला गया... यह आश्चर्यजनक अद्भुत शिंक देखकर सभी संत व भक्त चिंकत हो गये! अरे! इस जंगल में दूध की गागर? कैसे आयी! कहाँ से आयी! कौन समझे ऐसे दिव्य महापुरुष की अद्भुत लीला को – कौन लाया उस दूध को? आज तक कोई नहीं समझ पाया। ऐसे सर्व शिंक्त के भण्डार को हमारा शत शत नमन..... बारम्बार वन्दन....

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

Š

網

स

त्

ना

म सा

क्षी **५**५

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

άE 纲 स त् ना म सा क्षी 卐 Š 纲 स त् ना म सा क्षी 卐 άE 網 स त् ना म सा क्षी

55

ॐ श्री

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा–28

पटवारी वाहिद बख्श बना स्वामी जी का शिष्य

परम संत सेवी वाहिद बर्खा। ये व्यक्ति पटवारी होकर हैदराबाद से खण्डू आया था। इसका युगपुरुष सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज से सम्पर्क तब हुआ, जब कुछ ईर्ष्यालुओं ने सत्संग के चबूतरे को तोड़ दिया था। सत्संगियों ने सारी हकीकत बताई। साथ ही उन्हें वहाँ चलने की प्रार्थना की, तो वे स्वयं चलकर आए... वहाँ चबूतरे वाले स्थान को पूरा देखा। वहाँ किसी को कोई परेशानी नहीं हो रही थी और कहा, 'ये तो अच्छी बात है कि संत लोग यहाँ सत्संग कर रहे हैं।' फिर सभी प्रेमी उन्हें श्री गुरुदेव के पास ले आये.....

युगपुरुष सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के मनमोहक मंगलमय वैराग्यमयी तेजपुँज दर्शन कर वह मुसलमान पटवारी वाहिद बख्श मंत्रमुग्ध—से हो गए। एक ही झलक में वाहिद बख्श हमेशा के लिए स्वामी जी के श्रीचरणों का चाकर बन गया..... 'आप तो साक्षात् रब – अल्लाह की मूरत लग रहे हैं.... ऐसा लग रहा है जैसे मुझे ईश्वर का साक्षात् दर्शन हो रहा हो.....' बड़े भित्त भाव से पटवारी जी ने स्वामी जी को सादर दण्डवत् प्रणाम किया।

फिर क्या था– इन्होंने ही सत्संग का पूरा चबूतरा स्वयं की देख – रेख में स्वयं के ही खर्च से बनवाकर दिया और स्वामी जी के श्रीचरणों में विनय करके कहने लगा – 'हे दरवेश फकीर सांईं ! इस गुलाम के लिए और कोई ख़िजमत (सेवा) हो तो यह गुलाम (सेवक) सदैव आपकी सेवा के लिए हाजिर रहेगा।' स्वामी जी वाहिद बखा का निष्कपट प्रेम व श्रद्धा देखकर बहुत प्रसन्न हुए। दूसरे दिन जब वाहिद बखा स्वामी जी के सत्संग में आया, तो उन्हें ऐसा भगवत भिक्त का रसानन्द आया कि एक मटका लेकर बजाने लगा। इतना प्रेम से बजाया कि सारे प्रेमीगण भी झूमने व नाचने लगे। वाहिद बखा स्वामी जी के श्री चरणों में निवेदन कर कहने लगा – 'हे फकीर साई! आज आपके भजन – कीर्तन में बड़ा आनंद आया और मैं तो बड़ा सौभाग्यशाली हूँ जो मेरी किस्मत मुझे यहाँ खण्डू में पटवारी बनाकर ले लायी है।' श्री गुरु महाराज जी भी मुस्कराकर बोले– 'भाई! बहुत अच्छा! सत्संग – दर्शन भी किसी – किसी नसीब वालों को ही मिलता है। तुम्हारा भाग्य अच्छा है। अब आप रोज भजन – सत्संग में आकर मटके बजाने की सेवा किया करें.... कभी – कभी दरवेशों के कलाम (भजन) भी सुनाया करो...

श्री गुरु महाराज जी की आज्ञानुसार अब वाहिद बख्श प्रतिदिन सत्संग में आता और मटका बजाकर भजन सुनाया करता था। जीवन चिरतामृत में आता है कि वाहिद बख्श जीवनपर्यन्त स्वामी जी की सेवा में रहा और नाम दान की दीक्षा लेकर स्वामी जी का शिष्य बना और पूरा जीवन सत्संग – दर्शन कर खूब आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त किया....

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी **५**५

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

🕉 श्री सत्नाम साक्षी \rfloor 🕉 श्री सत्नाम साक्षी 🖫 🕉 श्री सत्नाम साक्षी 🖫 🕉 श्री सत्नाम साक्षी 🖫 🅉 श्री सत्नाम साक्षी 🖼

άE 纲 स त् ना म सा क्षी 卐 Š 網 स त् ना म सा क्षी 卐 άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

網

स

त् ना

म

सा

क्षी

卐

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा–29

रिवये भगत के चोरी की आदत को छुड़वाना

बात उस समय की है – जब युगपुरुष सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज खण्डू में विराजमान थे। उस समय श्री गुरु महाराज जी की सेवा में हँसराज और खिया भगत रहते थे। खण्डू के बाद ये दोनों श्री अमरापुर दरबार डिब् – टण्डेआदम में भी सेवारत रहे... किन्तु कुछ संस्कारवश खिये भगत में चोरी की बुरी आदत पड़ गई थी। वह संत – महात्माओं के कपड़े चोरी करके अपने घर भेज देता था। उसके परिवार वाले मना भी करते थे पर वह मानता ही नहीं था। इस बुरी आदत के कारण सभी संत खियाराम से रुष्ट रहते थे। प्रतिदिन चोरी होने लगी – इससे संत नाराज होकर स्वामी जी के पास शिकायत लेकर आये। ये खिया रोज हमारे कपड़े चुराकर घर भेज देता है। अतः आप इसे यहाँ से निकाल दें। हम इससे बहुत परेशान हो गए हैं। स्वामी जी ने संतों की शिकायत व नाराजगी को शान्तचित होकर सुना लेकिन बोले कुछ नहीं!

एक समय खियाराम की बेटी चोरी के सारे कपड़ों की गठरी बाँधकर स्वामी जी के पास ले आयी। यह देखकर संतों ने नाराजगी जताते हुए स्वामी जी से कहा, कि देखा आपने! ये सभी चोरी के कपड़े हमारे हैं। अब आप इसे आश्रम से निकाल दें.... इसने बहुत चोरी की है...... ये यहाँ रहने के लायक नहीं है.....

करुणा की साक्षात् मूर्ति भक्तवत्सल सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज संतों को शान्त करते हुए बोले- 'अरे भाई! यह जैसा भी है- हमारा है। आप नाराज न हों, सब ठीक हो जायेगा। जब डॉक्टर के पास मरीज जाता है, तो बीमारी से छूटने के लिए जाता है। यदि डॉक्टर उस मरीज को ठीक नहीं कर पाता तो उसमें डॉक्टर की कमजोरी है। यह हमारे पास इतने समय से सेवा कर रहा है। किसी कारण वश इसे यह बीमारी लग गई है, तो कोई बात नहीं। इसने आश्रम की तन – मन से खूब सेवा की है... अब इसे यहाँ से निकाल दें? यह हमसे नहीं हो पायेगा! संत – महात्मा तो दयालु होते हैं। इसे अगर बीमारी ने घेरा है तो हम इसे ज्ञान रूपी औषधि देकर इसके विकार को भी अवश्य दूर कर देंगे।'

तपस्वी सिद्ध महापुरुषों के आशीर्वाद से तो बुरे से बुरी कर्म रेखा भी मिट जाती है। अज्ञानी ज्ञानी बन जाता है। पापी पुण्यात्मा बन जाता है। दुर्जन सज्जन बन जाता है। ये होती है – सदगुरु देव भगवान की अनन्य कृपा! जिनके ऊपर कृपा कर दें – उसका जीवन सँवर जाता है। बस– फिर क्या था। स्वामी ने भक्त खियाराम के ऊपर कृपा दृष्टि कर दी – आशीर्वाद देते हुए जीवन को सात्विक बनाने के लिए सुंदर– सुंदर ज्ञानोपदेश दिया। श्री गुरु महाराज जी के मधुर वचनामृत पान कर उसका हृदय परिवर्तन हो गया। उसी क्षण भक्त खियाराम लज्जित होकर सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के श्रीचरणों में गिर पड़ा, 'हे प्रभु! हे कृपानिधान! आप मुझ पर दया करो... कृपा करो, मुझसे बड़ी भूल हो गयी है... मुझे क्षमा कर दें.... आज के बाद मैं कभी भी चोरी नहीं करूँगा।' उस दिन के बाद उसने कभी भी चोरी नहीं की। श्री गुरु महाराज जी की कृपा से उसका जीवन सँवर गया।

ऐसे क्षमाशील महाप्रूषों को कोटि कोटि वन्दन! धन-धन सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज!

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

위 **5**

άE

纲

स

त्

ना

म सा

क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना

म

सा क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

ॐ श्री सत्नाम साक्षी फ ॐ श्री सत्नाम साक्षी फ

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

Š

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

網

स

त् ना

म

सा

क्षी

卐

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा–30

भगवत् प्रेम रूपी जेल

भगवत् प्रेम को समझना बड़ा किन है। प्रेम के वशीभूत होकर परमात्मा भी खिंचे चले आते हैं। प्रेम की भाषा अलौिक है – उसे समझना – जानना सरल काम नहीं... बहुत ही किन काम है। सर्वस्व समर्पित हो जाना ही प्रेम है। प्रभु परमात्मा के प्रेम में तो अनेक कष्ट, दुःख – दर्द सहन करने पड़ते हैं। सोने को जितना तपाओ, उतनी चमक अधिक होती है... इसी प्रकार प्रेम में भी सब कुछ सहन करना पड़ता है। त्याग – तपस्या, भिक्त से भरपूर जब किसी संत महापुरुष की यश – कीर्ति बढ़ती है, तो कुछ प्रतिद्वंद्वी लोग ईर्ष्यावश नीचा दिखाने का प्रयास करते है। कोई न कोई उपद्रव खड़ा करते हैं। जिससे संत महात्माओं की निन्दा हो.... उनको नीचा देखना पड़े... पर परमात्मा ऐसा नहीं होने देते. आगे चलकर उनकी यश – कीर्ति को और अधिक बढ़ा देते हैं।

ऐसा अनादि काल से चला आ रहा है पर जिसे भगवान पर पूर्ण विश्वास व भरोसा होता है, उसका कोई कुछ भी बिगाड़ नहीं सकता... चाहे वो कितने भी यत्न कर ले। वैसे भी संत महात्माओं, भक्त – कवियों को जीवन में अनेक कष्टों का सामना करना पड़ा है..... ये सब भी भगवान की परीक्षा व लीलाएं होती हैं.....

सिन्ध प्रदेश के भगवद् स्वरूप महायोगी तपस्वी सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज भी भगवत् भिक्त व सत्य सनातन धर्म का प्रचार – प्रसार कर रहे थे। उनकी यश और कीर्ति चहुँ ओर फैल रही थी। सनातनधर्मी व ज्ञान – ध्यान का सँचार जन – जन के हृदय को प्रभावित कर रहा था। पाप कर्म को छोड़कर अनेक भक्तजन शुभकर्म कर रहे थे। जहाँ पशुबलि जैसे हिंसक कर्म होते थे। वे सब अशुभ कर्म छोड़कर सात्विक कर्म करने लग गये थे। सभी के हृदय में ज्ञान – ध्यान भिक्त सँचारित होने लगी थी। ऐसा ही था सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की भिक्त – शिक्त का प्रताप... किन्तु स्वामी जी की कीर्ति – प्रतिद्वन्द्वी लोगों से देखी न गयी और तब उन्होंने अपयश हेतु समाचार पत्र में छपवा दिया कि स्वामी टेऊँराम जी महाराज व संत मण्डली को जेल में बंद कर दिया गया है.....

दूसरे दिन किसी भक्त ने स्वामी जी को समाचार पत्र दिखाकर कहा – 'भगवन्! देखो! ये क्या छाप दिया है – स्वामी जी व संत मण्डली को जेल में बंद कर दिया है। महापुरुष तो गुणग्राही होते हैं। सभी में से सार तत्व ही ग्रहण करते है। तब स्वामी जी ने बड़े ही मार्मिक भाव से कहा– 'हाँ भाई! इन्होंने तो बिल्कुल सही ही लिखा है – हम सच में ही भगवान के प्रेमरूपी जेल में बन्द हो गये हैं.... हम इस जेल से निकलना भी नहीं चाहते.... भगवान हमें सदैव अपने 'हृदय रूपी प्रेम के जेल' में ऐसे ही बाँधे रखे.... हम तो वहीं रहना चाहते हैं....' देखो – सत् महापुरुषों की सहनशीलता! कुछ भी ना कह कर उसमे से भी गुण ही ग्रहण किया। तब श्री गुरुदेव जी ने बड़ा ही सुन्दर भजन गाकर स्नाया— 'प्रेम ने मुझको बाँध लिया है – विरह केरे बन्दखाने – मध मैखाने....'

प्रभु प्रेम में निन्दा और दुःख तो मिलते ही हैं। परन्तु जब वे सभी दुःखों को सहन कर प्रभु की परीक्षा में पास हो जाते हैं। उसके बाद उनका नाम और यश – कीर्ति संसार में और अधिक फैल जाती है। वे अंत में सुख को पाकर पूजनीय संत-महात्मा बन जाते हैं! ऐसे प्रभु प्रेम में दुःख व निन्दा को भी गले लगाने वाले सत्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज के श्रीचरणों में कोटि कोटि वन्दन!

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

Š

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

30

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

ॐ श्री सत्नाम साक्षी फ ॐ श्री सत्नाम साक्षी फ ॐ श्री सत्नाम साक्षी फ ॐ श्री सत्नाम साक्षी फ

ॐ श्री स त्

स त् ना म

म सा क्षी **५**

न ॐ श्री स त्ना म

+ सा क्षी **५.**ॐ श्री स त्

त्नाम साक्षी ५५% श्री सत्

क्षा ५५ ॐ श्री स त्ना म साक्षी ५५ ॐ श्री स त्ना म सा

क्षी

卐

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा–31

डूबे रिवल्लू को बचाकर लाये – बालक टेऊँराम

समय-समय पर प्रभु परमात्मा संत-महात्मा के रूप में अवतरित होते है किन्तु हम मूढ़ अज्ञानी जीव उन्हें पहचान नहीं पाते। युगपुरुष सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज भी एक सिद्ध महापुरुष एवं ईश्वरीय अवतार थे।

बाल्यावस्था में खिल्लू नामक बालक को डूबने से बचाने वाला प्रसंग किसे याद न होगा। ये सभी प्रभु की विभिन्न अनन्त लीलाओं में से एक लीला थी। किन्तु देखा जाये तो स्वामी जी बाल समूहों के साथ सिन्धु नदी के पावन तट पर क्रीड़ा (रास) कर रहे थे। जिस प्रकार भगवान श्रीकृष्ण वृन्दावन में गोप-ग्वालों के साथ खेलते थे! वैसे ही स्वामी जी ने भी अनेक लीलाएँ खण्डू गाँव में की थी.....

बालरूप में स्वामी जी की लीला का दृश्य भी अलोकिक था। इस अद्भुत क्रीड़ा को देखने के लिए सभी देवी – देवता भी बालकों का रूप धरकर उस रास में शामिल हो गए थे। ऐसी मनोहारी मधुर लीला कौन देखना नहीं चाहेगा? उनकी अलौकिक लीला को समझ पाना, हमारी समझ से कोसों दूर हैं। भगवान वरुणदेव के मन में भी बालरूप स्वामी टेऊँराम जी महाराज के दर्शनों की तीव्र उत्कंठा जाग्रत हुई। अब तो दोनों के मन में एक दूसरे से मिलने व दर्शनों की इच्छा जाग्रत हुई। प्रत्यक्ष दर्शन कराना उचित न समझा.....

तब दोनों महापुरुषों ने एक अद्भुत विचित्र लीला रची। 'खिल्लू नामक बालक' जो उस भगवद् रासलीला में खेल रहा था। अचानक वरुणदेव जी ने दर्शनों की लालसा से सिन्धु नदी का वेग बढ़ा लिया.... लहरें तेज कर दीं और आगे बढ़ा दीं.... बस! फिर जल धारा तट से बाहर निकाली और खिल्लू को अपने भीतर लेकर चली गई। जैसे ही खिल्लू नदी के अंदर गया। बच्चों में हाहाकार मच गया.... सभी चिल्लाने लगे.... चहुँ ओर सन्नाटा.... सभी चिन्तित होने लगे, अब क्या होगा? सभी बाल – गोपाल बहुत रोने – चिल्लाने लगे ! कौन समझे– स्वामी जी की इस अद्भुत बाल लीला को ? 'प्रियतम को प्रिय से मिलने की चाह थी' तो ऐसी लीला करनी ही थी... अब स्वामी जी अपने भक्त की रक्षा करने हेतु प्रसन्न मुद्रा में सिन्धु नदी के भीतर चले गए। स्वामी जी के अन्दर जाते ही सिन्धु नदी का जल चहुँ ओर प्रकाशमान हो गया... अद्भुत तेजोमय ज्योति.... भगवान वरुणदेव जी प्रतीक्षारत खिल्लू को गोदी में लिये खड़े थे। बालक टेऊँराम जैसे ही नदी के अंदर पहुचे तो बड़े प्रसन्नचित होकर दोनों एक दूसरे को प्रेम भाव से निहारने लगे..... नयनों से नयन मिले... अनोखा महासंगम और नयनाभिराम प्रेम विह्वल भाव.... दोनों देवता एक दूसरे के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए प्रसन्न होने लगे। प्रभु, बड़े समय बाद दर्शन हुआ है। कुछ समय ऐसे ही प्रेम – ज्ञान की वार्तालाप करके खिल्लू को स्वामी जी बाहर लेकर आ गए.....

ऐसी लीला देखकर सभी खण्डूवासी बड़े आश्चर्यचिकत हो गये। सभी एक दूसरे को आश्चर्य से निहारने लगे। प्रभु! तुम धन्य हो। 'खिल्लू के द्वारा दोनों महापुरुषों का प्रत्यक्ष रूप से दर्शन किया गया'! स्वामी जी ने यह लीला कर सभी को प्रभु सत्ता का भान करवाया! उसी समय सभी को विश्वास हो गया कि स्वयं प्रभु परमात्मा ही हमारे खण्डू गाँव में अवतार लेकर आये है.....

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी **५**५

30

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

ॐ श्री

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

Š

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

Š

纲

स

त्

ना

म सा

क्षी

55

Š

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा–32

जमकर बरसे बदरा.....

संत – महापुरुष इस कलिकाल में भी समय समय पर अनेकों अद्भुत लीलाएँ करके प्रभु सत्ता का भान करवाते रहते हैं। ऐसे ही अवतार कोटि के लीला पुरुषोत्तम थे – युगपुरुष मंगलमूर्ति सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज! जिन्होंने अपने भक्तिमय जीवन में अनेक लीलाएँ रचीं.....

एक समय टण्डा आदम में रहने वाला हीरालाल नामक स्वामी जी का एक भक्त था। जो सदैव संतों व श्री गुरू आश्रम की तन – मन से खूब सेवा करता था। उसके मन में एक इच्छा थी कि एक बार सत्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज मेरे घर पर चरण पखारें.... वह भक्त सदैव स्वामी जी से यहीं प्रार्थना करता रहता था.... श्री गुरू महाराज जी ने कहा – समय निकाल कर एक बार तुम्हारे घर पर अवश्य ही आएँगे।

ऐसे ही एक समय श्री गुरु महाराज जी भिक्तरस की मस्ती में मस्त बैठे थे। कौन जानता है सिद्ध महापुरुषों की अद्भुत लीला को...? तेज गर्मी का समय..... भगवान भास्कर की प्रचंडता..... तपती रेत..... गर्म हवाओं से सभी व्याकुल..... भरी दुपहरी का समय.....

स्वामी जी ने संत मण्डली व भक्तों से कहा – चलो अभी हम सब भक्त हीरालाल के घर चलते हैं... सभी संत हैरान। इतनी तीक्ष्ण गर्मी। लू की भरमार – पर स्वामी जी की आज्ञा थी... योगियों की तरह रमण करने वालों के लिए क्या धूप, क्या छाँव। अवधूती मस्ती का आलम!

स्वामी जी पूरी मण्डली सिहत गाते-बजाते, भिक्त सरोवर में डूबे उस भक्त के घर की ओर चलते चले जा रहे थे। सभी पसीने से लथपथ – गर्मी – लू से बैचेन। तब सभी भक्तों व संतों ने स्वामी जी से विनम्र भाव से प्रार्थना की- 'हे प्रभु! गर्मी बहुत हो रही है, सूर्य देवता की तपत भी बहुत है। हम सभी बड़े व्याकुल हो रहे हैं। आप कृपा करो कि थोड़ा मौसम ठण्डा हो जाए। आप तो स्वयं परमात्मा के अंश हैं.....

स्वामी जी के भक्ति की तार परमात्म तत्त्व से एकाकार थी। भक्ति का अनोखा आलम, शरीर का भान नहीं, अलख निरंजन! उस आत्मानन्द के आनंद को कौन समझे।

स्वामी जी ने एकाएक तम्बूरे की तान को छेड़ते हुए – भक्ति भाव से सारंग राग का एक मधुर भजन गाया- – 'बादल किर आबादु- वसी हिन वेले...' 'कहे टेऊँ ही अर्जु अघाइजि- दुकर कटे तूं सुकरु बणाइजि, किर मुसीबत मादु।।'

भजन में इतना रस और भिक्त भाव था... जो इन्द्र देवता भी अपने आप को रोक नहीं पाये... घनघोर घटा के साथ जमकर बदरा बरस पड़ी..... उस वक्त का दृश्य भी अलौकिक था.... जिसने प्रत्यक्ष देखा होगा, वह ही उसे जान सकता है। मौसम एकदम सुहावना हो गया.. बरखा रानी बरस रही थी... सभी भक्तों का तन – मन शीतल हो गया। स्वामी जी को इन्द्र देवता ने प्रणाम किया। ऐसी लीला देखकर सभी बड़े प्रसन्नचित हो गए।

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

纲

स

त्

ना

म

सा

위 5

άE

網

स

त्

ना

म

सा

क्षी

મ ૐ

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

麲

स त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

🕉 श्री सत्नाम साक्षी \rfloor 🕉 श्री सत्नाम साक्षी 🔄 🕉 श्री सत्नाम साक्षी 🗲 🕉 श्री सत्नाम साक्षी 🛏 🕉 श्री सत्नाम साक्षी 🖼

ॐ श्री स

त त् ना म

ा सा क्षी फ

3% श्री स त्

म सा क्षी **५** ॐ

ना

श्री स त् ना म सा

क्षी **५५** ॐ श्री स

त् ना म सा क्षी

क्षी **५५** ॐ श्री स

त् ना म सा क्षी फ 'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा–33

पत्थर से निकल पड़ी जलधारा.....

संत – महात्मा सर्व शक्ति के मालिक होते है। जब चाहे जैसा चाहे लीला कर सकते हैं। ऐसे ही ईश्वरीय अवतार युगपुरुष सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की अनेक लीलाएँ समय – समय पर संतों – महाप्रुषों व भक्तों ने प्रत्यक्ष रूप से देखीं गयी है।

एक समय की बात है लीला पुरुषोत्तम सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज संत मण्डली व कुछ भक्तों के साथ जंगल की सैर करने निकल पड़े... गर्मी अधिक थी। श्री गुरु महाराज जी तो तेज कदम चलते हुए आगे बढ़ते जा रहे थे। सारे संत व भक्तजन पीछे रह गए... केवल संत उद्धवदास जी स्वामी जी के पीछे – पीछे चल रहे थे। स्वामी जी अपनी मौज में चलते चले जा रहे थे। परमात्मा की मस्ती में मस्त – भक्ति का अनोखा आलम! पता नहीं वो अलौकिक मस्ती महापुरुषों को कौन सी है! इसे पहचाना नहीं जा सकता.....

वे तो अल्लाह लोक के मालिक होते हैं। उनके लिये कुछ भी असंभव नहीं होता है। कब कौन सी लीला कर दें। उनकी लीला वे ही जानें... कुछ समय चलते – चलते स्वामी जी की दृष्टि पीछे की ओर गयी तो देखा – सभी संत – महापुरुष दूर रह गये थे। केवल संत उद्धवदास जी साथ थे।

तब संत उद्धवदास जी ने श्री गुरु महाराज जी से प्रार्थना की, 'हे भगवन्! मुझे बहुत प्यास लगी है... आसपास में कोई तालाब, नदी, कुँआ नज़र नहीं आ रहे हैं... अब आगे चला भी नहीं जा रहा। कृपा करें – प्रभु! बहुत प्यास लगी है.....' अब देखो! महापुरुष यहाँ कैसी लीला करते हैं! हमारी समझ से कोसों दूर....

स्वामी जी ने उद्धवदास जी से कहा – 'ये चट्टान के ऊपर रखा पत्थर हटाओ।' संत उद्धवदास जी समझ नहीं पा रहे थे कि इतना गहन जंगल – पानी का दूर – दूर तक कोई नामो निशान नहीं। परन्तु श्री गुरु महाराज जी कह रहे हैं इस पत्थर को उठाओ। पता नहीं, इसमें क्या रहस्य छुपा हुआ है? आज्ञा शिरोधार्य कर जैसे ही पत्थर को उठाया तो स्वतः ही वहाँ से 'जलधारा'निकल पड़ी..... संत उद्धवदास जी यह अद्भुत दृश्य देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ। कुछ समझ नहीं पाये। उन्होंने पानी पीकर अपनी प्यास बुझाई। फिर स्वामी जी ने उनको आज्ञा दी कि इस पत्थर को पुनः उठाकर यथा स्थान रख दो, जैसे पहले रखा हुआ था।

कुछ समय बाद पुनः एक बार सब संत वहाँ गए तो क्या देखा – वहाँ किसी भी प्रकार का कोई जल धारा का स्त्रोत तक नहीं था... कहाँ से आया जल...? कुछ अता-पता नहीं... आज तक उस तपस्वी महापुरुष की लीला को कोई नहीं समझ पाया। ऐसी अनेक लीलायें प्रत्यक्ष रूप में संतों – महापुरुषों ने स्वामी जी की देखीं।

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

網

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

網

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

άE 纲 स त् ना म सा क्षी 卐 Š 纲 स त् ना म सा क्षी 卐 άE 纲 स त् ना म सा क्षी 卐 άE 纲

स

त्

ना

म सा

क्षी

55

άE

網

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा-34

चल पड़ी गरीब की चक्की...

एक भक्त जिसकी आर्थिक स्थिति बड़ी कमजोर थी। वह गरीब चक्की चलाकर आटा पीसता और अपना जीवन निर्वाह करता था। रोजी रोटी कमाकर परिवार का पालन पोषण किया करता था।

एक बार उसकी चक्की चलाने की मशीन खराब हो गई। वह बड़ा चिन्तित हो गया कि अब वो अपना गुजारा कैसे करेगा? उसके पास इतने पैसे भी नहीं थे कि वो अपनी चक्की मशीन बनवा सके। किसी प्रकार गुरु महाराज जी की कृपा हो तो चक्की मशीन चल पड़े – ऐसा भाव लेकर वह रात में युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की दरबार 'श्री अमरापुर स्थान' पर पहुँचा। दरवाजा बंद हो चुका था। उसके मन में गुरुदेव के प्रति सच्ची करुण पुकार थी और वह सच्चे हृदय से मुख्य द्वार पर तेज स्वर में श्री गुरु महाराज जी को पुकारने लगा – 'ओ स्वामी टेऊँराम बाबा– २..! मुझ गरीब की पुकार सुन..... मेरी चक्की चला दे..... मै बहुत गरीब हूँ..... चक्की मशीन बनवाने में असमर्थ हूँ। बिना चक्की के जीवन निर्वाह कैसे होगा? परिवार कैसे पालूँगा? आप तो दयालु हैं – सभी पर दया करते हैं। मुझ गरीब पर भी कृपा करो। मैं तो आपका नाम सुनकर ही आया हूँ। आप ने सभी के मनोरथ सिद्ध किये हैं..... जो भी जैसी पुकार लेकर आया है, वह पूरी हुई है..... आपके द्वार से आज तक कभी कोई खाली नहीं गया है। 'दर तो मैंने बहुत देखे– पर मगर – तेरे दर की महिमा अपरम्पार है...

वह भक्त ऐसी कारुणिक पुकार दरवाजे पर कर रहा था। अंत में जाते – जाते स्वामी जी को अपना समझ कर अपनत्व भरे स्वर में कहता गया, कि – 'ओ बाबा – साईं टेऊँराम! अगर कल मेरी चक्की न चली न, तो तेरी दरबार भी नहीं चलेगी.....' ऐसी विश्वास भरी पुकार करके वह भक्त अपने घर चला गया.....

अंर्तयामी सर्वशक्तियों के मालिक युगपुरुष सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने उस अनोखे भक्त की सुन ली पुकार... प्रातःकाल दुकान खोलकर उसने सच्चे हृदय भाव से स्वामी जी को पुकार की और 'सत्नाम साक्षी–2' महामंत्र बोल कर अपनी चक्की मशीन चलाई तो क्या देखा, 'अरे। चक्की चालू हो गई.....' वह बड़ा गद्गद् हो गया। श्री गुरु महाराज जी की ऐसी आश्चर्य जनक शक्ति देखकर वह खुशी से नाचने लगा। उस गरीब की खुशी का ठिकाना ना रहा। मन ही मन स्वामी को कृतज्ञ भाव से बार – बार प्रणाम करने लगा। धन्य धन्य हैं मेरे बाबा टेऊँराम जी महाराज! कैसे चली चक्की – किसने चलायी – उसकी लीला वो ही जाने! अब तो उसका विश्वास और भी अधिक दृढ़ हो गया। वह अब नित्य प्रति श्री गुरु महाराज जी की दरबार 'श्री अमरापुर स्थान' के दर्शन – सेवा करने जाया करता था।

ऐसी होती है – महापुरुषों की अनन्य कृपा। भक्त सच्चे हृदय व करूणा भाव से पुकार करे – तो सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज उनकी पुकार अवश्य सुनते हैं और उनकी मनोकामनाएँ पूर्ण करते हैं।

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

麲

स

त् ना

म

सा

क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स त्

ना

म

सा

क्षी

🕉 श्री सत्नाम साक्षी \rfloor 🕉 श्री सत्नाम साक्षी 🔄 🕉 श्री सत्नाम साक्षी 🗲 🕉 श्री सत्नाम साक्षी 🔄 🅉 श्री सत्नाम साक्षी 🔄

άE 纲 स

त् ना म

सा क्षी 卐 Š 纲

स त् ना म सा क्षी 卐

Š 纲 स त् ना म सा क्षी

55 Š 纲 स त् ना म

सा क्षी **5**5 άE 纲 स त् ना म सा क्षी

卐

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरू स्वामी टेऊँराम गुण गाथा–35

अध्यात्म के साथ स्वावलम्बन की शिक्षा

एक समय की बात है। चैत्र मेले के दिन थे, युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की आज्ञा से सभी संत मेले में आने वाले यात्रियों के लिये घास फूस की कुटियाएँ बनाने के लिये छप्पर बना रहे थे, बीच में एक संत ने कहा- छप्पर बनाने से हाथ कट जाते हैं, क्यों न ये छप्पर मज़दूरों से बनवायें जायें। छप्परों के लिये हम सब थोडे-थोडे रुपये आपस में निकाल लें. ये बातें अभी कर ही रहे थे, तो गुरु महाराज जी (आचार्य श्री सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज) वहाँ पर आ गये।

अचानक स्वामी जी को वहाँ आया देखकर सब विस्मित होकर कर खड़े हो गये। गुरु महाराज जी ने उनसे पूछा कि सेवा कर रहे हो या बातें कर रहे हो? गुरु महाराज जी के वचन सुनकर सब संत घबराकर अपने कटे हुए हाथ दिखाकर कहने लगे कि हे भगवन्! छप्पर बनाने से हमारे हाथ कट जाते हैं, इसलिये ये छप्पर मजदूरों से बनवायें जायें, मज़दूरी के पैसे हम दे देंगे और स्वामी जी से मज़दूरों से छप्पर बनवाने के लिये प्रार्थना करेंगे, हम सब आपस में यह विचार कर रहे थे कि आप आ गये... संतों की बात सुनकर गुरु महाराज जी ने उनको थोड़ा डाँटकर कहा- तुम सेवा करने आये हो या सेवा करवाने (लेने) आये हो ? सेवा करते यदि आपके हाथ कट फट जाते हैं तो फिर यहाँ आश्रम क्यों आये हो? जाओ, सभी अपने-अपने घर जाकर बैठ जाओ। मज़दूरों के लिये तुम पैसे दोगे, क्या हमारे पास पैसे नहीं हैं? सेवा करने आये हो या सेठ बनने..? उठो, जाओ अपने-अपने घर... हमें आपकी सेवा की आवश्यकता नहीं है। गुरु महाराज जी के सामने किसी को भी बोलने का साहस नहीं हुआ। स्वामी जी ऊपर से बहुत सख़्त (कठोर) थे पर साथ-साथ में भीतर से दया के सागर और कोमल हृदय भी थे। शीघ्र प्रसन्न हो जाते थे... उनके डांट डपट में भी एक अनोखा प्रेम व करुणा थी। कहते हैं सत्पुरुषों के क्रोध में भी करुणा होती है। उनका गुस्सा हमारे कल्याण के लिए होता है। सब संतों को सेवा करने का आदेश देकर गुरु महाराज जी दूसरी ओर चले गये... रात को सब संतों को बिठाकर प्यार से समझाते हुए गुरू महाराज जी ने कहा- तुम लोग हमें बहुत प्यारे हो ... हमें तुम्हारे पैसों की आवश्यकता नहीं है... पर हमारे पास आये हो तो कुछ प्राप्त कर जाओ, कुछ सीखकर जाओ, अपने हाथों से सेवा करोगे तो तुम्हारा तन मन पवित्र हो जायेगा। भक्तिमें भी आनन्द आयेगा। इतना कहकर गुरु महाराज जी ने उन संतों के मस्तक एवं छिले हुए हाथों पर अपना वरद् हस्त रखा, जिस से उनकी समस्त पीड़ा दूर हो गई...

इसी प्रकार श्री गुरुदेव भगवान अध्यात्म के साथ-साथ सेवा द्वारा स्वावलम्बी बनने की शिक्षा संतों-प्रेमियों- सेवाधारियों को देते रहते थे। जिससे उनके मानव जीवन में उच्चता का पवित्र निखार हो सके! स्वावलम्बी व आदर्श जीवन जी सके!

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

åE 纲 स

त् ना म

सा क्षी 卐

30 纲 स त्

ना म सा क्षी 卐 Š 纲 स

त् ना म सा क्षी 卐 άE 纲 स त्

ना म सा क्षी **5**5 άE 纲 स त् ना म सा क्षी

卐

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरू स्वामी टेऊँराम गुण गाथा– 36

जंगल में हिंसक जीवों के बीच पर्ण कुटिया में साधना करना

जपे जपावे नाम हरि, हर हालत हर वेल। कह टेऊँ तिस पुरुष से, होवे हरि का मेल।।

ब्रह्म में एकाकार हो चुके संत सत्पुरुष सदा ही परमात्मा के ध्यान में लीन रहते हैं, संसार दुनिया की बातों से दूर... वे सब में समत्व दृष्टि भाव रखकर, अपनी दिव्यता से सब जीवों के मन में भी प्रेमभाव जाग्रत करते रहते हैं।

यह बात तब की है जब युगपुरुष सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज युवावस्था में थे.... सद्गुरु महाराज जी अपनी जन्म भूमि खण्डू गाँव में अपने घर परिवार के साथ रहते थे। एक दिन श्री गुरु महाराज जी सिंध् नदी के किनारे भ्रमण करते हुए एक बियाबान लेकिन मनोहारी जंगल में पहुँचे , जहाँ पर भयानक हिंसक जीव – जन्तु रहते थे. यह स्थान श्री गुरु महाराज जी को ऐसा भाया कि एकांतवास के लिए उन्होंने पर्ण की कृटिया बनाकर वहीं पर निर्विकल्प समाधि लगा ली. इधर खण्डू गाँव में माता कृष्णा व परिवारजनों ने शाम होने के बाद श्री गुरु महाराज जी को बहुत ढूँढा, लेकिन आप कहीं पर नहीं मिले.... इस प्रकार क्छ दिन ग्जर गये....

लगभग एक महीने के पश्चात परमात्मा की इच्छा से ऐसी विचित्र घटना घटी कि खण्डू गाँव का भाई मेंघराज दरिया किनारे किनारे अपने घर को लौट रहा था, संध्या का समय हो चुका था. जंगली जीवों से भय भी लगने लगा था कि एकाएक उस मार्ग में एक क्टिया दिखाई पड़ी. बियाबन क्षेत्र में क्टिया!! विस्मय में भरकर मेंघराज उत्स्कतावश उस झोपड़ी के समीप गया तो उसे एक दिव्यतम आभा का एहसास उसे होने लगा और उसके हृदय में विचार आया कि हो न हो यहाँ कोई महान आत्मा निवास कर रही है, इसी विचार धारा के चलते अंदर गया तो क्या देखता है कि ब्रह्मऋषि विराज रहे हैं.... पहचाना तो ये क्या..... श्री गुरु महाराज जी.....

ध्यान योग में समाधिस्थ बैठे हुए थे उनके चारों ओर सूर्यसम तेजस्वी प्रकाश फैल रहा था. ऐसा अलौकिक सुंदरतम दृश्य देखकर मन में पूर्ण श्रद्धा भक्ति रखकर, आँखो में अश्र्धार बहाते हुए सद्गुरु महाराज जी के श्रीचरणों में गिर पड़ा और विनीत होकर बोला कि भगवन्! हमारा आज पूर्व जन्म का कोई भाग्योदय हुआ है जो अचानक ही आपका पावन दर्शन इस नदी के किनारे हुआ..... कई दिनों से मन में दर्शन की प्यास थी.... समाचारों का आदान प्रदान कर मंद मंद मुस्कराते हुए स्वामी जी ने कहा– आज रात यही विश्राम करो भजन भी करो..... कोई चिंता नहीं करना

प्रातःकाल श्री गुरु महाराज जी मेंघराज से पूछने लगे.... रात को आराम हुआ.... भयभीत तो नहीं हुए? मेंघराज कहने लगा, भगवान्! लगभग 10-11 बजे तक यह दास निश्चिन्त होकर भजन करता रहा... किन्त् उसके बाद भयानक जानवरों की आवाजें सुनाई दीं... दरवाजे पर क्या देखा कि हिंसक जीव जो परस्पर शत्रु भाव रखते हैं, आपस में प्रेमपूर्वक खेल रहे थे.... पहले तो काफी भय हुआ किन्तु आपकी ओर देखने से भयता निवृत्त हो गयी, आपके होते किस प्रकार का भय?और आराम से भजन स्मरन करने लगा....

ब्रह्माकार में स्थित ब्रह्मार्घि महायोगी युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की ऐसी आश्चर्यजनक लीला देखकर मेंघराज गद्गद् कण्ठ से कृतार्थ होकर कहने लगा– धन्य मेरा जीवन! जो आप जैसे महान ग्रुदेव का पावन सानिध्य मिला.... आपके अद्भृत आभा मण्डल के प्रभाव से हिंसक जीव जो परस्पर एक दूसरे को खाने के लिए लालायित रहते हैं, वे भी यहाँ प्रेमपूर्वक किलोंलें कर रहे थे.... ये थी भिक्त की शक्ति! इसी प्रकार गहन जंगलों में श्री गुरुदेव भगवान एकांत में तप-साधना किया करते थे।

शत्-शत् नमन – धन-धन सद्ग्रु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

纲

स

त्

ना

म सा

क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

άE 纲 स

त् ना म

सा क्षी 卐

Š 纲 स त् ना म

सा क्षी 55 άE 網 स

त् ना म सा क्षी 卐 Š

網 स त् ना म सा क्षी **5**5

άE 纲 स त् ना म सा

क्षी

卐

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु खामी टेऊँराम गुण गाथा–37

साईं दिना की अफीम आदत छुड़वाना

संत – महात्माओं की कृपा से अनेक जीवों का जीवन सँवर जाता है। जीवन जीने की कला भी संत – महापुरुष ही सिखाते हैं। संतों के उपदेश व उनका सानिध्य मन्ष्य का जीवन परिवर्तित कर देते है। कैसा भी मूढ् – अज्ञानी, पापी, व्यसनी क्यों ना हो – जो संत शरण ले लेता है.... उसका जीवन उज्ज्वल हो जाता है !

साईंदिना नाम का एक सरकारी कर्मचारी था। वह सरकारी जंगल की रखवाली करता था। किन्त् कुछ ब्री आदतों (नशीली वस्तुओं) का आदी हो गया था। इन खराब आदतों के कारण घर – परिवार वाले व स्वयं भी बहुत परेशान रहता था। इन दुर्व्यसनों पर सरकारी वेतन भी पूरा खर्च कर देता था पर क्या करता, कहावत सत्य ही है - 'आदत बुरी बला है।'बुरी आदत से कैसे बचे ? अफीम का सेवन छोड़ता तो बीमार पड़ जाता... अपनी इस द्र्दशा से मन में बड़ा द्ःखी होता था। इस कारण उसका पूरा परिवार भी बहुत परेशान था।

एक समय करुणा सागर युगपुरुष सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज उस शहर में पहुँचे, जहाँ वह रहता था... उसी शहर में श्री गुरु महाराज जी का सत्संग – प्रवचन हुआ। वहाँ के सभी नर – नारी स्वामी जी के सत्संग से प्रभावित हुए। सारी संगत मार्मिक सत्संग से स्वामी जी की ओजस्वी अमृतवाणी में पापकर्म से बचने व पुण्य कर्म, शुभ कर्मरूपी प्रसंग सुनकर भाव विभोर हो गई। इससे वहाँ भक्तजनों में श्री गुरु महाराज जी के प्रति अगाध श्रद्धा जागृत हो गई। उसी सत्संग सरोवर में एक दिन 'साईंदिना' भी बैठा था।

सत्संग समाप्ति के बाद साईंदिना रुदन भाव से स्वामी जी के पास जाकर प्रार्थना करने लगा– 'हे फकीर साईं! मेरे में अनेक ब्री आदतें हैं। मुझे अफीम खाने की लत लग गयी है और मैं इससे छ्टकारा भी पाना चाहता हूँ। हे साईं! आप कृपा करो... जिससे मेरी यह ब्री आदत छूट जाए... मैं अपना जीवन अच्छी तरह व्यतीत करना चाहता हुँ... मेरा यह जीवन व्यर्थ जा रहा है। हे प्रभृ! दया करके मेरा जीवन सँवार दो.....'

उसके दिल से निकली प्कार स्वामी जी ने स्न ली... महाप्रुषों का जीवन दूसरों के उद्धार के लिए ही होता है। उस समय स्वामी जी भजन की मस्ती में मस्त बैठे थे। तब स्वामी जी ने 'खबंड' (जंगली पौधा) के पत्ते मुट्टी भर कर दे दिए और कहा – 'जिस समय अफीम खाने की इच्छा हो तो उस समय ये दो–तीन पत्ते खा लेना... प्रभु करेगा, आप बीमार नहीं पड़ोगे....' बस! फिर तो महाप्रुषों का आशीर्वाद रूपी प्रसाद मिल गया और ग्रु कृपा से साईंदिना का सब नशा – पता धीरे – धीरे छूट गया। वह एकदम स्वस्थ हो गया। तब वह म्सलमान स्वामी जी से 'नाम दान ' की दीक्षा लेकर शिष्य बन गया और साथ ही आश्रम की खूब तन – मन से सेवा करने लगा।

संत – महाप्रुषों की हर बात में कोई न कोई राज होता है। वे सर्व शक्ति सम्पन्न होते हैं। कब किसके ऊपर महापुरुषों का आशीर्वाद बरस जाए... साधारण व्यक्ति की समझ से परे है। एक जंगली पौधे से अफीम जैसी बुरी आदत को छुड़ाने का सामर्थ्य तो संत – महापुरुषों के पास ही हो सकता है। उनकी अद्भुत लीला को समझ पाना बड़ा मुश्किल है।

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी 55

άE

纲

स त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

麲

स

त्

ना म

सा

क्षी

55

άE

纲

स त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

ॐ श्री

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

ॐ 網

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

纲

स

त्

ना

म

सा क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा–38

निष्ठा व विश्वास से प्राप्त हुए – पार्वती को दो पुत्र

एक समय की बात है. सिन्ध प्रदेश में आवतराम नामक का एक प्रेमी रहता था। जो कि युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का शिष्य था। उस जमाने में यह एक प्रतिष्ठित परिवार था। आवतराम को विवाह हुए बहुत वर्ष बीत चुके लेकिन उसे संतान सुख प्राप्त नहीं हुआ। अनेक उपाय किये, डॉक्टर, वैद्य- हकीम सबसे इलाज करवाया पर कोई लाभ नहीं हुआ। सब सुख प्राप्त थे लेकिन संतान सुख न होने के कारण उसका पूरा परिवार इसके लिए दुःखी रहता था। आवतराम की धर्मपित्न का नाम पार्वती था। एक दिन वह अपनी धर्मपित्न से कहता है- पारी! हमें विवाह किए बहुत समय हो गया है अभी तक कोई संतान नहीं हुई है, हमने सभी उपाय कर लिये पर सब व्यर्थ हुए हैं। हमारी इतनी धन-दौलत, सम्पित का वारिस कौन होगा? यह कहाँ जाएगी? संतान नहीं हुई तो हमारा वंश भी समाप्त हो जाएगा। अतः मेरी इच्छा है कि अगर तुम्हारी सहमित हो तो मैं दूसरी शादी कर लूँ। इस हेतु आवतराम के पिता ने भी पार्वती को कहा- बेटी, तुम इसके लिए आवत को इजाजत दे दो। इतना सुनकर पार्वती रोते हुए अपने पित से कहती है कि मेरे होते हुए घर में आपकी दूसरी पत्नी आये, यह मुझसे कैसे सहन होगा? घर में शांति रखना चाहते हो तो दूसरी शादी मत करना। किन्तु आवतराम अपनी बात पर अड़ा रहा।

पार्वती का अपने गुरुदेव श्री सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज में पक्का विश्वास व अटूट श्रद्धा थी। उसने अपने पित से कहा- अच्छा, मेरी एक बात मानो, मुझे एक बार स्वामी जी के पास ले चलो। फिर आपको जो अच्छा लगे, वैसा करना...

अब आवतराम अपनी धर्मपित को साथ लेकर प्रातःकाल सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के पास पहुँचे। पार्वती गुरुदेव भगवान के श्रीचरणों में बैठकर ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी... महाराजश्री उस समय समाधिस्थ थे। आवाज सुनकर आँखें खोली और पूछा, माता! आप कौन हो? तब पार्वती ने ज़वाब दिया- स्वामी जी! भाग्यहीन आपकी दासी पारी हूँ...

जब पार्वती ने ऐसा कहा तो ये बात महाराजश्री के दिल को चुभ गई। एकदम गंभीर हो गये। तुम ऐसा क्यों कह रही हो?

पार्वती ने कहा- स्वामी जी! क्या बताऊँ.... आपका जो पुत्र आवतराम है न, वह मेरे होते हुए दूसरी पत्नी घर में ला रहा है। मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप मुझे पुत्र प्रदान

🕉 श्री सत्नाम साक्षी \rfloor 🕉 श्री सत्नाम साक्षी 🖫 🕉 श्री सत्नाम साक्षी 🖫 ॐ श्री सत्नाम साक्षी 🖫 ॐ श्री सत्नाम साक्षी 🖼

άE 纲 स त् ना म सा क्षी 卐 άE 纲 स त् ना म सा क्षी 卐 Š 纲 स त् ना म सा क्षी **5**5 Š 纲 स त् ना म सा क्षी **5**5 άE 纲 स त् ना म सा

क्षी

卐

कीजिए। यदि पुत्र नहीं देते हैं तो मेरी जीवन लीला समाप्त कर दें। मेरे मरने के बाद जैसा इन्हें अच्छा लगे वैसा करें... परन्तु मेरे होते हुए दूसरी पत्नी घर में न लाये। ये मेरे से सहन नहीं होगा। इतना कहकर पार्वती श्री गुरुदेव भगवान के श्रीचरणों में गिरकर ज़ोर-ज़ोर से रुंदन करने लगी... संत-फकीर महापुरुषों के यहाँ से कोई निराश लौटे यह कैसे संभव हो सकता है?

इतना सुनकर महाराजश्री मौन और गंभीर हो गये। कुटिया के बाहर आये। उनके आभायुक्त-तेजोमय मुखमण्डल को देखकर सभी संत विस्मय में पड़ गये। उस समय महाराज श्री के साथ अनेक संत-महात्मा भी थे। स्वामी जी इन संतों का बड़ा मान रखते थे। संतों से कहा- भाई, ये पुत्री फरियाद लेकर आयी है औलाद के लिए... आप सभी संत प्रातःकालीन पल्लव -प्रार्थना करो जिससे इसे संतान की प्राप्ति हो... तब संत-महात्मा सोचने लगे- स्वयं 'महाराजश्री' सर्वसिद्ध समर्थ हैं, ईश्वरीय अवतार हैं न जाने कितनों की मनोकामनाएँ पूर्ण कर दी हैं और आज हमारा मान बढ़ाने के लिए हमें 'पल्लव' पहनने के लिए कह रहे हैं। तब एक संत ने कहा- हम सब 'पल्लव' = प्रार्थना तो कर देते हैं बाकी आपकी लीला आप जानें। सन्तान देना न देना तो आपका कार्य है। आप स्वयं मालिक हैं। इतना सुनकर 'महाराज श्री' मंद-मंद मुस्करा दिये। स्वामी जी ने कहा- आप सभी संत-महात्मा पल्लव-प्रार्थना करो, बाकी परमात्मा सब भली करेंगे। महापुरुषों की प्रार्थना सार्थक हुई. समय पाकर उस माता पार्वती को दो संतानों की प्राप्ति हुई। ऐसा होना चाहिए, गुरु के प्रति दृढ़ विश्वास! निष्ठा-विश्वास के साथ प्रातःकालीन श्री गुरुदेव को की गई प्रार्थना कभी निष्फल नहीं होती. जो कार्य भगवान भी करने में असमर्थ होते हैं वह कार्य संत-सद्गुरु अपनी तपस्या भक्ति-साधना के प्रभाव से फलीभूत कर देते हैं। भगवान भी उन संत-महात्माओं का मान रखते हैं और कार्य-मनोरथ पूर्ण कर देते हैं।

ऐसे थे भक्त वत्सल, सिद्ध समर्थ, परम हितकारी सद्गुरु श्री स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

शत्-शत् नमन - धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

άE

纲

स त्

ना

म

सा क्षी

卐

30

網

स

त्

ना

म

सा

क्षी

ዜ ፌ

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

άE 纲 स

त् ना

म सा क्षी

卐 άE 纲 स

त् ना म सा क्षी 卐

Š 纲 स त् ना

म सा क्षी **5**5 άE 纲

स त् ना म सा क्षी

55 άE 纲 स त्

ना म सा क्षी 卐

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा– 39

ऐसो को उदार जग मांहीं....

संत – महात्मा का अवतार तो जीवों की रक्षार्थ हेत् होता है। संत – महात्मा अपने उदार चित्त से असंख्य जीवों का कल्याण करते हैं। इसी प्रकार युगपुरुष सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज भी बहुत उदार चित्त वाले थे। जो भी उनकी शरण में आता, उनका जीवन ही सँवर जाता था।

एक समय भगवद् स्वरूप सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज टण्डेआदम सिन्ध के आश्रम में विराजमान थे। स्वामी जी अधिक से अधिक भगवद् भक्ति में निमग्न और ध्यानस्थ होकर ब्रह्मचिंतन में स्थित रहते थे। अनेक सेवादारी आश्रम में सेवारत रहते थे।

उस समय एक बुजुर्ग माता श्री गुरु महाराज जी के पास आई और हाथ जोड़कर कहने लगी 'स्वामी जी! मुझे आज अपने वस्त्र धोने की सेवा दें...' स्वामी जी उस माता से कहने लगे -'आप आश्रम की सेवा करो... आश्रम की सेवा यानी हमारी सेवा है। किन्त् बार – बार विनती करने पर स्वामी जी ने अपने वस्त्र उस माता को धोने के लिए दे दिये।

स्वामी जी के वस्त्र धुलाई की सेवा प्राप्त करके माता बड़ी प्रेम विह्वल हो गई... बड़ी प्रसन्नचित्त होने लगी। गद्गद् होने लगी। प्रेमानुरागी होकर माता ने बिना कुछ सोचे – समझे वस्त्रों को देखा भी नहीं... बस! खुशी के आँसू छलकाते असीम प्रसन्नता से प्रेम पूर्वक वस्त्रों को धो रही थी। किन्त् थोड़ी देर बाद माता जी का हाथ वस्त्र (चोले) के जेब की ओर लगा... देखा तो उस वस्त्र में 10 रुपये का नोट पड़ा हुआ था। माता जी ने नोट निकाला तो वह पूरा खराब हो चुका था (उस समय 10 रुपये की कीमत बहुत अधिक हुआ करती थी)।' यह देखेंकर उसे बहुत पछतावा होने लगा। अरे! मुझसे ये क्या हो गया? बहुत बड़ी भूल हो गयी – बिना देखे ही जल्दी जल्दी में मैने वस्त्र धो दिये..... बड़ी दु:खी होने लगी..... अपने आपको कोसने लगी..... सोचने लगी, स्वामी जी ने पहली बार मुझे अपने वस्त्र दिये और ये मैंने क्या कर दिया। ऐसा सोच सोच कर वह बिचारी बहुत रोने लगी।

किन्त् महाप्रुषों के लिये सांसारिक वस्तुओं व पैसों का क्या मूल्य! ये सब तो तुच्छ वस्तुएँ हैं। वे तो सर्व शक्तिमान थे। माता जी का तो अनन्य प्रेम था।प्रेम में पैंसों का मुल्य नहीं होता।

अब माता डरते-डरते श्री गुरु महाराज जी के पास आई और कहने लगी, स्वामी जी! मुझे क्षमा कर दो। मैंने बिना देखे, सोचे – समझे वस्त्र धो लिये। उसमें आपके चोले की जेब में रखा देस का नोट भी खराब हो गया। मुझसे बहुत बड़ी भूल हो गई है। मुझे माफ कर दो.....

तब स्वामी जी बड़े ही स्नेहसिक्त प्रेम भाव से कहा – अरे! माता! बस, इतनी सी बात – मात्र 10 रुपये के लिये इतनी चिन्ता करती हो... संसार में धन - पदार्थों का महत्व नहीं, प्रेम का महत्व है। ये क्षणिक वस्तु है। ये तो आती जाती रहती है। आपका स्नेह व प्रेम देखकर हम बहुत प्रसन्न हैं। तुम किसी प्रकार की चिंता मत करो। सदैव प्रसन्नचित्त रहो।' ऐसे में मुख से निकल पड़ता है - 'ऐसो को उदार जग मांहिं.....' माता गद्-गद् हो गई।

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐 άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

άE 纲

स त् ना म

सा क्षी 卐

Š 纲 स त्

ना म सा क्षी 卐 Š

纲 स त् ना म सा क्षी **5**5

Š 纲 स त् ना म सा क्षी **5**5 άE 纲 स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा–40

गुल सतार को मिला नवजीवन दान...

गुल सतार शरण पड़ा - खाट चढ़ा बीमार। सत्गुरु नव जीवन दिया - गुलशन नाम पुकार।।

एक समय की बात है सिंध में प्रातःकाल आचर नामक मुस्लिम (आचाण बलोची) अपने पुत्र गुलसतार को खाट पर लिटाकर युगपुरुष सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के पास श्री अमरापुर दरबार ले आया और कहने लगा – 'हे फ़क़ीर साईं! मुझ गरीब पर रहम कीजिए। मेरा बेटा मुझे बख़ा (जीवनदान) दीजिए... सभी डॉक्टर, वैद्य – हकीमों ने जवाब दे दिया है। वे कहते हैं कि आपके बेटे के पास अब कुछ ही दिन का समय शेष है। अतः हे भगवन्! हमारी रक्षा करो। हम आपकी चरण – शरण में आये हैं..... मेरे प्त्र को जीवनदान दो.....' पति – पत्नि दोनों श्री गुरु महाराज जी के श्री चरणों में रोते बिलखते बार – बार कातर स्वर में प्रार्थना करने लगे।

श्री गुरु महाराज जी भजन – कीर्तन की मौज में थे। स्वामी जी ने कहा– 'आप घबराओ मत... मालिक (परमात्मा) सब भली करेंगे... चिंता मत करो... आप लोग भण्डारे का भोजन- प्रसाद खाओ।' किन्तु उस दम्पति का रो - रोकर बुरा हाल हो रहा था। उन्होंने कहा- 'हे फकीर साईं। हमारे लिए तो आप ही मालिक (खुदा) हो। आपने न जाने कितनों के कष्ट-दु:ख दूर किये है। हमने आपकी बहुत लीलाएँ सुनी व देखी हैं। आप ही हमारे पुत्र को नया जीवनदान दे सकते हो। आचाण बलोच ने स्वामी जी से कहा- 'मेरा पुत्र आपके सामने ही खाट पर सोया हुआ है।' तब स्वामी जी कुछ देर के लिये ध्यान मग्न हो गए। फिर उन्होंने पूछा, क्या नाम है इसका? बलोच दम्पति ने कहा- 'गुल सतार' उसी समय स्वामी जी ने उस बालक गुल सतार पर अपनी कृपा दृष्टि बरसायी..... उसके मस्तक पर वृहद् हस्त रखकर कहा- 'बेटा गुल सतार ! बोलो -सत्नाम साक्षी.... सत्नाम साक्षी'.... स्वामी जी के तो कहने की देरी थी... बस फिर क्या था। बालक उठ खड़ा हुआ और हाथ जोड़कर श्री गुरु महाराज जी को 'सत्नाम साक्षी' कहने लगा। स्वामी जी ने जल अभिमंत्रित कर गुल सतार को पिलाया और जल पीते ही बालक एकदम से स्वस्थ व निरोगी हो गया और शीघ्र उठकर स्वामी जी के श्री चरणों में प्रणाम किया। तब नवजीवन प्राप्त गुल सतार को स्वामी जी ने 'गुल्नशन' प्कारकर उसका नया नामकरण किया। स्वामी जी के आशीर्वाद से उसे जीवन दान मिल गया।

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

Š

麲

स

त्

ना

म सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE 纲

स

त्

ना

म

सा

άE 纲 स

त् ना म

सा क्षी 卐

纲 स त् ना म सा क्षी 卐

纲 स त् ना म सा क्षी 卐

纲 स त् ना म सा क्षी **5**5 άE

Š

άE

άE

纲 स त् ना म

सा

क्षी

卐

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा- 41 कहाँ से आते थे–आसन के नीचे से पैसे–

उसकी लीला वो ही जाने

एक समय सिद्ध समर्थ युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज टण्डाआदम (सिंध) में स्थित श्री अमरापुर दरबार (डिब्) पर विराजमान थे। उस समय दरबार के भण्डारी संत प्रेमदास थे। वे साँयकाल रोज सीधा-सामान लेने शहर जाते थे। उस सामान के लिये वे पैसे स्वामी जी से लेकर जाते थे। स्वामी जी तो थे फक्कड बाबा.... उन्हें पैसों से क्या काम.... वे तो जिस आसन पर विराजमान होते थे उसी आसन को ऊपर करके संत प्रेमदास से कहते-जितने पैसे चाहिये, उठा लो.... प्रतिदिन का ऐसा ही नियम सा बन गया था। कौन समझे महापुरुषों की अद्भुत रहस्यमयी लीलाओं को.... हम जिन्हें साधारण मनुष्य समझते हैं वे तो ईश्वरीय अवतार होते हैं। न जाने कब, कौन सी लीला रच दें, ये हम नहीं समझ सकते। बड़े विलक्षण एवं दुर्लभ योगी होते हैं ये संत-महापुरुष!

एक समय क्या हुआ कि संत प्रेमदास नित्यनियम से शहर जाने के लिये युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के स्थान पर आये.... देखा कि स्वामी जी अपने आसन पर नहीं हैं। शायद किसी कार्यवश कहीं गये होंगे। शाम का समय था, शहर जाने के लिये देर भी हो रही थी। ऐसा विचार कर ही रहे थे कि इतने में कुछ साधु-संत भी वहाँ पहुँच गये। संतों ने प्रेमदास से पूछा कि आप यहीं खड़े हो, बाजार नहीं गये क्या? तब संत प्रेमदास जी ने कहा- बाजार तो जा रहा हूँ। लेकिन स्वामी जी से आज्ञा लेनी थी और कुछ पैसे भी लेने थे इसलिए श्री गुरु महाराज जी की प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

काफी समय तक इंतजार के बाद संतों ने पूछा- आपको स्वामी जी पैसे कहाँ से देते हैं तो प्रेमदास जी ने कहा- स्वामी जी तो जिस आसन पर विराजमान होते हैं उसी आसन के नीचे से पैसे निकाल कर देते हैं। अगर ऐसी बात है तो चलो हम आपको वहाँ से पैसे निकाल कर दे देते हैं..... देरी होने के कारण हम स्वामी जी से कह देंगे और बता भी देंगे.... देखिये यहाँ अब कैसी लीला होती है जिसे समझ पाना बड़ा मुश्किल....

अब सारे संत-महात्मा स्वामी जी की कूटिया में आये। जहाँ आसन था वहाँ से चादर को ऊपर उठाया तो कुछ नहीं मिला, पूरा बिस्तर उठाया फिर भी कुछ नहीं मिला, चटाई उठाई लेकिन एक भी पैसा नहीं मिला..... सब एक-दूसरे को प्रश्नवाचक निगाहों से देखने लगे..... परस्पर चर्चा करने लगे कि यहाँ तो कुछ भी नहीं है.... तो फिर स्वामी जी पैसे कहाँ से देते हैं? आखिर जैसे पहले आसन बिछा हुआ था वैसे ही पुनः आसन बिछा दिया गया। इतने में सर्वशक्तियों के मालिक स्वामी जी भी आ गये। सभी नतु मस्तक हुए। सारा वृतान्त सुनकर स्वामी जी मन्द-मन्द मुस्कराने लगे। स्वामी जी ने कहा- चलो भाई हमारे साथ! आपको माँगने नहीं आता। स्वामी जी अपने आसन पर आये और चादर ऊपर करके संत प्रेमदास से कहा- लो जितने पैसे-रुपये चाहिये... यहाँ से उठा लो और बाजार से शीघ्र सीधा-सामग्री ले आओ.... इससे पूर्व सभी संतों ने देखा था चादर के नीचे कुछ नहीं था। अब कहाँ से आ गये पैसे.... यह अचरजमयी लीला देखकर सभी अचिम्भत रह गये.... कहने लगे- हे भगवन्! यह कैसी लीला! आपकी लीला को समझ पाना बड़ा मुश्किल एवं असंभव!

शतू-शतू नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

網

स

त्

ना

म

सा

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

ॐ श्री

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

卐

Š

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

ક્ક ૐ

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त् ना

म

सा

क्षी

卐

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा– 42

संत उधवदास के पिताजी हुए पूर्णतः स्वस्थ

एक समय युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज मण्डली सहित पहुँचे चक शहर! उसी संत मण्डली में महाराजश्री के साथ संत उधवदास जी भी थे। वे सदैव स्वामी जी के सत्संग में हारमोनियम बजाने की सेवा िकया करते थे। स्वामी जी को उनका हारमोनियम बजाना बहुत अच्छा लगता था! वे भी बड़े ही श्रद्धाभाव के साथ सेवा में तत्पर रहते थे। एक दिन भगवद् की ऐसी लीला हुई कि संत उधवदास जी के पिताश्री की तिबयत खराब हो गई। उनकी सेवा के लिये अन्य कोई था नहीं... उस समय पिता की इच्छा थी कि उधव कुछ दिन यहाँ रुककर मेरी सेवा करे। जब पिता ने उधवदास को रुकने के लिए कहा– तो उन्होंने कहा– मैं स्वामी जी की आज्ञा के बिना यहाँ कैसे रुक सकता हूँ? किन्तु पिता ने ऊधवदास को रुकने के लिए बहुत जोर भरा.... आखिरकार उधवदास– स्वामी जी के पास आये और प्रार्थना कर कहने लगे कि स्वामी जी! मेरे बाबा (पिताजी) अत्यंत अस्वस्थ हैं और मुझे कुछ दिन रुकने के लिये कह रहे हैं। यदि आपकी आज्ञा हो तो मैं यहाँ कुछ दिन रुककर पिता जी की सेवा करें।

स्वामी जी को उधवदास का हारमोनियम बजाना अच्छा लगता था और उस समय दूसरा कोई अच्छा हारमोनियम बजाने वाला यात्रा के दौरान नहीं था। तब देखो– तपस्वी समर्थ महापुरुष क्या कहते हैं– आपके रुकने का कारण आपके पिताजी का ठीक होना है न! तो कोई बात नहीं.... भगवान सब ठीक करेंगे.... सो आपके पिता का स्वास्थ्य ठीक करने की जिम्मेवारी हमारी है.... अतः आप किसी भी प्रकार की कोई चिन्ता न करें। ईश्वर सब भली करेंगे।

युगपुरुष-कर्मयोगी महापुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज द्वारा कहा वाक्य सत्य सिद्ध हुआ। श्री गुरुदेव भगवान की कृपा से जितने दिन भी ज्ञान सत्संग सरिता चक में चलती रही, तब तक किसी भी प्रकार की कोई पीड़ा उनके पिताजी को नहीं हुई और धीरे-धीरे वे पूर्णत: स्वस्थ हो गये और उसी बीच वे स्वामी जी से आशीर्वाद लेने सत्संग में आने लगे। अर्थात् संत-महापुरुषों की वाणी कभी व्यर्थ नहीं होती। जो कह दिया वह अटल सत्य! वे ईश्वरीय शक्ति के अतुल्य भण्डार होते हैं। अगर हमारे विश्वास में दृढ़ता हो तो सकल काम सिद्ध और पूरे होते हैं। अतः हमें भी दृढ़ विश्वास रखकर श्री गुरुदेव भगवान की शरण में जाना चाहिए।

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

άE

麲

स

त्

ना म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

स

त्

ना

म

सा

क्षी

🕉 श्री सत्नाम साक्षी \rfloor 🕉 श्री सत्नाम साक्षी 🖫 🕉 श्री सत्नाम साक्षी 🖫 ॐ श्री सत्नाम साक्षी 🖫 ॐ श्री सत्नाम साक्षी 🖼

άE 纲 स त्

ना म

सा क्षी 卐

Š 纲 स त् ना म सा

क्षी 卐 άE 纲 स त् ना

> म सा क्षी 卐 άE 纲 स त्

ना म सा क्षी **5**5 άE 纲 स

त् ना म

सा

क्षी

卐

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा– 43

भर गया रूपये–पैसों से घट....

एक समय खण्डू में रहने वाले किसी विधवा माता के यहाँ उनका कुलगुरु भेंटा में रुपये-पैसे की दरकार लेकर आया। उन्होंने माता से २५ रुपयों की माँग की। इस पर माता ने बोला- मैं स्वयं दु:खी और गरीब हूँ, मेरे पास इतने पैसे कहाँ हैं, जो मैं आपको दे सकूँ। कुलगुरु ने गरीबनिवाज समर्थ सर्व शक्ति मानू युगपुरुष सद्गुरु श्री स्वामी टेऊँराम महाराज जी का बहुत नाम यश-कीर्ति सुन रखी थी कि जो भी उनके द्वारे जाता है वह कभी खाली नहीं लौटता.... तब कुलगुरु ने माता से कहा- माता! आपके गाँव में तो सिद्ध समर्थ सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज जैसे महानु युगपुरुष रहते हैं। वे तो ऋद्धि-सिद्धि के मालिक- दुःखहर्ता, विध्न विनाशक प्रभू परमात्मा के स्वरूप हैं। उनके यहाँ से कोई भी खाली नहीं लौटता। वे सभी की मनोकामनाएँ पूर्ण कर देते हैं। उनके होते हुए आप गरीब हैं। आप उनके पास जाओ तो सही- सब कुछ ठीक-ठाक हो जायेगा। अन्न-धन के भण्डार भर जायेंगे। इतना सुनते ही माता कहने लगी- आप किसकी बात कर रहे हैं- टेऊँराम की.....! अरे वह तो खुद ही कंगला है! स्वयं घर-घर भिक्षा माँग कर खाता है। वह भला मुझे क्या दे सकता है। देखा......यह है नादानी! उसे यह नहीं मालूम, जिस अवतारी महापुरुष के लिये वह कह रही है, वह कितनी बड़ी शक्ति के मालिक हैं। अज्ञानी जीव इस बात को आसानी से नहीं समझते और भूल कर बैठते हैं। अब देखो यहाँ परमात्मा की कैसी लीला होती है। उसी समय अन्तर्यामी श्री गुरुदेव भ्रमण करते हुए उसी माता के घर आ पहुँचे। यह देखकर माता आश्चर्यचिकत हो गई और थोड़ी भयभीत भी हो गई पर करुणा की साक्षात् मूर्ति स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने बड़े ही स्नेह भाव से पूछा- माता! क्या आपने हमें याद किया? बोलो माता! कोई काम है? कोई हमारे लायक सेवा हो तो अवश्य ही कहो? जिसे वह माता कंगला समझ रही थी... अब उनके सामने कुछ बोल भी नहीं पा रही थी और वहाँ खड़े कुलगुरु स्वामी जी के दर्शन कर बड़े गदुगदु होकर स्वामी जी की यह अचरजमयी लीला देख रहे थे। अब यहाँ देखें- कौन सी लीला करते हैं लीला पुरुषोत्तम सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

जिसने भी याद किया स्वामी टेऊँराम को। पाया उसी ने सचे सखधाम को।। मेरे स्वामी टेऊँराम को......

स्वामी जी ने माता से कहा-माता! तुम्हारे घर में जो मटका रखा है, जाओ उस मटके का ढक्कन हटाकर देखो- खाली है या भरा हुआ... माता दौड़ी-दौड़ी उस मटके के पास गई। ढक्कन खोलते ही क्या देखती है, पूरा का पूरा मटका रुपये-पैसों से भरा हुआ है। पहले यह मटका खाली था अब कैसे भर गया? उसे सहसा विश्वास ही नहीं हो रहा था ये सब कैसे? विस्मित होकर कहने लगी- इतने सारे पैसे? अब क्या जवाब दे! समझ नहीं आ रहा था कि में क्या करूँ? क्षमायाचना के लिए भी कैसे कहूँ। मुझसे तो बहुत बड़ी भूल हो गई है। मैंने इतने बड़े महापुरुष के लिए ऐसा कहा- बार-बार पश्चाताप करने लगी। स्वामी जी! मुझे क्षमा कर दो.... मुझसे बहुत बड़ी भूल हो गई है। क्षमा व करुणा की पावन मूर्ति **सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज** ने उस माता को आशीर्वाद दिया और कहा कि कभी भी किसी संत-महापुरुष को भला-बुरा या कोई अपशब्द मत कहना। संत-महात्मा तो सारे जहाँ के मालिक होते हैं। फक्कड़ों की जिन्दगी जी कर परमात्मा को रिझाते हैं। उनके लिए सांसारिक वस्तुओं का कोई मूल्य नहीं। आज के बाद कभी भी किसी संत-महात्मा की निन्दा नहीं करना। वे सर्व शक्तियों के मालिक एवं ईश्वर के अवतार होते हैं। इतना कहकर स्वामी जी चले गये।

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

Š

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

ॐ श्री

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा– ४४

मूक प्राणियों व सनातन धर्म के रक्षक

मांस खान से मनुष्य की - होवे बुद्धि मलीन। कह टेऊँ बुद्धि भ्रष्ट से - कर्म धर्म हो खीन।।

एक समय अहिंसा के पुजारी युगपुरुष सद्गुरु श्री स्वामी टेऊँराम जी महाराज मण्डली सहित खेबरन गाँव में 'भक्त देवनराज' के आश्रम (सिद्ध स्थल) पहुँचे। जहाँ बड़ा भारी धार्मिक मेला लगता था और हजारों श्रद्धालु उस मेले में जुड़ते थे। तब वहाँ भक्तों ने स्वामी जी को बताया कि यहाँ आश्रम पर समय-समय पर बकरों की बिल चढ़ाई जाती है जिससे अनेक निर्दोष पशु मारे जाते हैं। उन मूक बिधर पशुओं की वेदना सुनने वाला कोई नहीं है। अतः आप कृपा करके इन्हें सत् उपदेश दें। जिससे इस सिद्ध स्थल पर पशु बिल बन्द हो जाये। आपके सारगर्भित अमृत वचनों से सैकड़ों निरीह पशुओं का वध होने से बच जायेगा... महापुरुषों का तो अवतार इसिलये ही होता है कि जिससे जीवों का उद्धार हो सके और ये घोर महापाप करने से बच जायें। अतः सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज ने सत्संग के माध्यम से शास्त्र मर्मज्ञ ज्ञानोपदेश दिया-

अन्य क्षेत्रे कृत पापं, पुण्य क्षेत्रे विनिश्यति। पुण्य क्षेत्रे कृतं पापं, वज्रलेपो भविष्यति।।

अर्थात् अन्य स्थानों पर किया हुआ पाप पवित्र स्थानों पर मिटता है परन्तु पवित्र स्थानों पर किया गया पाप वज्र लेप के समान कभी भी न मिटने वाला होता है। अतः ऐसे संत-महात्माओं के पवित्र स्थानों पर कोई पाप कर्म नहीं करना चाहिए। जीव हत्या करना महापाप है। ये पशु-पक्षी भी भगवान की संतान हैं. ... भगवान ने कहा है- 'जीव दया तो मम दया' जो जीवों पर दया करते हैं उस पर हमारी भी दया होती है। भूलकर भी मूक प्राणियों की हत्या नहीं करनी चाहिए। हिंसक प्रवृत्ति तो पशुओं की होती है हम तो मानव हैं। भगवान ने हमें विवेक-ज्ञान-बुद्धि दी है.... सोच-समझकर धर्म-मार्ग पर चलेंगे तो भगवत् कृपा होगी। अर्थात् सभी जीवों पर परोपकार करना बड़ा पुण्यकारी कर्म एवं मानव धर्म है। मन-कर्म-वचन से दूसरे को दुःख देना भी हिंसा जैसा बड़ा पाप है। युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के अमृत उपदेश श्रवण करने वाले सभी भक्तों को प्रतिज्ञा दिलवाई गई कि आज से हम कभी भी 'पशुबलि' नहीं चढ़ायेंगे और नहीं कहीं पर 'पशुबलि 'होने देंगे तथा मांसाहारी (तामसी) भोजन का आहार भी नहीं करेंगे... वचनों का इतना गहरा असर पड़ा कि सभी ने दृढ़ प्रतिज्ञा कर ली-'स्वामी जी! आज के बाद हम कभी भी न ही मांस खायेंगे और न ही खाने देंगे और सभी स्थानों पर पशुबलि बन्द करवायेंगे।' बस, आप तो हमारे ऊपर आशीर्वाद करना जिससे हमारा यह संकल्प पूरा हो सके। ऐसे थे सनातन धर्म के रक्षक, अहिंसा के पुजारी सद्गुरु श्री स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

🕉 श्री सत्नाम साक्षी 🖪 🕉 श्री सत्नाम साक्षी 🖫 🕉 श्री सत्नाम साक्षी 🖫 🕉 श्री सत्नाम साक्षी 🖫

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

麲

स

त्

ना

म सा

क्षी

55

άE

纲

स

त् ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE 纲

स त् ना

म सा क्षी

> 卐 Š 纲

स त् ना म सा

क्षी 卐 Š 纲 स

त् ना म सा क्षी 卐

άE 纲 स त् ना म

> सा क्षी **5**5 άE

纲 स त् ना

म

सा

क्षी

卐

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा– 45

भूत-प्रेतों को मिली मुक्ति..

संत हरी गुरुदेव बिन - किसका न हो उद्धार। कह टेऊँ इस बात को - कहते वेद पुकार।।

एक समय युगपुरुष सर्व समर्थ सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज मण्डली सहित यात्रा करते हुए एक गाँव पहुँचे। वहाँ एक सेठ ने बड़ी हवेली (मकान) खरीदा था। किन्तु उस मकान में कोई रह नहीं पाता था; क्योंकि उस मकान में भूत-प्रेतों का वास था। सेठ ने उस मकान को बेचने की भी बहुत कोशिश की, किन्तु उस मकान को लेने के लिये कोई तैयार ही नहीं हुआ। आखिरकार एक दिन सेठ को मालूम पड़ा कि हमारे गाँव में सिद्ध समर्थ सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज मण्डली सहित पधारे हैं। तो मन में विचार आया कि मेरे इस मकान में और कोई रहता भी नहीं है, खाली पड़ा है क्यों न यहाँ पर संत मण्डली को रहने के लिये आग्रह करूँ। इससे संतों की परीक्षा भी हो जायेगी और संतकृपा से कोई न कोई रास्ता भी निकल आयेगा पर उस भले सेठ को सोचना चाहिए कि ईश्वरीय सत्ता के सामने भला कौन सा भय और कौन सी परीक्षा? जो स्वयं अभय का दान देकर न जाने कितनों का उद्धार कर देते हैं। निर्भय होकर भजन करने वाले स्वयं सिद्ध पूर्ण समर्थ होते हैं। उनके सामने भयता का कोई सवाल ही नहीं उठता। सत्पुरुष तो सत्पुरुष ठहरे.... ऐसा मन में भाव रखकर सेठ स्वामी जी की शरण में गया और प्रार्थना की- हे प्रभु! मेरी हवेली खाली पड़ी है आप जितने दिन भी वहाँ निवास करना चाहें- वहाँ रह सकते हैं.... बेपरवाह बादशाह अन्तर्यामी गुरुदेव जी ने हाँ कर दी। तब युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज मण्डली ने उस गाँव में सत्संग-भजन-भोजन करने के बाद रात्रिकालीन विश्राम करने के लिए उस हवेली में पहुँचकर निवास किया।

तप-साधना-भजन-कीर्तन करने वालों की आँखों में निद्रा कहाँ.... वे तो ब्रह्मवेला में उठकर योगस्थ हो जाते हैं। (योग निद्रा में लीन)। सुबह होते ही सेठ-साहूकार स्वामी जी के पास आया और पूछने लगा कि रात को कोई तकलीफ तो नहीं हुई स्वामी जी! नींद अच्छी आ गई, किसी भी जीव जन्तु ने सताया तो नहीं.... स्वामी जी ने कहा- नहीं, नहीं.... आराम से सोये, कोई परेशानी नहीं हुई। ऐसा ही फिर दूसरे- तीसरे दिन भी पूछने लगे पर स्वामी जी ने कहा- हम आराम से रह रहे हैं। कोई तकलीफ-चिन्ता नहीं है।

जो सर्वत्र परमात्मा के दर्शन करते हैं उन्हें भला भूत-प्रेतों से क्या डर.... वे जीवों के उद्धारक होते हैं। भक्तराज नामदेव ने भूत-प्रेतों में भगवान के दर्शन किये और भगवान भूतों से άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

Š

श्री स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

Š

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

Š

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

ዡ ॐ

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

प्रकट हो गये। संत दादू दयाल जी ने अपने तपोबल से एक गाँव में रहने वाले सभी भूत-प्रेतों को निकाल दिया। तो सिद्ध समर्थ स्वामी टेऊँराम जी महाराज भी कोई साधारण जन थोड़े ही थे। अलौकिक शक्तियों के अवतार थे। तीसरी रात को स्वामी जी जब ध्यानस्थ थे तो रोने की आवाज आई... यह रुदन सुनकर श्री गुरुदेव भगवान ने पूछा- आप कौन हो और क्यों रो रहे हो? तो वह बोला- मैं भूत-प्रेतों का सरदार हूँ। मैं इस हवेली में किसी को रहने नहीं देता, दो दिन से मैं बाहर कहीं गया हुआ था.... आया तो मुझे इस हवेली में कोई अलौकिक दिव्य ईश्वरीय शक्ति दिखाई दे रही है.... तप- साधना का तेज दिखाई पड़ रहा है.... मेरे साथी भी यहाँ दिखाई नहीं पड़ रहे हैं.... न जाने वे सब कहाँ चले गये.... इस पर पतित पावन जीवों के उद्धारक युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने कहा- भजन-भक्ति-तप-साधना की शक्ति के कारण आपके सभी साथियों की मुक्ति हो गई है अर्थात् उन सबका उद्धार हो गया है.... तो सरदार बोला- मेरी मुक्ति? इस पर स्वामी जी ने उसके ऊपर आशीर्वाद कृपादृष्टि की.... जिससे वह भी प्रेतयोनि से मुक्त हो गया.... और इस हवेली से हमेशा-हमेशा के लिए मुक्ति पाकर सभी भूत-प्रेत चले गये। सुबह होते ही सेठ स्वामी जी से पुनः पूछने लगा- स्वामी जी! कोई तकलीफ तो नहीं हो रही.... आखिरकार सेठ ने सारी हकीकत भी सुनाई। तब स्वामी जी ने कहा- आपकी हवेली में रहने वाले सभी भूत-प्रेतों का उद्धार हो गया है। अब उन्हें प्रेत योनि से मुक्तिमिल गई है और वे हवेली छोड़कर चले गये हैं। अब तुम इस मकान में निर्भय होकर रह सकते हो। ऐसा सुनते ही वह सेठ गद्गद् हो गया.... स्वामी जी, आपकी जय हो-आपकी जय हो.... प्रभु! आपने हमारे ऊपर बहुत बड़ी कृपा की.... धन्य हैं प्रभु! आप धन्य हैं.... ऐसी होती है भक्ति में शक्ति.... जो भूत-प्रेतों को भी मुक्त कर देते हैं। तो ऐसे थे निर्भयता के अवतार, जीवों के उद्धारक, सिद्ध समर्थ सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी **५**५

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

άE

स

त्

ना

म

सा

क्षी

🕉 श्री सत्नाम साक्षी \rfloor 🕉 श्री सत्नाम साक्षी 🖫 🕉 श्री सत्नाम साक्षी 🖫 ॐ श्री सत्नाम साक्षी 🖫 ॐ श्री सत्नाम साक्षी 🖼

άE 纲 स

त् ना म सा

क्षी 卐 άE

纲 स त् ना म सा

क्षी 卐 Š 纲 स त् ना म सा

纲 स त् ना म सा

क्षी **5**5 άE 纲

क्षी 卐 άE स त् ना म सा क्षी 卐

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा– 46

मूलो मस्त की प्रेमा भक्ति

निश्चल मन से मिलत है, निश्चल आत्म राम। टेऊँ मन निश्चल करे, पाओ सुख का धाम।।

युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का एक भक्त था 'मूलो मस्त' जो बड़ा ही सीधा सादा और भोला भाला! जिसमें किसी प्रकार का कोई छल- कपट-अभिमान नहीं... अपनी मस्ती में मस्त....

निर्धन-गरीब था पर विचार भावों का अमीर.... युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के प्रति था अनन्य श्रद्धा भाव। नित्य प्रति श्री अमरापुर दरबार का दर्शन करना व सदुगुरु महाराज जी के चरण स्पर्श करना। तन-मन द्वारा दरबार की जितनी सेवा होती बड़े भाव से सेवा करता.... निर्मल व शुद्ध भाव.... मुख पर सदैव भगवान व गुरुदेव का नाम- धन गुरु टेऊँराम.... धन गुरु टेऊँराम....

एक समय भक्तिभाव में उसने स्वामी जी से कहा- स्वामी जी, आप हमारे घर भोजन खाओ.... घर पर माँ और वह स्वयं केवल दो जने थे। अब उस भक्त के घर पर था भी कुछ नहीं, पर भाव बहुत था। स्वामी जी ने कहा-भाई! हमारे साथ तो बहुत संत-महात्मा हैं। उसने कहा- स्वामी जी, बिस्कृट खाओ.... पानी पीओ.... कुछ भी खाओ.... बस! आप हमारे घर आओ जरूर.... स्वामी जी ने भी उस भोलें भाले भक्त का प्रेम देखकर कहा- चलो, हम कल तुम्हारे घर भोजन खायेंगे। वह भक्त ख़ुशी से गदुगदु हो गया। घर में कुछ न होते हुए भी कोई चिन्ता नहीं। बस, उसे तो खुशी थी कि स्वामी जी मेरे घर आयेंगे। अब देखो भक्त का मान रखने के लिये स्वामी जी कैसी लीला करते हैं? उसके घर चलने के एक दिन पहले उसके पास एक सेठ साहूकार आया और उस भक्त को पैसे व राशन सामग्री देकर कहा, हमने सुना है कल आपके घर संतों का भोजन भण्डारा है तो संतों का भण्डारा मेरी तरफ से कर देना। कौन समझे ऐसे दिव्य महापुरुषों की विचित्र लीला को....

दुसरे दिन स्वामी जी ने संत मण्डली को कहा- चलो, आज हम मुलो मस्त के घर भोजन प्रसाद पार्येगे.... संतों ने कहा- स्वामी जी! उस मस्त के पास कुछ भी नहीं है.... आपने उसके घर भोजन कैसे मान लिया? अब कौन समझे अन्तर्यामी स्वामी जी की लीला को.... स्वामी जी ने कहा- जिसके घर हम भोजन खायेंगे, वहाँ पहले ही इंतजाम कर दिया है.... आज हम उसी मूलो मस्त के घर ही भोजन खायेंगे.... स्वामी जी की आज्ञा से संत मण्डली पहुँची मूलो मस्त के घर....

उस गुरु भक्त की प्रसन्नता का कोई कोई ठिकाना नहीं। रास्ते में जय-जयकार करने लगा.... पृष्पों की वर्खा करने लगा.... घूमने- नाचने-गाने लगा.... धन गुरु टेऊँराम.... धन गुरु टेऊँराम.... सत्नाम साक्षी..

सभी संत महात्माओं व युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज को बड़े स्नेह भाव, आदर सम्मान के साथ घर पर लेकर आया और बड़े ही प्रेमभाव से सेवा करके भोजन प्रसाद खिलाया और तो और भोजन में भी अनेक प्रकार के व्यँजन.... ये सब तो ठीक पर पास- पडौस में सभी को भोजन प्रसाद खिलाया। ऐसा कौतुक देखकर सभी संत आश्चर्य में पड़ गये कि इस मस्त के पास इतना भोजन कहाँ से आया....कैसे इतने भोजन का इन्तजाम किया! ऐसी अचरजमयी लीला देख कर सब आश्चर्यचिकत रह गये.... कौन समझे महापुरुष की लीला को! भक्त का मान रखने के लिये स्वामी जी ने यहाँ कौन सी लीला रची जिसे कोई नहीं समझ पाया....

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

麲

स

त् ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

ॐ श्री स त्

त् ना म

सा क्षी **५**

ॐ श्री स त् ना स

सा क्षी **५५** ॐ श्री स त्ना म

म सा क्षी **५५** ॐ श्री स त्ना

त्नामसाक्षी ५५ ॐ श्री

स त् ना म सा क्षी 'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा– 47

उदारचित्त व गरीबनिवाज

एक समय टण्डेआदम सिन्ध देश में स्थित श्री अमरापुर दरबार (डि<u>ब</u>) पर वार्षिकोत्सव 'चैत्र मेला' लगा हुआ था। हज़ारों श्रद्धालु दूर-दूर से आये हुए थे। भजन और भोजन का अखण्ड भण्डारा चल रहा था। भण्डारा खिलाने वाला हॉल, सभी वर्ण-जातियों के भक्तों व दीन-दुखियों से सदैव भरा रहता था... बहुत बड़ी संख्या में लोग आते और भण्डारे में भोजन प्रसाद खाकर जाते थे। अन्नपूर्णा के मालिक युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का कथन था कि जो भी यहाँ आये वह भण्डारे का प्रसाद जरूर खाकर जावे. ... कोई भूखा न जाये.... प्रेमपूर्वक भोजन प्रसाद खाकर जाये.... ऐसी उच्चवृत्ति अर्थात् उदारचित्त की प्रवृत्ति थी स्वामी जी में!

उस चैत्र मेले में एक गरीब वृद्ध महिला भी आयी हुई थी। जो भूख-प्यास से अत्यंत व्याकुल थी। उसने भी भण्डारे में भोजन प्रसाद खाया और गरीबी के कारण अभावग्रस्त थी, उसने भोजन के पश्चात् थाली-कटोरा, गिलास रेत में छिपा दिया, उसने सोचा जब सभी चले जाएँगे... तब यहाँ से निकालकर घर ले जाऊँगी। ऐसा करते हुए किसी सेवादारी ने उसे दूर से ही देख लिया और यह बात युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज को जाकर बताई- स्वामी जी, उस माई ने भोजन वाले बर्तन (थाली-कटोरा, गिलास) रेत में गड्डा करके छिपा दिये हैं, वह चुराकर ले जाना चाहती है।

स्वामी जी तो करुणा के सागर थे। दया व कृपा के निधान थे। वे उस माता की गरीबी हालत से पिरिचित थे। अतः स्वामी जी ने उस भक्त से कहा- बेटा! जो कुछ तुमने देखा न, वह अब किसी से मत कहना. ... माता निर्धन-गरीब है.... उसे बर्तनों की आवश्यकता होगी.... एक काम करो, तुम उस माता को यहाँ बुलाकर लाओ....

सेवादारी स्वामी जी की आज्ञा पाकर माता को लेने आया। माता डर गई, शायद स्वामी जी को बर्तन छिपाने की बात मालूम पड़ गई, मुँह से कुछ बोली नहीं, सेवादारी माता को गुरुदेव भगवान के पास ले आया.... स्वामी जी तो भजनानन्द की मौज में बैठे थे। स्वामी जी ने अपनी करुणामयी कृपादृष्टि उस माता पर की.... माता को बैठाकर, सेवादारी से कहा- जो वे बर्तन हैं उसे तो लेकर आओ ही- साथ ही नया कटोरा-थाली, गिलास और भी लेकर आओ.... माता को देते हुए कहा- आप किसी प्रकार की चिन्ता न करें.... आप इसे घर ले जाओ और मेले के उपलक्ष में प्रसाद स्वरूप कपड़े- मिठाई भी दिये। माता स्वामी जी का इतना स्नेह पाकर गद्गद् हो गई, खुशी का कोई ठिकाना नहीं था कि वह कुछ बोल सके। बस! मन ही मन अपने भाग्योदय को देख प्रसन्न हो रही थी.... सोच रही थी कि इस संसार में ऐसे भी उदारचित्त, सरल, दयालु, संत महात्मा भी हैं। तो ऐसी होती है महापुरुषों की करुणा.... संतों का होता है इतना विशाल हृदय....

इतना कुछ देने के पश्चात् स्वामी जी ने कहा- माता, संकोच मत करो यदि तुम्हें और भी कुछ.... किसी भी वस्तु की आवश्यकता हो तो निःसंकोच होकर कहो.... बस! माता के अश्रुधार बहने लगे.... और बाबा जी की करुणा, कृपा एवं उदारता का यशोगान करती हुई चली गई।

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

30

纲

स त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

सा

क्षी 卐 άE 纲

स त् ना म सा क्षी

卐 άE 纲 स त् ना म सा

क्षी 卐 άE 纲 स त् ना म सा

क्षी **5**5 άE 纲 स त् ना म सा

क्षी

卐

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा– 48

गौरीशंकर की हो गई कंचन काया

एक बार रावलपिंडी से लाला हरीचन्द ने टंडेआदम श्री अमरापुर स्थान में युगपुरुष सदुगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के पावन श्रीचरणों में प्रेमपूर्वक विनती की कि हे त्रिलोकीनाथ! हमारी कन्या का शुभ विवाह है सो आप स्वयं पधारकर आशीर्वाद देने की कृपा करें। हृदयेश्वर सद्गुरु महाराज जी ने स्वामी सर्वानन्द जी से कहा कि आप तो रावलिपंडी जाते रहते हैं, यह कार्य आपको निभाना है। आज्ञा पाकर स्वामी सर्वानन्द जी रावलपिंडी में लाला जी के निवास पर विवाहोत्सव के एक दिवस पूर्व ही पहुँच गये। वहाँ पर एक अलग कमरे में उनके रहने की व्यवस्था की गई थी। चारों तरफ खुशियों की बहार छाई हुई थी। बैंड-बाजे, शहनाईयाँ, मंगलगीत.... स्वामी जी का मंगल आगमन चौदहवीं के चाँद की तरह प्रतीत हो रहा था, आनन्द ही आनन्द बरसने लगा।

अचानक एक खबर मिली... लालाजी भागते- दौडते स्वामी जी के पास आये और बोले कि हे प्रभृ! अभी- अभी समाचार मिला है कि गौरीशंकर जिससे पूरनीबाई का विवाह होने वाला है उसे जलोदर की बीमारी है.... डॉक्टर ने कहा कि ये छह महीने मुश्किल से जीवित रहेगा.... स्वामी जी! मेरे सिर पर तो दुःख का पहाड़ टूट पड़ा है। अब आप ही मेरी लाज बचाइये.... आपकी आज्ञा हो तो रिश्ता तोड़ दें; क्योंकि यहाँ रिश्ता जोड़ने के बाद तोड़ना बहुत ही मुश्किल काम है और आपकी आज्ञा हो तो विवाह कर दिया जाय.... इतना सुनकर गुरुभक्त स्वामी सर्वानन्द जी ने कहा कि हमें यहाँ गुरुदेव सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने भेजा है, हमें उनसे आज्ञा लेनी पडेगी। इस पर लाला जी ने कहा कि स्वामी जी, कहाँ रावलपिंडी और कहाँ टंडाआदम.... आप जायेंगे तो कब लौटेंगे.... कल तो शादी है। यहाँ आपको पता ही होगा कि उस समय संचार व यातायात के साधन तीव्रगामी नहीं हुआ करते थे।

स्वामी जी ने कहा- आप घबराओ मत, हम यहीं कृटिया में बैठे हैं, हम श्री गुरुदेव भगवान से शीघ्र ही आज्ञा लेकर आते हैं.... एक व्यक्ति बाहर दरवाजे पर खड़ा रहे.... जब कूंडी हिले तब दरवाजा खोलकर आना, जो आज्ञा मिलेगी वो आपको सुनाएँगे.... अन्तर्मन की तार गुरुदेव से सदा जुड़ी होने के कारण स्वामी सर्वानन्द जी ने योग शक्ति द्वारा टंडेआदम पहुँचकर सारी बात सदुगुरु महाराज जी को बताई। तब सदुगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने ध्यान लगाया व फरमाया कि 'शादी कर दी जाय, ईश्वर सब भली करेंगे'। लगभग एक घंटे बाद कुंडी हिली.... दरवाजा खोला गया, श्री गुरुदेव की आज्ञा मिल गई, शादी हो गई। रात को कमरे में सेजा पर दोनों आमने सामने बैठे.... गौरीशंकर की आँखों में पश्चाताप के आँसू बह रहे थे कि मैंने ऐसी सुशील कन्या के साथ धोखा किया है और पूरनीबाई के मन में एक ही बात चल रही थी कि गुरू महाराज जी, हे दीनानाथ! मैंने आपकी आज्ञा का पालन किया है, आपको ही दया करनी है और मेरे पतिदेव के दुःख दूर करने हैं... प्रातः चार बजे स्वप्न में गौरीशंकर को एक दरवेश जिसका लम्बा चोला, बड़ी दाड़ी, एक हाथ में डंडा, एक हाथ में चिप्पी (कमंडल) था, वो आये, और बोले- गौरीशंकर... आपको कौन-सी बीमारी है, जहाँ जहाँ बीमारी है, वहाँ वहाँ हाथ लगाते जाओ और वो फकीर चिप्पी से जल निकालकर सतुनाम साक्षी.... सतुनाम साक्षी.... कहकर जल का छींटा लगाते जा रहे थे.... उस बाबा के मुख मण्डल पर अद्भुत तेजोमय आभा थी.... बस फिर क्या था, जल का छींटा लगते ही मेरी सारी बीमारी दूर होकर काया कंचन के समान हो गई। गौरीशंकर जैसे ही उस फकीर के पाँव छुने के लिए आगे बढ़ा तो वे अर्न्तध्यान हो गये.... आँखें ख़ुल गईं, पूरनीबाई को जगाया, बोला मैं जाग रहा हूँ या स्वप्न देख रहा हूँ.... नई दल्हन आश्चर्यचिकत होकर बोली रात ही रात में ये कैसा चमत्कार हो गया.... पति परमेश्वर ने सारी बात सनाई.... दोनों ने मिलकर प्रातः ५ बजे स्वामीजी के कमरे का दरवाजा खटखटाया, स्वामी जी को सारी घटना सुनाई व कहा कि वो आप थे, तब स्वामी सर्वानन्द जी ने कहा कि वो मैं नहीं... खण्डू वाले वो हमारे गुरुदेव सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज थे जिन्होंने स्वप्न में आकर आपके दुखड़े दूर किये....

शतू-शतू नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

ys.

άE

網

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

άE 纲 स

त् ना म

सा क्षी 卐

άE 纲 स त् ना म

सा क्षी 55 άE 纲 स त्

ना म सा क्षी **5**5

άE 纲 स त् ना म सा

क्षी **5**5 स

άE 纲 त् ना म सा

क्षी

卐

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा– 49

प्रीतम को प्राप्त हुई हारमोनियम शिक्षा....

सिंध के हैदराबाद शहर में स्थित 'गुरु संगत मंदिर' का अनुपम प्रसँग... लगभग सन् १६१७ की बात है...उस समय सिद्ध समर्थ युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज, स्वामी ग्वालानन्द जी महाराज भक्त प्रेमियों के साथ सत्संग भजन करने हेतु पधारे थे। उस समय ऐसा हुआ कि भजन सत्संग में हारमोनियम (बाजा) बजाने वाला कोई नहीं था। पहले प्रेमियों भक्तों को स्वामी जी ने आज्ञा दी कि भजन-सत्संग प्रारम्भ करो... भक्तों ने कहा- स्वामी जी, सत्संग भजन में हारमोनियम बजाने वाला कोई नहीं है। अब देखो- यहाँ बाबा जी कौन सी लीला रचते हैं। उसी सत्संग स्थल पर एक १२ वर्षीय छोटा बालक बैठा था. जिसका नाम था-प्रीतम...

तब श्री गुरु महाराज जी ने उस बालक पर असीम कृपा करते हुए बालक को अपने पास बुलाकर आज्ञा दी- बेटा ! हारमोनियम बजाओ... प्रीतम ने कहा-स्वामी जी! मुझे हारमोनियम बजाना नहीं आता है, उसी क्षण लीला पुरुषोत्तम गुरुदेव स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने उसके मस्तक पर अपना वरद् हस्त रखा और कहा, बेटा !तुम हारमोनियम बजाओ-अपने आप बज जायेगा। जिसने कभी बाजा बजाया ही नहीं हो, न ही उसे इस वाद्ययंत्र का किसी प्रकार का ज्ञान हो, वह भला कैसे बजा सकता है? पर कौन समझे ऐसे अलौकिक दुर्लभ महापुरुष की लीलाओं को... बस! जिनके ऊपर कृपा कर दे तो वह कार्य अवश्य ही सिद्ध हो जाता है। इसके पूर्व भी श्री गुरुदेव भगवान ने अनेकों भक्तों के ऊपर कृपा की थी- चोर को चौकीदार बना दिया, सूर श्याम छोटे बालक को पारंगत गवैया बना दिया, खीया भक्त को चोरी की आदत से मुक्त करा दिया, सांईं डिना को अफीम खाने की लत से छुटकारा दिला दिया। ऐसे अनेक लीला प्रसंग देखे-सुने गये हैं।

ऐसा ही इस बालक प्रीतम के साथ भी हुआ। आज वह पहली बार हारमोनियम पर हाथ रख रहा है... अब देखो, यहाँ कैसी लीला करते हैं- युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज... उस १२ वर्षीय बालक प्रीतम ने श्री गुरुदेव के श्रीचरणों का ध्यान करके हारमोनियम बजाना शुरू किया... भक्तजन भजन गा रहे थे और सुर ताल के साथ मिलकर प्रीतम के हाथ से वह हारमोनियम बजने लगा... वह स्वयं समझ नहीं पा रहा था कि मैंने पहले कभी हारमोनियम बजाया नहीं, न ही मुझे इसका कोई ज्ञान था... पता नहीं ये कौन सी शक्ति मुझसे बाजा बजवा रही है... पूरे सत्संग में बड़े ही सुघढ़ सुंदर तरीके से हारमोनियम बजाया। सत्संग में सारे भक्त ऐसी आश्चर्य जनक लीला देख विस्मित हो गये। बालक प्रीतम सत्संग समाप्ति के बाद सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के श्रीचरणों में गिर गया। बोला- स्वामी जी! आप की लीला अपरम्पार है... इसे समझ पाना बडा कठिन है... कहते हैं वही प्रीतम अंत समय तक हारमोनियम बजाने की सेवा करता रहा...!

शतू-शतू नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

30

纲

स

त्

ना

म सा

क्षी

55

纲

स त्

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

म

सा क्षी

55

άE

स

त्

ना

म

सा

ॐ श्री स

स त् ना म

सा क्षी **५**

ॐ श्री स त् ना म

सा क्षी **५** 3% श्री त्

स त् ना म सा

. साक्षी **५५** ॐ श्री स

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा– ५०

गुरुकृपा से हुआ असाध्य रोग दूर

दिलगीर हो न दिल मेरे, दिलासा फकीर का। सभ गल सतार पड़ता, पाछा फकीर का।। जिस पर नज़र फकीर की, सो पातशाह है। सो कभी न भुखा रहता, प्यासा फकीर का।।

एक समय गुरु महाराज जी के प्यारे, भाई मूलचन्द मोदी की बहिन जो कि शरीर की पीड़ा से अत्यंत व्यथित थी। उसके हाथों में कोई असाध्य बीमारी हो गई थी, जो कई महीनों तक तरह-तरह का इलाज कराने के बाद भी छूट नहीं रही थी। भाई मूलचन्द मोदी और उसकी बहन का युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज में अटूट विश्वास और श्रद्धा थी। उन्हें जब कभी भी कोई दुःख-दर्द सताता तो बड़े श्रद्धा विश्वास के साथ स्वामी जी को याद करते थे। विश्वास में बड़ी शक्ति होती है। 'विश्वास फल दायकम्' विश्वास से सर्व मनोरथ सिद्ध होते हैं। गुरुदेव को तो भगवान से भी अधिक जानना चाहिये। जो कार्य करने में भगवान भी असमर्थ होते हैं वे सिद्ध महापुरुष गुरुदेव सहजता से पूर्ण कर देते हैं। ऐसा ही उस मूलचन्द मोदी की बहन के साथ भी हुआ। वह बार-बार सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज को याद कर रही थी। स्वामी जी से वेदना भरे स्वर में प्रार्थना कर रही थी- स्वामी जी, मेरा दुःख दर्द दूर कर दो... अन्तर्यामी घट-घट वासी श्री गुरुदेव भगवान ने उसकी भावभीनी पुकार सुन ली... अब यहाँ देखो- स्वामी जी कौन सी लीला करते हैं- उस बहन ने स्वप्न में देखा कि कोई महापुरुष उससे कह रहा है कि आपके हाथ श्री अमरापुर स्थान (डिब्) पर जाने से ठीक हो जाएँगे... महापुरुषों का वचन कभी मिथ्या हो नहीं सकता, चाहे वो स्वप्न में ही क्यों नहीं कह रहे हों...

किस वक्त कौन सी लीला करते हैं संत-महापुरुष! उनकी लीला वो ही जानें... बस फिर क्या था-प्रातःकाल जागकर नवस्फूर्ति के साथ इस स्वप्न की बात भाई मूलचन्द मोदी को बताई। मन में पक्का निश्चय रखकर भाई मूलचन्द और उसकी बहन दोनों श्री अमरापुर दरबार (डिब्र) पर श्री गुरुदेव भगवान के पास आये। उस बहन ने अपने रोगग्रस्त हाथ स्वामी जी को दिखाये और स्वप्न वाली पूरी वार्ता भी स्वामी जी को कह सुनाई... स्वामी जी तो स्वयं अन्तर्यामी थे- कौन सी लीला कैसे करनी है, कैसे दुःखों से मुक्ति दिलानी है, ये सब जानते थे। उस बहन ने बड़ी श्रद्धा विनम्रता से स्वामी जी से कहा- हे गुरुदेव! हमें तो आपके ऊपर पूर्ण दृढ़ विश्वास है, आप ही मेरे दुःख हरेंगे... आपके कृपाशीर्वाद से मेरे हाथ ठीक हो जाएँगे...

स्वामी जी ने कहा- पुत्री! आप 'खरबत' नाम की एक जड़ी-बूटी आती है उसे घोटकर पीयो और उसका बचा हुआ शेष भाग (छाछ) हाथ पर बाँध दो... ऐसा कुछ दिन करते रहो... प्रभु परमात्मा सब ठीक करेंगे... महापुरुषों द्वारा बतलाया गया सत् संदेश अमृत का काम करता है। जीवन दान देने वाला होता है। जड़ी-बूटी के साथ-साथ उस समय कहा हुआ वचन अमृत प्रसाद होता है। उस समय महापुरुषों की रमझ-अलौकिक मस्ती अद्भुत और विलक्षण होती है... उस बहन ने वैसा ही किया जैसा श्री गुरुदेव भगवान ने बतलाया था। महापुरुषों की उसके ऊपर महती कृपा हुई, वह शीघ्र ही पूर्णतः स्वस्थ हो गई। इसे कहते हैं संत-फकीरों का कृपा-प्रसाद! जो समय-समय पर भक्तों के ऊपर बरसता रहता है!

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

Š

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

3% श्री स त्

स त् ना म

सा क्षी **५५** ॐ श्री

सित्नमसाक्ष**ः%** %

श्री स त्न म साक्षी ५ % श्री स त्न

म साक्षी ५ ॐ श्री सत्ना म साक्षी ५ ॐ

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा– 51

कुम्भ मेले में देखा आँखों देखा चमत्कार.....

सनातन व वैदिक संस्कृति को साकार करता हुआ यह महाकुम्भ अमृत महापर्व... इसी पूर्ण कुम्भ अमृत मेले के अन्तर्गत ६४ वर्ष पूर्व युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने भी लगाई थी 'श्री प्रेम प्रकाश मण्डल अन्नक्षेत्र छावनी' जहाँ स्वामी जी ने भजन व भोजन प्रसाद का खोला था अखण्ड भण्डारा। हरिद्वार में स्वामी कमलदास कुटिया के सामने कुम्भ मेला क्षेत्र भूमि पर अस्थायी झोपड़ियाँ, कुटियाँ, भण्डारगृह, सत्संग हाल, यज्ञ मण्डप (यज्ञशाला), मुख्य द्वार पर स्थापित श्री प्रेम प्रकाशी धर्मध्वजा, घास-फूस से बना श्रीमंदिर व संत सेवाधारियों के लिए कुटियाएँ...

एक महीने तक चलने वाला **'प्रेम प्रकाश मण्डल अन्नक्षेत्र छावनी'**, कुम्भ मेले का नजारा भी अद्भुत था। सभी संत- सेवाधारी सेवा, स्मरण, भजन, सत्संग के साथ माँ गंगा में अमृतकुम्भ से बरसने वाले अमृत का पान, साथ ही संत- महापुरुषों का संग पाकर अमृत महाकुम्भ में अपना जीवन धन्य-धन्य कर रहे थे।

परमात्मा की लीला भी अद्भुत व अचरजमयी होती है उसे समझ पाना बड़ा कठिन होता है। तभी एक घटना घटी... उस महाकुम्भ में युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज द्वारा लगाई गई प्रेम प्रकाश छावनी के पास वाली किसी अन्य संत महापुरुष की छावनी में आग लग गई... उस समय वायु पश्चिम दिशा से बड़े वेग से चलने लगी और ऐसे में आग ने बढ़ते-बढ़ते १५-२० छावनियों को अपनी चपेट में ले लिया। स्वामी जी के पास संत दादू दयाल पंथ की छावनी में भी आग लग गई। इस दर्दनाक घटना को देखकर सभी संत-सेवाधारी भयभीत होने लगे... बड़ा हाहाकार मचने लगा... सभी अपना-अपना सामान निकालने लगे... क्योंकि सभी कुटियाएँ घास फूस की बनी हुई थी। इसी के साथ पश्चिमी दिशा से चलने वाली वेगवती वायु मानो प्रलयकाल का संदेश देती दिखाई दे रही थी। भयवश सभी अपना- अपना सामान बाहर निकालने लगे... सभी के मन में उदासी छा गई... ऐसी विषम स्थिति देखकर 'श्री सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज' ने दिव्य लीला रची... कौन समझे महापुरुषों की अद्भुत लीलाओं को, ब्रह्मानन्द की अनोखी मस्ती, वृत्ति एकाकार... उनके मुख से निकला वाक्य कभी असत्य नहीं हो सकता... जो बोल दिया वह अटल सत्य...

तब स्वामी जी ने अपनी छावनी (प्रेम प्रकाश मण्डल छावनी) के चारों ओर लाठी घुमाकर (परिक्रमा कर) अपनी चिप्पी से जल छिड़का और सभी प्रेमियों सत्संगियों से कहा- आप किसी प्रकार की भी चिन्ता न करें और न ही कुटियाओं से कोई सामान बाहर निकालें... सभी परमात्मा का चिन्तन व सत्नाम साक्षी मंत्र का जाप एवं राम नाम की धुनि लगायें... प्रभु परमात्मा सब ठीक करेंगे... बस! महापुरुषों के तो कहने की देर होती है, स्वयं भगवान भी संत महापुरुषों के वचनों को नहीं टालते... वह उसे अवश्य ही पूरा करके संतों का मान वर्धन करते हैं.. अर्थात् सत्पुरुष जब चाहें, जैसा चाहें वह कार्य अवश्य ही सिद्ध कर देते हैं। फिर क्या, थोड़ी देर हुई नहीं कि पश्चिम दिशा से बहने वाली वायु पूर्व दिशा में चलने लगी। धीरे-धीरे अग्न ने भी शान्त रूप धारण कर लिया। आसपास की झोपिड़यों से आग की लपटें बंद हो गईं सारा माहौल शान्त हो गया... स्वामी जी की ऐसी अद्भुत शक्ति देखकर सभी नत मस्तक हो गये।

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

위 **5**

30

纲

स

त्

ना

म सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

άE 纲 स त् ना

म

सा क्षी 55

άE 纲 स त् ना म

सा क्षी 卐 άE 纲 स त् ना म

άE 纲 स त् ना म सा क्षी

55 άE 纲 स त्

क्षी

卐

सा क्षी **5**5 ना म सा 'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा– 52

महाराज श्री के बैठते ही चल पड़ी रेलगाड़ी.....

सन् १६४० के आसपास सिन्ध प्रदेश के नवाबशाह जिले के हाला तहसील का छोटा सा गाँव कमेजा! वहाँ के एक प्रेमी के घर युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज संत मण्डली सहित सत्संग-भोजन पर पधारे हुए थे। उस प्रेमी का स्वामी जी के प्रति अटूट श्रद्धा व प्रेम था। स्वामी जी जी कुछ दिन वहाँ रहकर सभी प्रेमी भक्तों को सत्संगामृत का पान करवाकर जब वापस श्री अमरापुर दरबार (डिब्) को प्रस्थान करने वाले थे। उसी दिन सभी संत व गुरुदेव स्वामी टेऊँराम जी महाराज भोजन-प्रसाद ग्रहण कर रहे थे और गाड़ी का समय भी होने को था। जिस रेलगाड़ी में बैठकर स्वामी जी व संतों को जाना था वह ५ मील दूर सईदाबाद नगर में रुकती थी, वहीं से सभी को रेल में बैठकर टण्डोआदम जाना था (उस समय यातायात के साधन प्रचुरता में एवं तीव्रगामी नहीं हुआ करते थे)। जब स्वामी जी व संत भोजन कर रहे थे तो उसमें काफी देर हो गई... अब संत लोग इस आशंका में, भोजन जल्दी जल्दी खाने लगे ताकि शीघ्र सईदाबाद स्टेशन पहुँच सकें, अन्यथा वह गाडी कहीं निकल न जाये...

अन्तर्यामी श्री गुरुदेव भगवान संत मण्डली प्रेमियों की शंका को समझ गये और सभी को आज्ञा दी कि आप भोजन आराम से करो... गाडी यहाँ से आगे ही नहीं जायेगी... क्योंकि गाडी को जाना यहाँ से ही था पर यहाँ गाड़ी का ठहराव नहीं था अर्थातु यहाँ रुकती नहीं थी... बस फिर क्या था... महापुरुषों के तो कहने की देर होती है। भगवान की ऐसी लीला हुई कि वही गाड़ी किसी तकनीकी खराबी के कारण 'कमेजा' गाँव के स्टेशन पर ही रुक गई... जहाँ युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज रुके हुए थे। इंजन का चालक व तकनीकी कर्मचारी नीचे उतरकर इंजन को ठीक करने का प्रयास करने लगे। बहुत प्रयास किया किन्तु गाड़ी का इंजन टस से मस नहीं हुआ... इतने में सर्व समर्थ सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने भोजन-प्रसाद खाकर संत मण्डल एवं प्रेमियों को आज्ञा दी कि आपको अब सईदाबाद जाने की आवश्यकता नहीं... सामने वही रेलगाडी खडी है, चलकर उसमें आराम से बैठ जाओ...

कौन समझे ऐसे दिव्य लीलाधारी महापुरुषों की लीला को! हम साधारण जन की बुद्धिबल से कोसों दूर! हम तो उनकी चरण-शरण में रहकर ही आत्म कल्याण कर सकते हैं!

अब देखें आगे कैसी विचित्र लीला होती है? बहुत प्रयास करने पर भी रेलगाड़ी नहीं चली... चालक कर्मचारी इंजीनियर सभी हताश होकर थक गये... समझ नहीं आ रहा था कि अब क्या करें... थोडी ही देर में सर्वगुण व सर्वशक्ति सम्पन्न सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज मण्डली सहित ज्यों ही गाड़ी में बैठे तो अचानक ही इंजन में हलचल हुई और लगा अपने आप ही इंजन अब ठीक हो गया है और चालक ने ज्यों ही इंजन को चलाया तो चल पड़ा और रेलगाड़ी धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगी... ऐसी अदूभुत शक्ति देखकर सभी संत और प्रेमी व आसपास के लोग आश्चर्यचिकत होकर कहने लगे- ये तो साक्षात चमत्कार है... अर्थात महापुरुषों के संकल्प से अकल्पनीय कार्य भी पूर्ण हो जाते हैं।

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

क्षी

55

30

網

स

त्

ना

म

सा

ॐ श्री स

स त् ना

म सा क्षी

ॐ श्री स त्ना

सिक्षा **५**% श्री स त्

ना म साक्षी **५५** ॐ श्री स त

श्री सत्नामसाक्षी **५** ॐ 🖰

क्षी **५५** ॐ श्री स त्ना म साक्षी **५५** ॐ

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा– 53

अंधश्रद्धा व अज्ञानता को दूर करना.....

एक बार युगपुरुष सद्गुरु सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज पूरी संत मण्डली के साथ शिकारपुर (सिंध) में पहुँचे। वहाँ श्री गुरु महाराज जी के सत्संग भजन का कार्यक्रम हुआ जिसमें हजारों श्रद्धालुओं ने सत्संगामृत का पान किया। स्वामी जी का दर्शन कर सारी संगत गद्गद् हुई। उसी स्थान के पास एक कुँआ बना हुआ था। वहाँ एक ऐसी अंधविश्वास की प्रथा प्रचलित थी कि नित्यप्रति सभी गाँववासी उस कुँए में बतासे, नारियल, मिश्री, फल, घी व अन्य वस्तुएँ डालकर बड़े प्रसन्नचित्त होते... उनकी धारणा थी कि कुँए में देवता निवास करते हैं और वे सब चढ़ावे से प्रसन्न होते हैं। जैसे ही कुँए में कुछ डालते तो स्वाभाविक रूप से पानी में गुड़मुड़ (टप-टप) की आवाज़ होती और वे अंधविश्वासी लोग जोर- जोर से तालियाँ बजाकर नाचते और कहते कि हमारे द्वारा भेजी वस्तएँ स्वीकार कर देवता लोग कुएँ में नाच रहे हैं... प्रसन्न हो रहे हैं... अब कौन समझाये ऐसे मूढ़ अज्ञानियों को... अब बताओ - कुँए में भला देवता नाच सकते हैं... देवताओं को तो प्रसन्न नहीं करते, परन्तु कुँए का पानी और खराब करते उसमें ऐसी चीजें डालेंगे तो स्वतः ही पानी भी खराब होगा ही। वह वस्तुएँ भी पानी में पड़ी सड़ जाएँगी और पानी दूषित होकर गंदा व विषैला हो जाएगा। ऐसा करके फिर गुरु महाराज जी से कहते- स्वामी जी! चलो, वहाँ देखो कितना आनन्द लगा हुआ है... देवता कुँए में नाच रहे हैं... ऐसे अज्ञानी- अधंविश्वासियों को भला कौन समझाए... तब युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज वहाँ उन्हें ज्ञान उपदेश देकर समझाते हैं- यह अविवेक है, यहाँ कोई देवता आदि नहीं... अतः ये जो वस्तुएँ आपने कुँए में डाली हैं वह वस्तुएँ ग़रीब ज़रूरतमंदों में बाँटो तो तुम्हारा भला भी होगा और उनका आशीर्वाद भी मिलेगा। कुँए में डालने से तो पानी भी खराब होगा और गंदगी भी होगी... इसलिये विवेक से काम लो। जिस कार्य- कर्म करने में भलाई हो वह नेक कर्म करो... जिनसे तुम्हारा कल्याण हो। कर्म कैसे करने चाहिए? कल्याण कैसे होगा? मानव चोला कैसे सफल होगा? ऐसी अनेक शिक्षाएँ श्री गुरुदेव भगवान ने उन्हें बतलाईं।

इसी प्रकार श्री गुरुदेव भगवान सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने संत मण्डली के साथ देशारटन करके अज्ञानता व अंधश्रद्धा में फँसे जीवों को सत्यता का मार्ग दिखलाया। स्वामी जी ने तो सभी को माँस- मछली, अण्डा, शराब, जुआ व अन्य दुर्व्यवसनों से छुटकारा कराने के लिए अनेक लोगों से प्रतिज्ञा- संकल्प भी कराये कि आज से ही हम कभी भी अखाद्य वस्तुएँ, अशुद्ध-अपवित्र भोजन नहीं खायेंगे और न ही कोई व्यसन करेंगे।

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

위 **5**

Š

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

ॐ श्री स त्

स त् ना म

म सा क्षी **५**

3% श्री स त् ना म सा

म साक्षी **५** ॐ श्री स्

त्ना म साक्षी **५५** % श्री स त्ना म सा

1.3% 射形 有一 中 把 器 5.3% 射 形 有 一 中 把 器

卐

'ॐ श्री सतुनाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा– ५४

सौ डाकुओं का हुआ हृदय परिवर्तन

जब युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की यश-कीर्ति चहुँ ओर बढ़ने लगी। लोग दूर-दूर से स्वामी जी की डिब पर दर्शन करने के लिये आने लगे। भक्तों की प्रतिदिन भीड़ उमड़ती रहती थी। सभी धन गुरु टेऊँराम... धन गुरु टेऊँराम... के जयकारे लगाते रेत के टीले के ऊपर डिब का दर्शन और गुरुदेव की आशीर्वाद पाने पहुँचने लगे। तब वहाँ के मशहूर सौ डाकुओं का समूह मन-ही-मन सोचने लगा कि इस फकीर के पास लगता है बहुत सारा धन माल होगा क्योंकि इनके पास प्रतिदिन बहुत से लोग दर्शन करने जाते हैं। आज हम सभी इसी संत-फकीर की दरबार को ही लूटेंगे... ऐसा विचार कर एक दिन सभी डाकू अस्त्र-शस्त्र हाथों में लेकर टण्डाआदम स्थित स्वामी जी की पवित्र डिब्-दरबार पर पहुँचने लगे। उनकी भावना थी कि सभी को मारकर साज-सामान लूटकर ले आयेंगे। इन भले मानुषों को ये क्या मालूम कि जिसे तुम लूटने जा रहे हो वह कौन सी शक्ति है... किस निराकार परमात्मा के पास जा रहे हैं... वह इन बातों से अल्पज्ञ नादान थे। धीरे-धीरे वह सौ डाकूओं का समूह दरबार में प्रवेश कर रहा था। हमारे शास्त्र बतलाते हैं कि स्थान-स्थान का अपना प्रभाव होता है। **पावन स्थल/धाम पर** पहुँचते ही मन की तरंगों में परिवर्तित सा होने लगता है पवित्र स्थान पर पहुँचते ही मन पवित्र और शुद्ध हो जाता है... ऐसा ही उन डाकुओं के साथ भी होने लगा। ज्यों-ज्यों डिब् दरबार में ऊपर चढ़ते गये उनका मन शुद्धात्मा के रूप में परिवर्तित होने लगा... जैसे ही मुख्यद्वार पर पहुँचे... वहाँ कृपानिधान, भक्त वत्सल श्री गुरुदेव भगवान उन्हें आदर-सम्मान से अन्दर ले आये और करुणा की अनन्य मूर्ति स्वामी जी ने उनसे कहा- आओ, आओ- भक्तों! आप हमारे अतिथि हैं... हम आपकी क्या सेवा करें... गुरुदेव भगवान की अहेतूकी कृपा उनके ऊपर भरपूर बरस रही थी... थोड़ी देर बाद स्वामी जी अपने आसन पर विराजमान हुए। सत्संग गंगा प्रवाहित होने लगी। स्वामी जी अपनी मौज-वैराग्य भरी मस्ती में भजन- सत्संग करने लगे। सैकड़ों श्रद्धालु भाव से सत्संग श्रवण करने लगे। वे डाकू लोग भी ध्यान से सत्संग व दर्शन का लाभ लेने लगे।

मुस्लिम भक्तों ने किया - आदर सहित सलाम। गाया तब गुरुदेव ने - विरही एक कलाम।।

स्वामी जी की नूरानी नज़रें अर्थात् कृपादृष्टि उन डाकुओं पर पड़ रही थी। देखते ही देखते उनका मिलन मन पिवत्र होने लगा... आँखों से अश्रुधार बहने लगी... उन्हें गुरुदेव में साक्षात् रब का दीदार-दर्शन होने लगा... ये दरवेश-फकीर कोई साधारण मानव नहीं लगता... सत्संग समाप्ति पर पूरा सौ डाकुओं का समूह व उनके सरदार ने स्वामी जी के समक्ष अपनी पगड़ी उतारकर श्रीचरणों में रख दी... और कहने लगे- हे दर्वेश-फकीर सांई! हम तो आपको लूटने आये थे लेकिन आपके प्रेमपूर्ण व्यवहार-सत्संग-दर्शन ने तो हमारे दिल को ही लूट लिया। हमने ऐसा दर्वेश-संत कहीं नहीं देखा... आप तो साक्षात् ईश्वर- रब के अवतार लग रहे हैं! तत्पश्चात् महाप्रसाद ढ़ोढा-चटणी खाकर पिवत्र मन होकर चले गये। श्री गुरुदेव के दर्शन-सत्संग से आगे चलकर उनका मन ऐसे तो परिवर्तित हुआ कि वे लूटपाट-हिंसा-चोरी छोड़कर अच्छे इन्सान बन कर अपने शेष जीवन को व्यतीत करने लगे और अनेकों बार श्री अमरापुर दरबार डिब पर सेवा आदि करके अपने जीवन को धन्य-धन्य किया।

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

纲

स

त्

ना

म सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

ॐ श्री

स

त्

ना

म

सा

3ॐ श्री स त्

स त् ना म

म सा क्षी **५**

ॐ श्री स त्

ना म सा क्षी **५**5 ॐ

3% श्री स त् ना म

> क्षी **55** % श्री स त्ना म

म साक्षी **५** ॐ श्री

फ 3ँ श्री स त्ना म साक्षी

卐

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा– 55

कुँआ जल से लबालब भर गया.....

कूप नीर जब चुक गया, भक्तनि करी पुकार। सत्गुरु छींटा मार तब, प्रकट करी जल धार।।

एक समय की बात है चैत्र मेले का अवसर था। श्री अमरापुर दरबार (डिब्र) पर विशाल मेला लगा हुआ था। एक ओर भजन ज्ञान-गंगा प्रवाहित हो रही थी तो दूसरी ओर भोजन-भण्डार खुला था... भक्तों की भीड़ का आलम भी बेहिसाब था... आध्यात्मिक भक्ति-ज्ञान से मेले की शान निराली थी। सभी संत-भक्त अपनी सेवाओं में तत्पर.... गुरु दरबार की जल सम्बन्धी जरूरतों के लिए दरबार परिसर में एक कुँआ बना हुआ था और इसी के जल से भोजन भण्डारा भी तैयार हो रहा था कि अचानक इस जल स्त्रोत कुँए का पानी समाप्त हो गया.... तब भण्डारी मंघरराम और संत सेवाधारी सभी घबराते हुए आये... सर्व समर्थ अवतारी युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के पास और प्रार्थना करने लगे- हे प्रभु! कृपा करो, कुँए से जल नहीं आ रहा है.... बिना जल के भोजन भण्डारा कैसे तैयार होगा? इतने सारे भक्तजनों के लिये भोजन बनाना है.... प्रभु! अब आप ही कृपा करो.... जिससे जल की व्यवस्था हो सके....

अवधूती मौज में बैठे थे समर्थ सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज! सारा वृतान्त सुनकर उठ खड़े हुए और बोले- चलो, हम जल देवता को प्रार्थना करते हैं.... बस! फिर क्या था....

स्वामी जी आये उस कुँए के पास... जल के देवता वरुणदेव से प्रार्थना की एवं • श्री सत्नाम साक्षी... सत्नाम साक्षी... दो तीन बार महामंत्र अभिमंत्रित कर चिप्पी से जल का छींटा कुँए में डाला.... कुछ क्षण बाद ही उपस्थित सभी संत भक्तजन क्या देखते हैं कि कुँए में जल की गड़गड़ की आवाज आने लगी है.... और कुछ ही देर में देखते–देखते जल से ऊपर तक कुँआ लबालब हो गया। यह आश्चर्य देखकर सभी संत–सेवाधारी विस्मित हो उठे और अगले ही क्षण उनके मुख से निकला– धन गुरु टेऊँराम.... धन गुरु टेऊँराम....

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

麲

स त्

ना

म

सा

क्षी

55

ॐ श्री

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

άE 纲 स

त् ना म

सा क्षी 卐

Š 纲 स त् ना म

सा क्षी 55 άE 纲 स त् ना

म सा क्षी 卐 άE 纲

स त् ना म सा

क्षी **5**5 άE 纲 स

त् ना म

सा

क्षी

卐

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा– 56

रेत के कण – बाबा की कृपा से – हुए मिढाई के मण

सिन्ध प्रदेश के टण्डाआदम में स्थित युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का रेत के ऊपर बना विशाल श्री अमरापुर दरबार (डिब्) जिसमें चहुँ ओर रेत ही रेत.... जगह-जगह मिट्टी के टीले.... टीले पर बना श्री अमरापुर दरबार.... दरबार पर रहने वाले संत-महात्मा और सेवादारी....

एक समय महाराजश्री भजनानन्द की मस्ती में थे। वैराग्य का अनोखा आलम मुखमण्डल पर शोभित हो रहा था। स्वामी जी आश्रम में चारों ओर भ्रमण कर रहे थे। दोपहर का समय.... भोजन की घंटी बजी.... सभी सेवादारी, संत-महात्मा भोजनालय स्थल पर पहुँचे.... सभी पंक्तिबद्ध कतार में भोजन प्रसादी ग्रहण करने हेतु बैठे थे। यहाँ एक बात ध्यान देने योग्य है.... उस वक्त पक्का स्थान बना हुआ नहीं था.... ऐसे में टीलें के ऊपर लीप-पोतकर उसे अस्थायी भोजनालय का रूप दिया गया था। आस पास रेत ही रेत होती थी। आँधी तूफान आने पर चारों ओर रेत ही रेत की चादर बिछ जाती थी।

उस समय महाराजश्री भी लाठी लेकर आश्रम की देख-रेख कर रहे थे। भोजन की घंटी बजने पर सभी संत-महात्मा कतारबद्ध बैठे थे। तब महाराजश्री वहाँ पहुँचे। सभी संत सेवादारी स्वामी जी को देखकर के प्रसन्नचित होकर उठ खड़े हुए....

कब कौनसी लीला करते हैं बाबाजी! कुछ अता-पता नहीं.... प्रसन्नचित मुद्रा में सभी को बैठने का संकेत किया।

भोजन परोसने वाले सेवादारियों ने संत-महात्माओं को थाली देकर..... भोजन प्रसादी को परोसा.... सभी को भोजन मिल चुका था। मंत्र पढ़कर भोजन प्रसादी शुरू होने वाली थी। उसी समय चली तेज हवा.... तूफान की तरह.... चारों ओर रेत फैल गयी। जहाँ संतजन बैठे हुए थे उनके भोजन की थालियों में रेत पड गयी.... अब संतजन भोजन खाने को मना करने लगे, बोले- इस भोजन में रेत पड गयी है.... अतः रेत पडा भोजन हम नहीं खा सकते....

तब सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने अद्भुत लीला रची.... महाराजश्री ने बड़े ही मृदुल भाव से कहा- आप सब भगवान का प्रसाद समझकर इसे खायें.... आप समझना कि येरेत नहीं मीठा प्रसाद है.... देखो! महाराजश्री की वाणी में थी अद्भुत शक्ति.... ऐसा भाव बनाकर सभी ने भोजन प्रसादी खाना शुरू किया.... जैसे ही पहला कौर मुख में रखा तो सचमुच भोजन में एक भी रेत का कण नहीं दिखाई दिया.... सारे चावल मीठे लगने लगे.... यह लीला देखकर सभी को बड़ा आश्चर्य लगा! यह कैसे संभव हुआ और फिर बड़े स्नेह भाव से सभी संत- महात्मा भक्तजनों ने भोजन ऐसे थे अचल प्रकृति को भी अपने वश में रखने वाले अवतार कोटि के प्रसादी ग्रहण की। महापुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज!

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

άE

纲

स

त्

ना म

सा

क्षी

55 άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

क्षी

55

άE 纲

स

त्

ना

म

सा

3% श्री स त्

त् ना म

सा क्षी **५**

ॐ श्री स त् ना म

सा क्षी **५** ॐ श्री स

त् ना म सा क्षी **५**

हा **५५** ॐ श्री स त्ना म

सा क्षी **५** 3% श्री स्

ना

म

सा

क्षी

卐

30

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा– 57

गुरुदेव की कृपा से हुआ श्वान (कुत्ते) का उद्धार

एक समय प्रातःकाल युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज सिन्धु नदी पर स्नान के लिये जा रहे थे। मार्ग में एक गरीब बुढ़िया ने स्वामी जी को प्रार्थना की, देखो! भगवान के नाम पर इस मेहतरानी को समझाओ.... मेरे घर के बाहर एक कुता मर गया है... मैं उसे उठाने के लिये दो आने दे रही हूँ पर ये मेहतरानी चार आने माँग रही है। मैं बहुत गरीब हूँ, मेरे में चार आने देने का सामर्थ्य नहीं है। मेहनत-मजदूरी करके जैसे-तैसे अपना जीवन निर्वाह करती हूँ.... अतः आप इसे समझाओ।

तब महाराजश्री ने भी मेहतरानी को बहुत समझाया। ये गरीब बुढ़िया है। कृपया आप दो आने लेकर कृते को ले जाओ पर वह मेहतरानी नहीं मानी.... अतः स्वामी जी भगवान की सेवा व माता की दिरद्रता देखकर स्वयं ही कृते को रस्सी से बाँधकर दूर खड्डे में फेंक आये और सिन्धु नदी में स्नान कर प्रभु चिन्तन में लीन हो गये।

इक बुढ़िया के द्वार पर, पड़्यो देख मृत श्वान। छाड्यो जा दरियाह में, सब में लख भगवान।।

इस कार्य को देखकर मेहतरानी झाड़ू गली में फेंककर चिल्लाने लगी.... पंचायत में शिकायत कर दी। संत ने हमारी रोजी-रोटी पर लात मारी है.... इस प्रकार के कार्य अगर संत जी करने लग जायेंगे तो हम लोग तो भुखे मर जायेंगे....

आखिरकार पंचायत की बड़ी सभा लगी। बहुत वाद-विवाद हुआ। पक्ष-विपक्ष में अनेक सवाल-जवाब हुए। अंत में सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने विनम्र भाव से सभा में कहा-

> मैं निकस्यो अपने घर सो, इक द्वार खड़ी बुढ़िया महतारी। जो मृत श्वान के काज हरिजन, सो विनती करके थकहारी। माँगत दाम हरीजन जो वह, दे निहं पाय गरीब विचारी। मोंसो कही हम काढ़ लियो, हरिनाम महातम जान के भारी।।

किसी गरीब पर दया करना कोई अधर्म है, पाप है? मूक प्राणी भी प्रभु परमात्मा की संतान हैं। केवल देह का अन्तर है। गरीब बुढ़िया माता के कहे अनुसार हमने भी मेहतरानी को बहुत समझाया कि आप दो आने लेकर कुते को फेंक आओ.... पर वह नहीं मानी। अर्थात् मन में दया भाव रखकर कुते को हमने खड़डे में डाल दिया। इसमें कौन सा बड़ा पाप किया है? या कौन सा दोष है? स्वामी जी का कथन सुनकर पंचायत के सभी लोग शान्त हो गये। संत तो क्षमा व दया के रूप होते हैं। सभी लोगों ने क्षमायाचना की.... स्वामी जी के इस प्रेरणादायी प्रसँग से सभी बहुत प्रभावित हुए।

कहा जाता है कि सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने जैसे ही उस कुत्ते को खड्डे में डाला- उसी क्षण वह श्वान एक दिव्य पुरुष बनकर अर्न्तध्यान हो गया और उसे परम पद प्राप्त हो गया।

शतु-शतु नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

Š

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी **५**५

άE

纲

स

त्

ना

म

सा क्षी

55

ॐ श्री

स

त्

ना

म

सा

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

Š

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

Š

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा– 58

डूबती नैया को पार लगाना.....

एक समय युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज संत मण्डली व कुछ भक्तों के साथ किसी अन्य क्षेत्र में सत्संग-भजन कर पुनः टण्डाआदम श्री अमरापुर स्थान पर आ रहे थे। किन्तु मार्ग में आते समय सिन्धु नदी पार करनी थी। सँध्याकाल का समय था। एक मल्लाह नाव लिये खड़ा था। संत व भक्तों के आग्रह पर उस नाविक ने सभी संत-महात्माओं को अपनी नाव में बैठाया.... नौका धीरे-धीरे चल रही थी। स्वामी जी समाधि लगाये ध्यानस्थ थे। संतगण व भक्तजन हरिसंकीर्तन व भजन में मस्त थे।

अचानक मल्लाह की निगाह सिन्धु नदी में दूर से आ रही लहरों पर पड़ी.... हवाओं की तेज रफ्तार.... ऊँची-ऊँची लहरों का उठना.... तेज तूफान की आशंका... नाव थी सिन्धु नदी के बीचों बीच.... नाव का डगमगाना..मल्लाह को कुछ समझ नहीं आ रहा था.... अब क्या करूं? और कुछ देर ये मौसम चला तो अनर्थ हो जायेगा.... इतना जल्दी नाव किनारे पर ले जाना किठन था। समझ के बाहर की स्थिति.... स्वामी जी के मुखमण्डल पर ब्रह्मानन्द की मौज.... भजनानन्द की मस्ती.... वृति एकाकार.... समाधिस्थ.... मल्लाह को अब एक ही सहारा था सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का! उसने बड़े स्नेहयुक्त श्रद्धाभाव से स्वामी जी को प्रार्थना की- हे मालिक! अब आप ही हमारी रक्षा करो, आप ही हम सबके खेवनहार हो.... भव सागर से तो आप पार करते ही हो, पर अब भँवर में फँसी इसी नैया को पार कर सभी को जीवन दान दो....

माँझी को जब समझ न आई, हाथ जोड़ बोला। तीव्र वेग जल रात अन्धेरी, नैया ले हिचकोला। कुछ भी समझ न उसको आये, मनवा देख देख डर जाये, मेरी बुद्धि नहीं करती कुछ काम।।

स्वामी जी भगवद् लीला को देखकर मन्द मन्द मुस्करा रहें थे। उन्हें तो किसी प्रकार का कोई भय था नहीं... . सिन्धु नदी के तीव्र वेग को देखकर स्वामी जी ने अपने वृहद् हस्त से बस इशारा कर दिया.... लहरों का उठना शनै:-शनै: कम होने लगा.... स्वामी जी के आशीर्वाद से सिन्धु नदी का मार्ग साफ व स्पष्ट दिखायी देने लगा। तब स्वामी जी ने माँझी (मल्लाह) से हाथ का इशारा करके कहा- अब तुम इस मार्ग से चलो.... हाथ उठाकर स्वामी जी बोले- नाव को इस ओर ले चलो- भाई...

हाथ उठाकर सद्गुरु बोले। नाव को ले चल भाई। जो सद्गुरु की राह चले-वो नैया डूब ना पाई। जो सद्गुरु का ले सहारा- उसको मिल जाता किनारा, सद्गुरु पार करेंगे पल्ला ले तु थाम।।

बस! फिर तो श्री गुरु महाराज जो की कृपा से रास्ता स्वयं ही नजर आने लगा। सिन्धु नदी शांत होकर बहने लगी.... धीरे-धीरे नाव किनारे लग गयी.... सभी संतगण व भक्तजन सद्गुरु देव भगवान की लीला को देखकर आश्चर्य में पड़ गये। जिनके साथ स्वयं परमात्म स्वरूप सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज रक्षक के रूप में हो। उन्हें किस बात की चिन्ता.. उन्हें पता होता है हमारा खेवनहार-पालनहार हमारे साथ है.... ऐसा विश्वास हर भक्त का अपने श्री गुरुदेव के प्रति होना चाहिए।

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

30

麲

स

त्

ना

म सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

ॐ श्री सत्नाम साक्षी फ ॐ श्री सत्नाम साक्षी फ ॐ श्री सत्नाम साक्षी फ ॐ श्री सत्नाम साक्षी फ

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

ॐ श्री

स

त्

ना

म सा

क्षी

卐

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा– ५९

सच्चा सौदा नाम का.....

नीच ऊँच निर्धन धनी, सब में लख कर्तार। कह टेऊँ शुद्ध भाव से, सबका कर सत्कार।।

सृष्टि के पालनहार परमात्मा सबको चला रहे हैं। क्या तेरा, क्या मेरा, कुछ नहीं। सर्वत्र परमात्मा ही परमात्मा.... अपनत्व भाव....

ऐसे ही परमात्म स्वरूप उदारता की साक्षात् मूर्ति युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज.... जिनकी बाल्यावस्था से ही वृति परमात्मा से जुड़ी हुई थी। किन्तु लौकिक मान-मर्यादाओं को ध्यान में रखकर परिवार में बड़ों की आज्ञा में रहना उनका परम ध्येय था। पिता श्री चेलाराम के देवलोक गमन के पश्चात् उनके बड़े भ्राता श्री टहलरामजी पूरी जिम्मेदारी से कार्य भार सँभालते थे। कार्यों में हाथ बटाने के उद्देश्य से स्वामी जी को भी दुकान का कार्य भार सँभालने के लिये कहा गया।

जो संसार में जीवों का उद्धार करने के लिये आये हों, उन्हें भला सांसारिक व्यवहार से क्या काम.... फिर भी माताश्री व बड़े भ्राता की आज्ञानुसार प्रतिदिन लोक व्यवहार की तरह दुकान खोलते थे। जिनका मन परमात्मा से जुड़ा हो, वह सदैव परमात्मा के नाम का ही सौदा करता है.... उन्हें व्यावहारिक सौदे से क्या काम.... अपनी दुकान पर लिखवा दिया-

सच्चा सौदा नाम का, झूठा सब व्यवहार। नाम जपे चलता रहे, जग का कारोबार।।

परमात्मा को ही सब कुछ मान लिया। दिन भर राम-नाम रूपी सौदागरों की कतारें लगी रहती.... सत्संग, भजन-कीर्तन की बहार.... सन्त-महात्माओं की सत्संग सभा.... आध्यात्मिक ज्ञान चर्चा.... सभी भक्त ज्ञान सरोवर में लगाते डुबिकयाँ.... बस! सच्चा सौदा नाम का....

जो कोई भी दुकान पर आता.... आवश्यकतानुसार वस्तु ले जाता.... कोई हिसाब-किताब नहीं.... जिसे चाहिए पैसा रख जाए तो ठीक, न रखे तो भी ठीक.... सब कुछ भगवान भरोसे.... सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज तो अपनी भक्ति में मस्त.... परमात्म के रंग में रंगे.... गरीब-अनाथों को तो मुफ्त में ही सामान दे देते....

ऐसा अलौकिक व्यवहार जब उनके बड़े भाई को पता चला कि स्वामी जी दुकान का सामान गरीब-अनाथों को लुटा रहा है। सारे दिन संतों को बैठाकर भजन-कीर्तन कर रहा है तो बहुत नाराज हुए। कुछ भला-बुरा भी कहा पर, स्वामी जी की अपनी मौज, भक्ति का अनोखा आलम....

आशिकिन जो मनु, खुटे ना खजानो। हेदा अचे किन, होदा रवानो।।

स्वामी जी मौन रहे, कुछ भी न बोले। कुछ समय बाद भाई टहलराम ने जब दुकान का कार्यभार संभालकर हिसाब- किताब लगाकर देखा तो आश्चर्य में पड़ गये। जहाँ नुक्सान होना चाहिये वहाँ लाभ ही लाभ.... आवश्यकता से अधिक मुनाफा.... इतना लुटाने के बाद भी लाभ....अचिम्भित....

ये कैसी लीला! आश्चर्यजनक! समझ से बाहर.... तभी कहा गया है-

'तेरी माया का न पाया, कोई पार कि, लीला तेरी तू ही जाने'....

ये होती है भक्ति में शक्ति! जो सर्वत्र भगवान को समर्पित हो जाते हैं। उनका सारा कार्यभार परमात्मा स्वयं पूरा करते हैं। सदैव प्रभु भक्त का मान रखते हैं।

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

網

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

網

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

🕉 श्री सत्नाम साक्षी 🖪 🕉 श्री सत्नाम साक्षी 🖫 🕉 श्री सत्नाम साक्षी 🖫 🕉 श्री सत्नाम साक्षी 🖫

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

Š

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

Š

纲

स

त्

ना

म

सा

ধੀ 55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा– 60

बिन सावन बरस पड़ती है – जमकर वर्षा.....

जींय सागर बेअंत आ- तिंअ बेअंत फकीर! जो कम न करे अल्लाह- सो कम करे फकीर!!

एक दिन **युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज** भक्तिरस की मस्ती में मस्त बैठे थे। कौन जानता है सिद्ध महापुरुषों की अद्भुत लीला! तीव्र गर्मी.... भगवान भास्कर की प्रचंडता.... तपती रेत.... गर्म हवाओं से सभी व्याकुल... मध्यान्ह का समय!

महाराजश्री ने संत मण्डली व भक्तों से कहा- चलो अभी हम सब चलते हैं एक भक्त के घर.... सभी संत हैरान! इतनी तीक्ष्ण गर्मी, लू की भरमार.... पर महाराजश्री की आज्ञा थी। योगियों की तरह रमण करने वालों के लिये क्या धूप क्या छाँव.... अपनी मस्ती का आलम....

गर्मी में चलकर सभी - संत हुए बेहाल। विनती सुन गुरुदेव ने - वर्षा की तत्काल।।

महाराजश्री पूरी मण्डली सहित गाते-बजाते, भिक्त सरोवर में डूबे चलते चले जा रहे उस भक्त के घर की ओर.... पसीने से लथपथ, गर्मी- लू से बैचेन.... तभी साथ में चल रहे सभी भक्तों व संतों ने महाराजश्री को विनम्र भाव से प्रार्थना की- हे प्रभु! गर्मी बहुत हो रही है, सूर्य देवता की तपन भी बहुत है.... हम सभी बड़े व्याकुल हो रहे हैं.... आप कृपा करो कि मौसम ठण्डा हो जाये.... आप तो स्वयं अन्तर्यामी भगवान हैं। सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज जो उस समय भी भजनानन्द की मौज में ही थे-

फकीर जी मोहब्बत- फकीर जी रहमत, फकीर राजी- अल्लाह राजी!

तार परमात्म तत्त्व से एकाकार.... भक्ति का अनोखा आलम.... शरीर का भान नहीं.... उस आत्मानन्द के आनन्द को कौन समझे! स्वामी जी ने एकाएक तम्बूरे की तान को छेड़ते हुए भक्ति भाव से गाया एक भजन-

> राग जो सांरग तुमने छेड़ा-बादल घिर घिर आये। पतझड़ दूजे ही पल देखो - सावन सा लहराये। सब पे तेरा है अधिकार - तेरी लीला अपरम्पार। तेरे हाथ में सारी - सृष्टि की लगाम।।

भजन में था इतना रस और भाव.... जो इन्द्र देवता भी नहीं रोक पाए अपने आप को.... घनघोर घटा के साथ जमकर बरस पड़े बदरा.... उस वक्त का दृश्य भी अलौकिक था! जिसने प्रत्यक्ष देखा होगा वह ही जाने.... मौसम हो गया सुहावना.... बरस रही थी बरखा रानी.... सभी भक्तों का तन मन हो गया शीतल! ऐसी लीलाओं का वर्णन जीवन-चिरतामृत में ३-४ बार आया है। जब-जब भक्तों ने पुकार करी- तब तब वर्षा हुई... महाराजश्री को इन्द्र देवता ने किया प्रणाम.... तो ऐसे थे सिद्ध लीला पुरुषोत्तम अवतारी महापुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज!

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

麲

स

त्

ना

म

सा क्षी

卐

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

🕉 श्री सत्नाम साक्षी \rfloor 🕉 श्री सत्नाम साक्षी 🔄 🕉 श्री सत्नाम साक्षी 🗲 🕉 श्री सत्नाम साक्षी 🛏 🕉 श्री सत्नाम साक्षी 🖼

άE 纲 स त्

ना

म सा क्षी

卐 Š 纲 स त् ना

म सा क्षी 卐 Š 纲

स त् ना म सा क्षी 卐

άE 纲 स त् ना म

सा क्षी **5**5 άE 纲 स त्

ना

म

सा

क्षी

卐

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा- 61

डिब के नाम से प्रसिद्ध हुआ – स्वामी टेऊँराम का श्री अमरापुर दरबार

सैलानी फकड़ बाबा युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज एक दिन निकल पड़े एक गहन जंगल की ओर... . जंगल में था एक बड़ा रेत का टीला.... उठाई अपनी लाठी और चिप्पी और चढ़ गये उस रेत के टीले के ऊपर.... बैठ गये भोले बाबा समाधि लगाकर उस टीले पर.... हो गये निर्विकल्प समाधिस्थ.... कौन जानता है मौजी फकीरों की रमझ! एक बार जिस स्थान पर आसन जमा लिया, बस फिर हो जाते हैं ब्रह्मनिष्ठ.... एक बार मन में जो ठान लिया, उसे अवश्य ही पुरा करते थे।

एक तो रेत का टीला, दूसरा उस पर आश्रम का निर्माण करना, बड़ा कठिन.... आश्चर्यजनक.... असंभव.... महापुरुषों के मन में जो संकल्प आया वह समय पाकर अवश्य ही पूरा होता है। सिद्ध संतों के मन में संकल्प भगवान की प्रेरणा से ही आता है। तप-तपस्या भक्ति का प्रभाव.... समय अनुसार बना उसी रेत के टीले के ऊपर एक बडा आश्रम.... अनेक कष्ट-दु:खों के शुल भी सहन करने पड़े। बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा पर भक्ति-तप के सामने कोई नहीं ठहर पाया।

लगभग दो सौ चौतीस एकड से भी अधिक, नैसर्गिक वातावरण, चहुँ ओर रेत ही रेत के टीले.... दिन में गर्मी तो रात में ठण्डी हवाओं के झोके। उसी टीले पर बनाया सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने विशाल आश्रम ! जहाँ २५-३० कच्ची कुटियाएँ, सत्संग मण्डप, चबूतरा, गौशाला, कुँआ, खेती-बाड़ी, बाग़-बग़ीचा, कोठार, भण्डारगृह.... भव्यता का अद्भुत नजारा! प्रतिदिन प्रातःकाल ४ बजे घंटी बजते ही साधू-संत उठकर अभ्यास व ध्यान में बैठते।

स्वामी जी द्वारा नित्य प्रति योग वशिष्ठ की कथा करना... तत्पश्चातु स्नान, पूजा-पाठ और गुरु आश्रम की सेवा... भोजन की घंटी बजने पर सभी संत, सेवाधारी भण्डारे में एक साथ भोजन-प्रसादी ग्रहण करते। भक्ति, आस्था -आध्यात्मिक चर्चा का अनोखा संगम.... आठों पहर भक्ति, ज्ञान, वैराग्य का आनन्द ही आनन्द....

एक दिन सभी संत-महात्माओं ने मिलकर स्वामी जी से प्रार्थना की कि हे प्रभृ! इस पवित्र स्थल का कोई नाम होना चाहिए.... जिसके नाम से यह आश्रम जाना जा सके। उस समय सभी के अन्तर्मन में यह भी था कि इस पावन स्थल को भविष्य में किसी सिद्ध स्थल के नाम से प्रसिद्धि प्राप्त हो।

भगवद् प्रेरणा धारण कर महाराजश्री ने कहा- इस शहर (टण्डोआदम) के पूर्व में अखण्डपूरी, पश्चिम में कुन्दनपुरी, उत्तर में गुजरानपुरी और यह आश्रम दक्षिण में है.... अर्थात् यहाँ पर जो कोई भी आएगा वह जन्म- मरण के चक्कर से छूटकर अपने स्वरूप को पहचान कर अमर हो जायेगा.... अतः इस स्थान का नाम (अमरापुरी) 'श्री अमरापुर स्थान 'रखते हैं... तब से उस स्थान का नाम श्री अमरापुर स्थान (डिब्) के नाम से प्रसिद्ध हुआ। यह भगवद् संकल्प शक्ति से बना पवित्र स्थल, जीवों का उद्धारक एवं कल्याणकारक होगा।

रेत के टीले पर बना (तप-तपस्या, भक्ति का पवित्र सिद्ध स्थल) आज भी यह ऐतिहासिक तीर्थ स्थल टण्डाआदम में श्री अमरापुर स्थान (डिब्) के नाम से प्रसिद्ध है। वही पुरानी स्मृति संजोया महाराजश्री द्वारा बनााया गया कुँआ, गौशाला, छोटी-छोटी संत कुटियाएँ एवं विशाल मुख्यद्वार... उस पर अंकित सतुनाम साक्षी व श्री अमरापुर दरबार, उन स्मृतियों को पुनः हरा-भरा कर रहा है। इसका जीर्णोद्धार भी मूल स्वरूप को बिना छेड़े प्रेम प्रकाश मण्डल सिंध द्वारा करवाया गया है।

अब वर्तमान में उसी का प्रारूप लघु काशी कही जाने वाली गुलाबी नगरी जयपुर में श्री अमरापुर स्थान (डि<u>ब</u>) के नाम से सुविख्यात है। युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की भक्ति, तपस्या इस स्थल के कण- कण में विद्यमान है। यह अनेक संत- महात्माओं की तपःस्थली है। इसी स्थल पर आचार्यश्री व स्वामी सर्वानन्दजी महाराज का समाधि स्थल बना हुआ है।

श्री अमरापुर स्थान यथा नाम तथा गुण को चरितार्थ करते हुए जो भी सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के (डि<u>ब</u>) श्री अमरापुर स्थान का एक बार भी दर्शन करेगा वह जन्म-मरण के चक्कर से छूटकर अमरत्व को प्राप्त हो जायेगा। डिब अर्थातु रेत के टीले ऊपर बना सिद्ध स्थल... सिद्ध महापुरुषों की पवित्र पूजनीय तपोभूमि श्री अमरापुर दरबार (डिब) को शत्-शत् नमन!

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

網

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

ॐ श्री

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

Š

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा– 62

तप बल से हिला इन्द्रासन

एक दिन युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज एकांत जंगल में तपस्या में तल्लीन थे। शरीर की सुध-बुध नहीं! एकाएक अचल प्रकृति भी हिलने-डुलने लगी। ऐसा कौन-सा तपस्वी महापुरुष.... जिसके कारण वसुन्धरा भी डगमगाने लगी.... इन्द्रासन हिलने लगा.... स्वर्गलोक भी कपांयमान.... सभी देवगण व्याकुल.... आखिर ऐसी कौन सी शक्ति है जिसके कारण सारे लोकों में भयता छा गयी है....

निज कर कुटी बनाय ली, कीनी तपस्या घोर। भान नहीं कुछ समय का, सांझ भयी या भोर।।

देवों ने अपनी दिव्य शक्ति के द्वारा मालूम किया कि कोई महायोगी तपस्वी भूलोक में तपस्या कर रहा है। तब देवराज इन्द्र ने तपस्या भंग करने के लिये 'महामाया (एक सुंदर युवती) का रूप बनाकर 'महाराजश्री' के पास भेजा। 'महाराजश्री' तपस्या में लीन.... ब्रह्मिचन्तन में स्थित.... योग साधना में आरूढ़.... ब्रह्मवेला का समय.... एकांत स्थान पर पद्मासन लगाये समाधिस्थ....

माया आई मोहने, धार मोहनी रूप। जान लियो गुरुदेव ने, महिमा अमित अनूप।।

महामाया देवकन्या ने विचलित करने के लिये बहुतेरे यत्न किये। मधुर संगीत के साथ मनमोहक नृत्य.... कुछ समय पश्चात् 'महाराजश्री' की जब आंखें खुलीं। इस घने जंगल में महासुन्दरी.... मन ही मन ध्यान लगाया.... अन्तर्यामी प्रभु समझ गये.... जरूर देवताओं द्वारा भेजी गयी महामाया है.... इसने सारी दुनिया को भ्रमित कर रखा है.... अनेक रूप धारण करके बड़े-बड़े ऋषि-मुनियों को इसने भुलाया है....

तब महायोगी सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने माया को देखकर कहा- 'तुम सबको मोहने वाली देवताओं के द्वारा भेजी गयी 'महामाया' हो न....' इतना सुनते ही वह माया भयभीत हो गई और घबरा गई।

माया काँपती हुई बोली- 'हे प्रभो! मुझे देवराज इन्द्र ने आपकी परीक्षा के लिये भेजा है.... आप इतनी घोर तपस्या क्यों कर रहे हैं..? मैं आपकी भक्ति तपस्या के आगे ठहर नहीं सकती....'

ये थी भक्तिमें शक्ति...जिसके सामने माया भी नहीं टिक सकती....

जिन्हें किसी भी वस्तु-पदार्थ-पद-प्रतिष्ठा की आवश्यकता नहीं.... उन्हें किसका भय.... वे तो निर्भय होकर भजन करते हैं। वे सांसारिक पदार्थ तो क्या, मोक्ष तक की कामना नहीं करते।

तब महाराजश्री के सामने माया ने अपना परिचय दिया- मैं सारे संसार को विस्मित करती हूँ। मेरा पित मन है, गुरु कलयुग है और काम-क्रोध विषय विकार मेरे बलवान पुत्र.... जिससे सारे संसार को अपने वश में कर रखा है। जो संयमी हो और इच्छारहित हो भगवद् भजन करते हैं! उनके सामने मैं कैसे ठहर सकती हूँ? अतः आप मुझे क्षमा करें प्रभू!

अन्त में 'महाराजश्री' ने महामाया से कहा- 'आप देवराज इन्द्र को कह देना... हमें किसी पदार्थ अथवा इन्द्रपद, स्वर्गलोक आदि की कोई इच्छा नहीं। हम तो ब्रह्मलोक के वासी हैं.... उसी लोक में जाने के लिये तपस्या करते हैं। अमरलोक से आगमन, अमरलोक प्रस्थान। इतना सुनकर 'महामाया' 'श्री गुरुदेव' को प्रणाम करके चली गई। ये होती है भक्ति में शक्ति, जिसके सामने देवता भी नतमस्तक हो जाते हैं।

शतु-शतु नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

ॐ श्री सत्नाम साक्षी फ ॐ श्री सत्नाम साक्षी फ ॐ श्री सत्नाम साक्षी फ ॐ श्री सत्नाम साक्षी फ

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

麲

स

त्

ना

म

सा क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE 纲 स

त् ना म

सा क्षी 卐

Š 纲 स त्

ना म सा क्षी 卐 άE

纲 स त् ना म सा क्षी **5**5 άE

> स त् ना म

纲

सा क्षी **5**5 άE

纲 स त् ना म

सा

क्षी

卐

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा– 63

चोर को बनाया चौकीदार.....

तुलसी अंग ललाट की, मेट सके नहीं राम। मेटन को तो समर्थ है, पर समझ लिया है काम।।

सिन्ध देश के टण्डा आदम में स्थित पावन तीर्थ श्री अमरापुर दरबार (डिब्), जहां प्रतिवर्ष लगता था युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज द्वारा स्थापित कुम्भ सदृश विशाल चैत्र मेला.... हजारों श्रद्धालु एवं संत- महात्माओं की जुड़ती थी भीड़ उस ज्ञान सरोवर में डुबकी लगाने.... चहुँ ओर भक्ति का सैलाब! सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का चलता था अखण्ड भजन व भोजन महाप्रसाद.... ज्ञान सरोवर में हर कोई भक्त आता था अपनी-अपनी भावना श्रद्धा लेकर.... कोई मेल-मेलाप करने, कोई संत-महात्माओं के दर्शन व सत्संग श्रवण करने तो कोई आता अपना स्वार्थ सिद्ध करने.... ऐसे ही आया था एक शातिर चोर, चोरी करने.... कुछ नये-नये जूते-चप्पल के जोड़े मिल जायेंगे तो कुछ दिन चल जायेगी आजीविका.... चोरी करना ही उसकी आजीविका का था साधन.... उसकी दृष्टि वहीं घूम रही थी जहाँ पड़े थे नये-नये जूते-चप्पल.... जो मन में होता है उसे वही नजर आता है, उसे और कुछ नहीं दिखता... उसकी दृष्टि उसी ओर घूमती है जहाँ उसका कार्य सिद्ध हो! मेले की भीड़ में अनेक बच्चे होते हैं किन्तु माँ को अपना बच्चा ही दिखायी देता है। चोर को भी अपना स्वार्थ सिद्ध हेतु चोरी कैसे की जाए। धीरे-धीरे मौका देखकर चुराने लगा जूते-चप्पल.... किसी की नज़र न पड़े, उस उद्देश्य से उनको छुपा भी रहा था। किन्तु संयोगवश चोरी करते किसी सेवादारी की दृष्टि उस चोर पर पड़ गई और उसे जूते-चप्पल चुराते हुए रंगे हाथ पकड़ लिया।

चोर पकड़ कर सामने - लाये सेवादार। कृपा दृष्टि गुरु की भई - बन गया चौकीदार।।

बड़ा भयभीत.... डरा-डरा सहमा हुआ.... कुछ सेवादारियों ने उसे बहुत डाँटा तो किसी ने उस चोर को मार भी लगाई पर कुछ समय पश्चात् एक सेवादारी ने कहा- चलो, इसे स्वामी जी के पास ले चलते हैं। जैसे स्वामी जी आज्ञा देंगे... वैसा ही करेंगे।

महापुरुषों का आशीर्वाद कब किसके ऊपर बरस पड़े ये कौन जानता है.... संत-महात्माओं के दर्शन व संग से हृदय परिवर्तित हो जाता है। उनके पास तो कैसा भी अधम से अधम व्यक्ति क्यों न आ जाये.... वे तो उसके ऊपर अलौकिक कृपा बरसा देते हैं.... जिससे उसका जीवन परिवर्तन हो जाये और मुरझाये पुष्प की तरह पुनः वो पुष्प खिल उठे.... ऐसी ही ॐ श्री स

स त् ना म

सा क्षी **५** ॐ श्री स

त्नामसाक्षी ५५ ॐ श्री

त् ना म सा क्षी

स

साक्षी **५५** ॐ श्रीसत्नामसाक्षी

卐

अनुपम कृपा होने वाली थी इस चोर के ऊपर....

कुछ समय बाद सेवादारियों द्वारा चोर को **युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज** के पास लाया गया। अब स्वामी जी के समक्ष खड़ा था वह चोर... श्री गुरु महाराज जी के मुख मण्डल पर थी भक्ति की अलौकिक आभा.... तेजोमय ज्योतिपुँज से सुशोभित....

चोर बड़ा डरा हुआ, शरीर कम्पायमान.... मायूस चेहरा, सहमा हुआ.... मन ही मन सोच रहा था, क्या होगा अब मेरा? मुझे जेल में बद करवा देंगे, परिवार बेघर हो जायेगा.... मैंने ये पाप-कर्म क्यों किया.... मन-ही-मन पश्चाताप कर रहा था....

पर महापुरुषों की नज़र तो अद्भुत होती है। 'नानक नजरी नजरे निहाल' संत-महात्मा तो नज़रों से ही निहाल कर देते हैं। व्यक्ति चाहे कैसा भी क्यों न हो... उनके लिये कृपा दृष्टि समान होती है। वे अपनी अर्न्तदृष्टि से ही जान जाते हैं कि इस जीव का उद्धार कैसे हो? उनका अवतार परोपकार के लिये ही होता है।

तब श्री गुरु महाराज जी ने उसे देखकर ऐसी कृपा दृष्टि उस पर डाली कि चोर का होने लगा मन परिवर्तन.... स्वामी जी के श्रीचरणों में नत्मस्तक होकर क्षमायाचना करने लगा। अपनी भूल का पश्चाताप करके बिलख-बिलख कर रोने लगा.... मुझसे बहुत बड़ी भूल हुई है.... मुझे क्षमा करें, प्रभु! मैं फिर कभी चोरी नहीं करूँगा। स्वामी जी ने उसे उठाकर अपने पास बैठाया....

चोर पकड़कर सामने लाये, उसको भी छुड़वाया. हलवा पूड़ी खूब खिलाया, वस्त्र भी पहनाया. की ऊपर से मेहरबानी, बोले मुख मधुरी बानी. वो सबमें राम को देख रहा, कोई और नहिं.......

बड़े ही दुलार से उसे भोजन खिलाया और आशीर्वाद दिया। तत्पश्चात् युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने अपनी करुणाः कृपा का वरद हस्त उसके मस्तक पर घुमाकर कहा– आज से हम आपकी चोरी करने की रेखा को ही मिटा देते हैं.... आज के बाद आप चोरी मत करना.... चोरी करना अच्छी बात नहीं.... ये पाप–कर्म है.... पाप करने से नरक की यातनाएँ भोगनी पड़ती हैं। अतः हमेशा परमात्मा का स्मरण व सेवा करके जीवन को सार्थक बनाओ।

जो कार्य भगवान भी करने में असमर्थ होते हैं, वे कार्य संत- महापुरुष अपनी तपस्या व भिक्त से सिद्ध कर देते हैं। 'मेट सके न कोय कर्म की रेखा' पर सिद्ध महापुरुषों के आशीर्वाद से असंभव कार्य भी सिद्ध हो जाते हैं.... ऐसी होती है भिक्त में अलौकिक शिक्त! फिर क्या था-स्वामी जी ने उस चोर की बुरी कर्म रेखा मिटाकर श्री अमरापुर दरबार का चौकीदार बना दिया। फिर उसने जीवन पर्यन्त आश्रम की सेवा करके अपना जीवन सफल किया।

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

30

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी **५**५

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

ॐ श्री

स

त्

ना

म

सा

ॐ श्री स त्

स त् ना म

म सा क्षी **५**

3ँ० श्री स त्

म सा क्षी **५** औ स

त् ना म सा क्षी

म

सा क्षी **५** औ

ॐ श्री सत्नाम साक्षी भ 'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा– ६४

दर्शन मात्र से हो गयी – क्रोधाग्नि शान्त

बात उस समय की है जब युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज संत मण्डली व भक्तजनों के साथ रेत के टीले के ऊपर श्री अमरापुर दरबार (डिब्) का निर्माण कार्य करवा रहे थे। स्वामी जी के साथ अनेक संत-महात्मा- सेवाधारी आश्रम निर्माण कार्य में सेवा कर रहे हैं। स्वामी जी स्वयं भी सेवा कार्य करते और सभी का अवलोकन ध्यानपूर्वक करते थे।

कुछ समय बाद सरकार द्वारा नियुक्त एक मुसलमान सरकारी कर्मचारी (जंगल का सरकारी चौकीदार) गुस्से में वहाँ आ पहुँचा। वह क्रोधावेश में श्री गुरु महाराज जी सहित सभी संत- सेवादारियों को अमर्यादित शब्द बोलने लगा। आप कौन हैं.... यहाँ क्यों आकर बैठे हो.... ये लकड़ियाँ क्यों इकड़ी की हैं... यहां क्या कर रहे हो.... ये सरकारी जमीन है.... अर्थात् क्रोध के आवेश में आकर अपना वास्तविक स्वरूप भूल गया। अपना संतुलन खो बैठा और बुरा-भला कहने लगा... सभी संत-महात्माओं और सेवादारियों को उस कर्मचारी के वाणी व्यवहार पर बड़ा गुस्सा आ रहा था पर, स्वामी जी के सामने कुछ कह न सके। अब देखो! महापुरुष कैसे अपनी कृपादृष्टि करते हैं उस सरकारी चौकीदार पर....

भगवद् स्वरूप **युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज** के दैदीप्यमान मुख मण्डल की कृपादृष्टि उस सरकारी कर्मचारी मुसलमान चौकीदार पर पड़ी....

रज्जब चले न क्रोध बल, जहां क्षमा तंह साध। जैसे दामिनी दरियाह पर, कर सी कौन उपाधि।।

कहा गया है- पूर्ण तत्त्ववेता और वैरागी संत-महापुरुष के दर्शन मात्र से क्रोध और बुरे संकल्प स्वतः ही नाश हो जाते हैं। संत तो अपनी करुणा दृष्टि से ही निहाल कर देते हैं। न जाने कब किसका जीवन बदल दें। कौन जानता है उनकी अद्भुत लीलाओं को.... परमात्मा के बन्दे फकीर-फकड़ बाबाओं की होती है अपनी मौज.. .. संत तो दयालु व कृपानिधान होते हैं। परोपकार के लिए ही उनका इस धरा धाम पर अवतरण होता है। 'क्षमा बड़िन को चाहिए, छोटिन को उत्पात' संत-महात्मा क्षमाशील होते हैं। वे कभी किसी का अवगुण नहीं देखते। नज़रों से ही निहाल कर देते हैं....

भक्ति-ज्ञान की आभा से सुशोभित स्वामी जी के दर्शन मात्र से उस मुसलमान 'सांई<u>दि</u>ना' नाम के चौकीदार का हृदय परिवर्तित हुआ.... जहाँ क्रोध के अंगार बरसा रहा था वह अब शान्त-निर्मल व शीतल हो गया.... क्रोधाग्नि शान्त हो गयी.... जिस प्रकार जलती आग में पानी डालने से आग शीतल हो जाती है उसी प्रकार जंगल का रखवाला 'सांई<u>दि</u>ना' अब शान्त व निर्मल हो गया।

प्रेमाश्रु बहाकर स्वामी जी से क्षमायाचना माँगने लगा.... हे फकीर सांई! मुझे माफ कर दो, मुझसे बहुत बड़ी भूल हो गयी.... मैं आपको पहचान नहीं पाया.... आप तो स्वयं अल्लाह- भगवान के बन्दे हो.... आप में मुझे अलौकिक शक्ति का दीदार हो रहा है। और वह दण्डवत् प्रणाम करके चला गया। किन्तु कुछ समय बाद वही 'सांईदिना' नाम का मुसलमान चौकीदार सद्गुरु महाराज जी से नाम-दीक्षा लेकर उनका शिष्य बन गया।

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

Š

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

麲

स त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

ॐ श्री

स त् ना

म सा क्षी

卐

3ॐ श्री स त्

म सा क्षी **५**

ॐ श्री स त् ना म

सा क्षी **५५** ॐ श्री स

त् ना म सा क्षी

त् ना म सा क्षी 'ॐ श्री सतुनाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा– 65

आस्था – विश्वास का प्रतीक बना डिब्र पर कुँआ

एक समय टण्डाआदम में स्थित रेत के टीले के ऊपर श्री अमरापुर दर<u>बा</u>र (डि<u>ब</u>) के निर्माण का कार्य स्वयं युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज अपनी देखरेख में संत-महात्माओं एवं सेवादारियों के द्वारा करवा रहे थे। जिसमें अनेक किठनाइयों का सामना करना पड़ रहा था पर स्वामी जी के मुख मण्डल पर एक ही बात होती थी 'ये सब भगवान की लीलाएँ हैं। आप सब देखते जाओ.... भगवान की प्रेरणा से ही इस आश्रम का निर्माण हो रहा है और भगवान ही इसे पूरा करेंगे।' ऐसा अडिग विश्वास और पूरा भरोसा था भगवान पर.... गीता में बताया गया है-

मय्येय मन आधतस्व मिय बुद्धिं निवेशय। निवसिष्यसि मय्येव अत ऊर्ध्वं न संशय:।।

मुझमें मन को लगा और मुझ में ही बुद्धि को स्थिर कर, सर्वस्व मुझे समर्पित कर दे... इसके उपरांत तू मुझमें ही निवास करेगा... उसके समस्त कार्य स्वतः सिद्ध हो जाते हैं। इसमें कुछ भी संशय नहीं.... श्री अमरापुर दरबार (डिब्) पर कुँआ बन रहा था। कुँआ बनवाने के लिए ईंट, बजरी, कारीगर की आवश्यकता थी। इतनी ऊपर टीले पर कोई कुँआ बनाने के लिए तैयार नहीं हो रहा था। उस समय पैसों का भी अभाव होता था। ईंटे मंगवाना, पत्थर बजरी लाना और एक कुशल कारीगर मिलना बहुत कठिन सिद्ध हो रहा था पर स्वामी जी को तो भगवान के ऊपर पूर्ण विश्वास था.... जिसका कार्य है वही स्वयं इसे पूरा करेंगे...

कुछ समय बाद भगवद् प्रेरणा से एक भक्त ने ईंटे, बजरी, पत्थर भिजवा दिया.... अब प्रभु की ऐसी लीला हुई... उसी समय कुँआ बनाने वाला मोहम्मद सिद्धीक नाम का मशहूर कारीगर स्वामी जी के पास आया.... स्वामी जी के आगे हाथ जोड़कर कहने लगा- 'हे फकीर सांई! मुझे स्वप्न में मालिक ने हुक्म दिया है कि फकीर बाबा (सन्तश्री) का कुँआ बनाओ।' अतः आज्ञा दें तो मैं शीघ्र ही कुँआ बनाना प्रारम्भ करूँ... हम दो भाई हैं। आपके आशीर्वाद से हम शीघ्र ही कुँआ बना देंगे....

युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के आशीर्वाद व प्रेरणा से संत-सेवादारी एवं मुहम्मद सिद्धीक कुँआ बनाने में जुट गये। २७ दिन में बड़ा सुन्दर कुँआ बनकर तैयार हो गया और कुँए से गंगाजल के समान मधुर मीठा जल निकला.... श्री गुरु महाराज जी द्वारा विधिवत् जलदेवता की पूजा-अर्चना कर फिर जल निकालना प्रारम्भ किया गया।

ऐसा होता है अटूट पूर्ण विश्वास भगवान पर.... जिससे हर कार्य सिद्ध हो जाते हैं। आस्था-विश्वास ने टीले के ऊपर भी कुँआ बना दिया.... जो कार्य असंभव था वह भगवान की कृपा से पूर्ण सिद्ध हो गया... आज भी सिन्ध टण्डाआदम श्री अमरापुर दरबार (डिब्) पर वह कुँआ बना हुआहै!

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

纲

स

त्

ना

म

सा

위 **5**

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

άE 纲 स त्

ना म

सा क्षी 卐

Š

網 स त् ना म सा

क्षी 卐 άE 纲 स त्

ना म सा क्षी **5**5 Š 纲

स त् ना म सा

क्षी **5**5 άE 纲 स त्

ना म सा क्षी 卐

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा– 66

हरा–भरा हुआ आम का वृक्ष

एक समय श्री अमरापुर दरबार (डिब्) पर युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज भ्रमण कर रहे थे। उस समय स्वामी जी के साथ कुछ संत महात्मा व भक्तजन भी थे। ऐसे आगे चलते-चलते उस जगह पहुँचे... जहाँ आम का एक बड़ा पेड़ था। इस वृक्ष में पहले बहुत आम फल लगते थे लेकिन पिछले दो-तीन सालों से इस पेड़ पर आम के फल नहीं आ रहे थे। संत कृष्णदास जी जो सद्गुरु महाराज जी के साथ थे। वे कहने लगे-स्वामी जी! इस वृक्ष को कटवा देना चाहिए, क्योंकि ये दो-तीन वर्षों से फल नहीं दे रहा है जबिक हम इसमें पानी-खाद देकर इसकी अच्छी तरह देखरेख करते हैं पर ये आम नहीं दे रहा.... आपकी आज्ञा हो तो इस वृक्ष को कटवा दिया जाए... व्यर्थ में ही हमें मेहनत करनी पडती है।

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने संत कृष्णदास को धीरज देकर कहा- अरे भाई! वृक्ष को कभी काटना नहीं चाहिए... ये प्रकृति की अनुपम-अद्भुत धरोहर है.... ये हमें फल-फूलों के साथ जीवित रहने को ऑक्सीजन तक देते हैं.... साथ ही हरियाली देकर हमारे मन मयुर को प्रसन्न करते हैं, छाया भी प्रदान करते हैं, वायु को शुद्ध करते हैं.... इन वृक्षों में अनेक गुण होते हैं। आप कहते हो कि ये वृक्ष फल नहीं दे रहे हैं तो हम इनसे कह देते हैं कि ये सबको मीठे फल अवश्य ही खिलाएँगे... उसी क्षण युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने अपनी चिप्पी से जल का छींटा 'सत्नाम साक्षी' कहकर उस वृक्ष पर छिड़का और वृक्ष देवता से कहा- हे वृक्ष देवता! साधु संत लोग आपके आम खाना चाहते हैं, ये आपकी सेवा भी कर रहे हैं, आप तो पर उपकारी हैं, आप सभी को फल देवनहार हैं, आप इन्हें फल खिलाना.... महापुरुषों के मुख से निकला अमृत वाक्य सिद्ध हुआ। सत्नाम साक्षी अभिमंत्रित जल का छींटा फलीभूत हुँआ.... महापुरुष द्वारा स्पर्शित अमृत जल-अमृत वचन कभी मिथ्या नहीं हो सकता। स्वयं परमात्मा उसे पूरा करते हैं और साधु संतों का मानवर्द्धन करते हैं।

सूखा आम हरा हुआ, सुन सत्गुरु का ज्ञान। रे मन तेरा क्यों नहीं, दूर हुआ अज्ञान।।

फिर क्या था- अगले वर्ष उसी आम के वृक्ष में बहुत ही अधिक मात्रा में आम के फल लगे... ये देखकर सभी संत महात्मा बड़े प्रसन्न हुए। सभी भक्त संत स्वामी जी का गुणगान करने लगे।

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

Š

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

Š

網

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

Š

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE 纲

स

त्

ना

म

सा

άE 纲

स त् ना म

सा क्षी

卐 άE 纲 स त् ना म

सा 55 Š 纲 स त् ना म

सा क्षी **5**5 άE 纲 स

त् ना म सा क्षी **5**5 άE 纲 स त् ना म

सा

क्षी

卐

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु खामी टेऊँराम गुण गाथा– 67

अतिथि – धर्मरक्षक

टण्डाआदम नगर के पूर्व में गुजरानपुरी नामक संन्यासियों का एक बड़ा आश्रम था। वहाँ पर मेला मनाया जा रहा था। युगपुरुष आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज को भी वहाँ पधारने के लिये निमंत्रण भेजा गया था।

वरियल वेद नाम का एक भगत जो कि स्वामी जी के पास ठहरा हुआ था, वह भी आचार्य जी के साथ उस मेले में गया था, आचार्य जी ने भगत वरियल वेद को कीर्तन करने की आज्ञा दी... उस मेले में बड़े-बड़े विद्वान, पण्डित, पुजारी, ब्राह्मण और नगर के बड़े-बड़े सेठ लोग भी वहाँ आये थे। उस वक्त जनसाधारण टण्डाआदम को सिंध की काशी कहा करते थे, क्योंकि वहाँ पर बहुत मंदिर एवं सिद्ध स्थल थे। विद्वान ब्राह्मण लोग भी अधिक संख्या में रहते थे। आज्ञा पाकर वरियल वेद ने कीर्तन आरंभ किया... अपने कीर्तन में उसने जो कुछ कहा- उसका मतलब यह था कि भ्रम- संशयों को छोड़कर राम नाम का स्मरण करना चाहिये। भजन को सुनकर पुजारी, ब्राह्मण लोगों का पारा चढ़ गया, वे आग- बबूला हो गये। लाठियाँ और जलती हुई लकड़ियाँ लेकर मंच पर बैठे कीर्तन करते हुए वरियल वेद को मारने दौड़े... अचानक यह आक्रमण (हमला) देखकर भगत वरियल वेद घबरा गया और जिस आसन पर आचार्यजी बैठे थे एकदम उसके नीचे जा छुपा। पुजारी लोग क्रोध के मारे जिनके हाथ-पांव काँप रहे थे, आँखें लाल हो रही थीं, आचार्य जी को कहने लगे कि आप हट जाइये, हम इसको जान से मारेंगे... इतने में आचार्य जी के दो शिष्य उठ खड़े हुए और दूर से ही पुजारियों को ललकार कर कहने लगे कि सावधान! अगर आगे बढ़े या भगत को मारा तो आप लोगों का भी कल्याण कर देंगे। चाहे आप लोग दस-बीस क्यों न हों, पर हम दो ही आप सबके लिये काफी हैं। यह धमकी सुनकर पुजारी लोग डर गये, झगड़ा बढ़ता हुआ देखकर आचार्य जी उठ खड़े हुए, हाथ जोड़कर सबको शान्त करते हुए मर्म भरे शब्दों में पुजारी ब्राह्मणों को कहने लगे कि जो कुछ भगत ने कहा है, उस विषय में यदि आप लोगों को शंका-समाधान करना है तो बड़ी प्रसन्नता से शास्त्रार्थ ख़ुशी से करो, बाकी इस प्रकार अज्ञानियों की तरह झगड़ा-लड़ाई करना संतों-ब्राह्मणों का धर्म नहीं है। यह शोभा नहीं देता... यह भगत वरियल वेद जो कि हमारे अतिथि हैं, आप लोग इसको मार-पीट करें और हम देखते रहें यह तो नहीं हो सकता। यह अतिथि का अपमान नहीं पर हमारा अपमान है। यदि आप लोगों को मारना ही है तो पहले हमें मारो... स्वामी जी के प्रेमास्पद् ये वचन सुनकर पुजारी, ब्राह्मण लोग शान्त हो गये और वे सब लोग अपने अपने स्थान पर चले गए... इस प्रकार से अतिथि की रक्षा की युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने...

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

άE

纲

स

त्

ना म

सा

क्षी

55 άE

纲

स

त्

ना

म

सा क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

άE 纲 स त् ना म

सा क्षी 卐 άE

纲 स त् ना म सा क्षी

卐 Š 纲 स त् ना म सा

क्षी 卐 άE 纲 स त् ना

म सा क्षी **5**5 άE 纲 स त् ना म सा

क्षी

卐

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा– 68

माँस मदिरा त्यागने की प्रतिज्ञा

सिंध देश में रटन के समय शहदादकोट में युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज संत मण्डली सहित विराजमान थे। नित्य सत्संग की मौज में इस गाँव के अलावा आसपास के कई गाँवों से लोग आकर सदुगुरु महाराज जी के अमृत उपदेशों को श्रवण करते थे। वहाँ किसी भक्त ने सदुगुरु महाराज जी से आकर कहा- हे प्रभो! इस शहर के लोग माँस मछली अत्यधिक मात्रा में सेवन करते हैं। होली, रक्षाबंधन और दिवाली जैसे पवित्र पर्वों पर उन्हें वध कर, वे स्वयं भी खाते हैं और टिकाणों (एक प्रकार के मंदिर) में भी माँस बनाकर भेजते हैं। इस विषय में आज आप कुछ धर्म उपदेश कीजिएगा। जिससे कि ये सभी पाप कर्म से बच जाएँ एवं मुक प्राणियों की रक्षा हो सके और हम सभी सत्य धर्म का रास्ता अपनाएँ। इस पर स्वामी जी ने सत्संग-प्रवचन किया और बतलाया कि कर्म चार प्रकार के होते हैं।

- 1. नित्य कर्म: जैसे कि प्रतिदिन प्रातःकाल उठकर स्नान आदि कर पूजा पाठ संध्या वंदन करना, नाम जप
- 2. निमित्त कर्म : किसी के निमित्त दान पुण्य करना या बारह महीने में एक बार करना, जैसे श्राब्द, होली, दिवाली।
- 3. काम्य कर्म : धन, पुत्र, स्त्री, स्वर्गलोक, इस लोक या परलोक के किसी पदार्थ की इच्छा रखकर शुभ कर्म करना।
- 4. प्रायश्चित कर्म: किसी पाप या दुःख की निवृत्ति के लिए कर्म करना।

उनमें से भी निमित्त कर्म जो बारह महीने में एक बार आते हैं, उन पर भूलकर भी माँस इत्यादि का सेवन नहीं करना चाहिए। हमने सुना है कि यहाँ शहदादकोट में लोग बकरे लेकर, उनका वध करवाकर स्वयं भी उनका सेवन करते हैं और टिकाणों (धार्मिक स्थानों) और अपनी कन्याओं के यहाँ भी भेजते हैं। यह अधर्म और पाप है... देवी देवताओं, ऋषियों मुनियों और अवतारों के पावन दिवसों पर दान, पुण्य, यज्ञ और उनकी पूजा के बदले किसी जीव के गले पर छुरा चलाकर, यह माँस खाना कितना न नासमझी और पाप का काम है। दान सदैव अच्छे विचार से और अच्छी वस्तु का करना चाहिए... दान में माँस देना तो बहुत बड़ा अधर्म है।ऐसा ही स्वामी जी ने बहुत सुन्दर उपदेश दिया। जिसे सुनकर सभी प्रसन्नचित्त हुए....

सद्गुरु महाराज जी ने मुखिया को धन्यवाद दिया और कहा- आप स्वयं विचार कर देखें कि पुण्य की जगह पाप और धर्म की जगह अधर्म कभी करना चाहिए? इसलिए सारी सभा हाथ उठाकर प्रतिज्ञा करे, हम कभी भी ऐसा अधर्मी पाप-कर्म नहीं करेंगे और न ही हम कभी भी माँस मछली शराब आदि का सेवन करेंगे... इस पर सारी संगत ने हाथ ऊपर उठाकर, इस अधर्मी पापकर्म न करने की प्रतिज्ञा की और कहा आज के बाद हम कभी भी माँस, मछली, अण्डा, शराब आदि का सेवन नहीं करेंगे।इस पर श्री गुरुदेव भगवान ने सभी को सतुनाम साक्षी... कहकर आशीर्वाद दिया। अभी तक जाने-अनजाने में जो पाप कर्म हो गये हैं उसके लिये भगवान आपको माफ कर देंगे। अब आगे कभी भी पाप कर्म मत करना। इस प्रकार अपने अमृत वचनों द्वारा सद्गुरु महाराज जी ने शहदादकोट वासियों एवं अनेक घरों /शहरों में होने वाली पशुबलि से मुक्त कराकर, अधर्मी कृत्य से बचाकर धर्म की राह पर लगाया... ऐसे थे सनातन धर्म के उपासक, अहिंसा के पुजारी, सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

άE

纲 स त्

ना म सा

क्षी 卐 Š 纲

स त् ना म सा

क्षी 卐 Š 纲 स त्

ना म सा क्षी 卐

Š 纲 स त् ना म

> सा क्षी **5**5 άE 纲 स

त् ना म

सा

क्षी

卐

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

網

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲 स

त्

ना

म

सा

क्षी

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा– 69

अध्यात्म के साथ कर्तव्यनिष्ठ

जीवन मुक्ती संत जन, दिल के बड़े उदार। कह टेऊँ व्यवहार में, होवत सदा बहार।।

युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के हृदय में वैराग्यवृत्ति की तीव्रता होने के कारण उनके मन की तार सदैव प्रभु परमात्मा से जुड़ी हुई थी और उस समय घर परिवार की स्थिति यह थी कि खाने को भी खाद्यांत्र वगैरह घर में नहीं रहता था। श्री गुरुदेव भगवान के भाई श्री टहलराम जी दुकान व खेतों का काम देखते थे। तब भाई टहलराम जी 'श्री गुरुदेव' को कहने लगे कि इस वर्ष भी घाटा पड़ने की संभावना है... बगीचों में भी फल नहीं लगे हैं, खेती-बाड़ी भी अच्छी नहीं हुई है और कपास के खेत देखने में तो अच्छे लगते हैं पर अन्दर रुई नहीं है। बाजरे से तो राजस्व (कर) भी पूरा नहीं उतरेगा और दुकान पर भी इतनी कमाई नहीं है। दो हजार रुपये का कर्ज़ा तो पहले से ही है व एक हजार अभी उठाया है, वह भी देना है। (उस समय एक हजार रुपया आज के एक लाख से अधिक ही होगा)। आप तो ग्वाललाल को लेकर भ्रमण करते रहते हो और अब यह बोझा मुझ अकेले से नहीं उठाया जायेगा, अगर आपकी इच्छा हो तो खेती-बाड़ी बेच दें? अगर नहीं तो आप भी कुछ सेवा कार्य देकर यह कर्जा उतरवा लो फिर भविष्य में जैसी आपकी इच्छा....

यह सुनकर 'श्री गुरुदेव भगवान' विचार करने लगे कि भाई टहलराम जी का कहना सही है, यदि हम इस समय चले जायेंगे तो लोग कहेंगे कि संत लोग कर्ज़ा चुका न पाये इसलिये यहाँ से चले गये और भाई को भी बहुत चिन्ता होगी। इसलिये समूचा कर्ज़ा चुका कर भाई की चिन्ता को भी मिटाना होगा। फिर इस नगर को छोड़कर, किसी दूसरी जगह बसायेंगे, जहाँ पर जंगल हो, एकांत जगह हो... वहाँ पर डेरा लगायेंगे... इस प्रकार सोच-विचार कर श्री गुरुदेव भगवान ने भाई टहलराम जी को कहा- कि आप निश्चिन्त रहें, ईश्वर सब अच्छा करेंगे। कुछ भी चिन्ता न करें। सब कर्ज़ा चुकाकर ही फिर कहीं जाने का विचार करेंगे।

श्री गुरुदेव जी ने जब खेत खिलहानों का निरीक्षण किया तो देखा कि खेती तो बहुत बढ़िया है परन्तु बालियों में अनाज दिखाई नहीं देता है, कपास के पौधों में भी रुई नहीं है, जो फूल लगते हैं वे भी झड़ जाते हैं। तब स्वामी ग्वाललाल, स्वामी सर्वानन्द, स्वामी गुरुमुखदास की खेती-बाड़ी की सेवा सम्भाल करने की आज्ञा दी, अब आप इसकी अच्छी तरह से देखभाल करें।

कर्त्तव्यनिष्ठ सच्चे संतों की अमृतवाणी, जिसे प्रभु परमात्मा भी पूरा करने को उद्यत हो उठते हैं। एक ओर महापुरुषों का आशीर्वाद, दूसरा संतों द्वारा सेवा-पुरुषार्थ! बस, फिर क्या था, महापुरुषों द्वारा कहा वाक्य सत्य हुआ। जो खेत खिलहान, जिसमें उपज होने की संभावना नगण्य थी, फिर स्वामी जी के आशीर्वाद से कुछ समय पश्चातु उन्हीं बालियों में बाजरा व अन्य अन्न की

άE 纲 स त् ना म सा क्षी 卐 άE 纲 स त् ना म सा क्षी 卐 Š 纲 स त् ना म सा क्षी 卐 Š 纲 स त् ना म सा क्षी 55 άE 纲 स त् ना म

सा

क्षी

卐

फिलियों ने आना शुरू िकया, कपास के पौधों में भी रुई दिखने लगी, यहाँ तक ि कुछ पौधे कपास का बोझ न सह सकने के कारण झुक गये थे। कालान्तर में भरपूर खेती हुई... जिससे भाई टहलराम जी द्वारा िलया गया कर्ज़ा पूरी तरह से चुक गया। यह देखकर सभी के मुरझाए चेहरे खिल उठे। श्री गुरुदेव भगवान की ऐसी अचरजमयी लीला को देखकर भाई टहलराम व उस क्षेत्र के सभी िकसानों की आँखों से आँसू निकल पड़े। भाई टहलराम जी दिल ही दिल में महापुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के विषय में सोचने लगे कि त्रिलोकीनाथ स्वयं भगत के रूप में हमारे घर-गाँव में अवतरित हुए हैं परन्तु अज्ञानवश होकर उसे न पहचान कर मैं बचपन से ही उसे भला-बुरा कहता आया हूँ। यह तो बड़ा भारी पाप मुझसे हो गया है। इसलिये आज घर जाते ही अपने अपराधों की क्षमा- याचना माँग कर उपदेश लूँगा...

हम आये तव शरण में, राखो हमारी लाज। कह टेऊँ जिन दास लख, करिये पूर्ण काज।।

गाँव में पहुँचकर देखा तो गुरु महाराज जी अवधूती व वैराग्यभरी मस्ती में दुकान पर अकेले बैठे धीरे-धीरे भजन गुनगुना रहे हैं। तब भाव- विभोर होकर भाई टहलराम, जो कि गुरु महाराज के लौकिक रिश्ते में बड़े भाई थे, कहने लगे कि आप की माया बहुत प्रबल है, इसे समझना बड़ा कठिन है। इतने दिनों तक आपको न पहचान कर बहुत कुछ अनुचित किया। अब अपनी दया कीजिये व मेरे अपराधों को क्षमा कर मुझे उपदेश देकर मेरा उद्धार कीजिये।

खेती अगले साल भी - हो सकती है तात। सुमरन कर लो राम का - आयू बीती जात।।

श्री गुरुदेव कहने लगे कि आपके द्वारा जो कुछ हुआ सब हमारी भलाई के लिये ही था। इसलिये आप चिन्ता न करें। आज आपके मन में जो भगवद्-भिक्तका अंकुर उत्पन्न हुआ है, उसे देखकर हम बहुत प्रसन्न हुए हैं, यह मनुष्य जन्म भगवान की प्राप्ति के लिये ही तो मिला है, सो आप भजन कर इस मनुष्य जीवन को सफल बनावें... भगवान की कृपा सदैव आपके ऊपर बनी रहे।

इस लीलामयी प्रेरणादायक प्रसंग से हमें यह शिक्षा मिलती है कि आध्यात्मिक जीवन में भक्ति भाव के साथ-साथ कर्त्तव्य परायणता भी होना चाहिए। कभी भी कर्त्तव्य से विमुख नहीं होना चाहिए. जिससे भगवान की कृपा भी बरसती है और सब मंगल ही मंगल होता है।

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

άE

纲

स त्

ना

म

सा

क्षी

卐

30

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

άE

網 स त्

ना म सा

क्षी 卐 ૐ 網

स त् ना म सा क्षी **5**5 άE 網 स

त् ना म सा क्षी 卐 άE 網 स

त् ना म सा क्षी 卐 άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु खामी टेऊँराम गुण गाथा– 70

स्वप्न में किया नारायण भक्त का दुःख दूर

युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज सिंध में लोगों को सत्मार्ग पर अग्रसर करने के लिए गाँव-गाँव, कस्बे-शहरों आदि में रटन कर रहे थे। एक बार वे बडाणी शहर में अनन्य सेवक वसणाराम गोबिन्दराम भ्राताओं के यहाँ पधारे।

भाई वसणाराम ने श्री गुरुदेव भगवान से प्रार्थना की, हे प्रभो! मेरे पिता नारायणदास जी को गले में बहुत बड़ा फोड़ा निकला है... जिससे उन्हें बहुत तकलीफ हो रही है... दर्द भी बहुत है। अब आप ही कृपा कर उनके दुःख-दर्द, तकलीफ दूर करने का कोई उपाय बतलाएँ, जिससे उनकी दुःख-तकलीफ दूर हो जाये। आप ही हमारे दुःखभंजन नाथ हैं.... आप हमारे ऊपर कृपा करें.... श्री गुरुदेव भगवान ने उन्हें आज्ञा दी, कि आप अपने पिताजी को हैदराबाद में हमारे प्यारे डॉक्टर सुभाषचन्द्र जी के पास ले जाओ, वे प्रभु परमात्मा के भक्त हैं, उन्हें आप हमारा संदेश देंगे तो वे इनका अच्छी तरह से उपचार करेंगे। आगे ईश्वर सब भला ही करेंगे.... वसणाराम जी ने ऐसे ही किया। गुरुदेव की आज्ञा शिरोधार्य कर डॉक्टर ने गले का ऑपरेशन बहुत अच्छी तरह से किया परन्तु फोड़ा सूख ही नहीं रहा था। तब करुणा भाव से वसणाराम की माता और स्वयं नारायणदास ने मन ही मन में गुरुदेव भगवान को याद किया।

सद्गुरु पुरन पाइया - होया कारज रास। कह टेऊँ मंगल भया - टूटी जम की फास।।

उसी रात श्री नारायणदास जी स्वप्न में देखते हैं कि भक्तवत्सल-दुःखहर्ता सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज उनके पास आये हैं और पूछ रहे हैं- फोड़ा कहाँ है? नारायणदास ने गले में हाथ लगाकर बतलाया कि इसमें अढ़ाई हाथ कपास की लड़ी (बत्ती) पड़ी हुई है, वही फोड़ा है, जो सूख नहीं रहा है, बड़ी पीड़ा दे रहा है... उसी क्षण श्री गुरुदेव भगवान ने अपनी कृपा दृष्टि की और उनसे कहा कि कहाँ है फोड़ा ? हमें तो नजर नहीं आ रहा...वह तो बिल्कुल ठीक हो गया है... आप किसी प्रकार की भी चिन्ता मन में न करें। कैसे समझें? ऐसे दिव्य महापुरुषों की अलौकिक लीला को.... कैसे ठीक हो गया सपने में वह फोड़ा? सपना सच हो उठा.... वह भी संत-महापुरुष ही जानें.... दूसरे दिन सुबह डॉक्टर ने पट्टी खोलकर देखा तो पाया कि वह कपास की बत्ती तो बाहर पड़ी हुई है और फोड़ा एकदम ठीक हो गया है.... ऐसा आश्चर्य देखकर डॉक्टर भी बड़ा हैरान हो गया और दूसरे दिन ही उन्हें घर जाने की छुट्टी दे दी... तत्पश्चात् सभी श्री गुरुदेव भगवान के पास आए और कहा- हे प्रभु! आपके आशीर्वाद-कृपा से मेरा फोड़ा बिल्कुल ठीक हो गया है और श्री गुरु महाराज जी को दण्डवत् प्रणाम कर उनका आशीर्वाद पाकर घर आ गये।

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

Š

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

Š

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

30

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

30

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

30

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE 纲 स त् ना म सा क्षी 卐 άE 纲 स त् ना म सा क्षी 卐 άE 纲 स त् ना म सा क्षी 卐 άE 纲 स त् ना म सा क्षी **5**5 άE 纲 स त् ना

म

सा

क्षी

卐

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा– 71

मंघाराम भक्त की थी पुकार- गुरुदेव पहुँचे उसके द्वार

एक बार सिन्ध में देशारटन करते-करते कमीजन कस्बे में लोगों को भगवत्मार्ग की ओर उन्मुख करते हुए एक दिन युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज संत मण्डल के साथ शाम के समय जंगल का भ्रमण करते हुए, शहर के बाहर उत्तर दिशा की ओर चले गये। एक मील के करीब चले होंगे कि संतों ने स्वामी जी से कहा- हे प्रभो! अब बहुत ही पैदल चल चुके हैं... देर भी हो गयी है... अब लौटना चाहिए। स्वामी जी ने उनसे कहा- इधर इस दिशा में हमें कोई आवश्यक कार्य है, आप हमारे पीछे आइए। अब कौन समझे महापुरुषों की अनन्य लीला को! किस प्रकार भक्तों के मनोरथ सिद्ध करते हैं, उनकी लीला वे ही जानें.... आखिर डेढ़ मील चलने के बाद मार्ग के किनारे पर 'ओदिन' (कुमावत या मकान बनाने वाले कारीगर लोग) के दस बारह मकान थे। वहाँ पर पहले से ही आसन बिछाये गये थे और प्रसाद भी तैयार करके रखा हुआ था। उन्हें पक्का विश्वास था कि श्री गुरुदेव भगवान हमारे यहाँ जरूर पधारेंगे.... अर्न्तयामी श्री गुरुदेव ने उनके हृदय की पुकार सुन ली और पहुँचे उसके द्वार...

सद्गुरु बादल बरिसया - आँगन मेरे आज। कह टेऊँ मंगल भया - पूरन होया काज।।

स्वामी जी को आया देखकर अश्रुपूरित नेत्रों एवं गद्गद् भाव से **मंघाराम 'ओद्'** (मकान बनाने वाला कारीगर) ने कहा– हे भगवन्! मैंने सुना था कि सद्गुरु महाराज जी कमीजन (गाँव) में आए हैं... मन में विचार उठा कि जाकर दर्शन कर आऊँ और आपको को विनती कर अपने घर पर ले आऊँ... तािक आप अपने श्रीचरण कमल यहाँ पखारकर हमें कृतार्थ करें। परन्तु अचानक मेरा छोटा लड़का बहुत ही बीमार हो गया। इस कारण मैं आपके दर्शन करने नहीं आ सका। आज सुबह मैंने अपने साथी ओदों (कारीगरों) से कहा कि आज वे काम पर नहीं जाएँ। मेरे सद्गुरु सच्चे और त्रिकालदर्शी हैं और मेरा विश्वास भी सच्चा और पक्का है.... वे हमारी आन्तरिक प्रार्थना को सुनकर यहाँ पर जरूर आएँगे.... मैं आज वृत रख रहा हूँ, स्वामी जी के दर्शन करने के बाद ही वृत खोलूँगा.... ऐसी आश और विश्वास के साथ आपकी प्रतीक्षा में आपके आने की राह निहार रहा था....

अपने इस तुच्छ भक्त के अन्तर्मन की इच्छा को जानकर आपने हमें मंगल दर्शन करवाया... इसके लिये ये दास और हम सभी ओ<u>द</u> आपका कोटि-कोटि अभिनन्दन करते हैं... रोम-रोम आपका शुकराना करता है... आपकी अहेतुकी कृपा हमारे जीवन को उज्ज्वल करेगी ऐसा मेरा विश्वास है। अब तो हमें पक्का विश्वास हो गया.... भक्त हृदय से पुकारे तो गुरुदेव अवश्य ही आते हैं।

भक्तवत्सल स्वामी जी ने वहाँ पर करीब एक घण्टे तक भजन-सत्संग किया... तत्पश्चात् उन्होंने पल्लव पाकर बच्चे के स्वस्थ होने के लिए अरदास (प्रार्थना) की और उसे अपना स्नेहिल आशीर्वाद देकर अपने स्थान पर लौट आये।

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

Š

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

3ॐ श्री स त

त त् ना म

म सा क्षी **५**

ॐ श्री स त्

ना म सा क्षी **५**5

ॐ श्री सत्नामसाक्षी 5

3S 射 स त्ना म सा **8B 15** 3S 射 स त्ना

म

सा

क्षी

卐

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा- 72

श्री गुरुदेव ने बचाई सबकी जान

भगवत अपने दास का - निशिदिन है रखवार। कह टेऊँ भूलत नहीं - हरदम करत सम्भार।।

एक समय युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज संत मण्डली के साथ डीपारजिन गाँव में गये। यहाँ पर सद्गुरु महाराज जी से नाम दान की बख्शीश पाकर कई प्रेमी शिष्य बने। यहाँ से सद्गुरु महाराज जी संत मण्डली के साथ कइड़ी डिहरी गाँव में पहुँचे तो वहाँ पर राणी बधिन गाँव के निवासी भाई मंघरराम जी सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के पास आए और हाथ जोड़कर, आँखों में आँसू भरकर कहने लगे-

हे प्रभो! कल रात बारह बजे, जब हम सब गहरी निद्रा में सो रहे थे कि हमारे मकान के छत की मुख्य लकड़ी टूटने को आ गई, उसके टूटने (क्रेक) की आवाज से हम सब जाग उठे और भयातुर होकर (यहाँ पर यह उल्लेखनीय है कि उस समय छतें लगभग लकड़ी के आधार पर ही रहती थीं।) हम सबने आपको हृदय से बहुत याद किया और दिल की गहराई से प्रार्थना की- "हे गुरुदेव! हमें बचा लीजिए, हमारी रक्षा कीजिए...." इतने में छत की लकड़ी का एक सिरा टूटकर आकर धरती पर आ गिरा और उसका दूसरा भाग, जहाँ पर हम सो रहे थे, धरती से चार पाँच फीट ऊपर ठहर गया। हम लोगों ने 'सत्नाम साक्षी सर्व आधार, जो सुमरे सो उतरे पार....' की धुनि लगाई और धीरे-धीरे दरवाजा खोलकर सभी लोग बाहर निकले तो छत की मुख्य लकड़ी का दूसरा छोर भी जाकर धरती पर गिरा... यदि एक क्षण की भी देर हुई होती तो... कहने में भी शरीर भय से रोमाँचित हुआ जा रहा है.... आपकी महिमा अपरम्पार है प्रभु! आप हम सबके रक्षक बन कर इस लोक में तो कृपा कर ही रहे हैं और हमें पूर्ण विश्वास है कि आप हमारी परलोक में भी इसी प्रकार से रक्षा करेंगे... कृपा करेंगे... यह सुनकर सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज मंद-मंद मुस्कराये और कहने लगे, प्यारे भगत, यह सब प्रभु परमात्मा की लीला है वे ही सब के खेवणहार हैं, रक्षक हैं। आगे भी ईश्वर भली करेंगे। देखिये ईश्वरांश सर्व सिद्धियों ऋद्धियों के दाता सद्गुरु महाराज जी ने किस सहजता के साथ अपने शक्तियों को छुपा लिया। ऐसे भक्तों के रखपाल, ऋद्धि-सिद्धि के मालिक श्री गुरुदेव को बारम्बार वन्दन!

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

άE 纲 स त्

ना म

सा क्षी 卐

Š 纲 स त् ना म सा

क्षी 卐 Š 纲 स त् ना म

सा क्षी 卐 άE 纲 स त् ना

म सा क्षी **5**5 άE 纲 स

त् ना म सा क्षी 卐

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा– 73

मूर्ति पूजा की आवश्यकता

संतों महापुरुषों की पावन भूमि अविभाजित भारत के सिंध प्रदेश के घोटकी गाँव में देशारटन करते युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की पूरी संत मण्डली का पावन आगमन होता है। उस समय सद्गुरु देव भगवान की भक्ति और शक्ति की सुगन्ध चारों तरफ फैल रही थी। पंचों और प्रेमियों के अनुनय विनय पर गुरुदेव वहाँ पधारे... श्री गुरुदेव भगवान की पावन ज्ञान अमृतधारा बहने लगी। सहस्त्रों लोग गुरुदेव की ज्ञानवाणी सुनकर आनन्दित हो रहे हैं। जैसे शहद का रस पाने को अनन्त मधुमिखयाँ भिनभिनाती हैं। वैसे ही आचार्यश्री के मुखारविन्द्र से ज्ञानामृत पीकर सभी प्रेमीजन मस्त हो जाते थे।

एक बार गुरुदेव ने हिन्दू धर्म के शास्त्रों का प्रमाण देकर मूर्ति पूजा पर उपदेश दिया। 'ध्यान मूलं गुरीमृर्ति पूजा मूलं गुरु पदम ।।' ऐसा सत्संगामृत सुनकर सभी जिज्ञास बहुत प्रसन्न हुए लेकिन वहाँ कुछ आर्यसमाजी भी उपस्थित थे (गुरुदेव का सत्संग अभेदी व निष्कामी होता था, इसलिए सभी पंथों और समाजों के लोग प्रवचनों का लाभ लेते थे)। तो आर्यसमाजियों को मूर्तिपूजा की बात स्वीकार नहीं हुई (आर्यसमाजी मूर्तिपूजा नहीं करते) कुछ आर्यसमाजी उठकर आचार्यश्री से कहने लगे कि आप ये उपदेश नहीं करें, नहीं तो हम अपना ज्ञानी पंडित बूलाकर आपसे शास्त्रार्थ करवा के मूर्तिपूजा का विरोध करेंगे। आचार्यश्री ने कहा कि आप भले ही पंडित बुलाएँ, हम शास्त्रार्थ को तैयार हैं, लेकिन सत्य का उपदेश हम बन्द नहीं करेंगे... सत्य तो सत्य ही होता है। श्री गुरुदेव ने उन सबको बहुत ही गूढ़ ज्ञान से रहस्य उपदेश सुनाए। मूर्तिपूजा के सुन्दर-सुन्दर प्रमाण देकर उपदेश दिया।

सच ही देवे सच ही लेवे, सच ही देखे सच ही सेवे,

सम दम आदिक षट् गुणधारी। देखा जग में संत उदारी, सार ग्राही सत् वीचारी

तब श्री गुरुदेव की आत्मविश्वास से युक्त वाणी सुनकर आर्यसमाजी चुप हो गए। लेकिन एक आर्यसमाजी ने श्री गुरुदेव की परीक्षा लेनी चाही। आचार्यश्री को भोजन पर आमंत्रित किया। गुरुदेव के पधारने पर न तो उसने ढंग से आवभगत सम्मान किया और न ही भोजन में नमक डाला और न ही भोजन की यथेष्ठ व्यवस्था की... परन्तु गुरुदेव और सारे संत शान्त चूपचाप भोजन खाकर अपने स्थान पर वापस चले आए। वैसे साधारणतः भोजन निमंत्रण देकर इस तरह बिना नमक का भोजन देना और मर्यादित व्यवस्था न करना अपमान ही कहा जाएगा। परन्तू सद्गुरुदेव चित्त से सुख व दुःख में समान रहते थे। सच्चे संतों का ये लक्षण भी है- 'अति कृपालु निःद्रोह चित्त.... सहनशीलता सार...'

वैसे बिना नमक का भोजन खाना सरल बात नहीं है। परन्तु आचार्यश्री व संत किंचित मात्र भी विचलित नहीं हुए। दूसरे दिन वही आर्यसमाजी पूज्य महाराजश्री के पास २-४ प्रेमियों को साथ लेकर आया और बोला कि मुझे क्षमा करें... मुझसे बड़ी भूल हो गई। मैं आपकी परीक्षा ले रहा था कि आपमें कितनी सहनशीलता है। आचार्यश्री ने मुस्कराकर कहा कि आप कोई चिन्ता न करें। हमें इस बात का कोई विचार या दुःख नहीं है हम तो केवल परमात्मा की बन्दगी करते हैं, उसी में ही निमग्न रहते हैं। इस प्रकार से सनातन हिन्दू धर्म की रक्षा हेतु समय समय पर अनेक सत्संग प्रवचन करके मूढ़ लोगों को जागृत कर परमात्मा की सत्ता का भान करवाया... भगवत के प्रति भक्ति-आस्था-विश्वास जाग्रत किया। सच्चे संत मान अपमान रहित होकर कार्य करते हैं। ऐसे थे सहनशील, कृपानिधान श्री गुरुदेव सदगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

शतु-शतु नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी **५**५

άE

纲

स

त्

ना म

सा

क्षी

55

30

स

त्

ना

म

सा

क्षी

ॐ श्री

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

Š

纲

स

त्

ना

म

सा क्षी

卐

ॐ श्री

स

त्

ना

म

सा

卐

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

ዡ ॐ

स

त् ना

म

सा

क्षी

卐

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा– ७४

जो जैसा बीज बोयेगा – वैसा फल पायेगा

बीज आक का बोय के - करत आम की आस। कह टेऊँ संसार में - जाको मूरख तास।।

एक समय देशारटन करते हुए युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज सदाशिव की पावन नगरी काशी नगरी में पहुँचे। काशी में पूज्य गुरु महाराज जी ने एक सिंधी धर्मशाला में डेरा डाला। उस समय धर्मशाला के सेवादारी भाई किशनचंद जी थे, जो कि स्वामी जी का दर्शन कर बहुत ही प्रसन्न हुए। उन्होंने हाथ जोड़कर स्वामी जी से कहा– हे प्रभो! हमारी काशी नगरी के भाग्य जगे हैं जो कि आपने स्वयं आकर दर्शन दिये हैं.... स्वामी जी ने कुछ दिन वहाँ रहकर भजन– सत्संग की सरिता बरसाई....

एक दिन स्वामी जी ने काशी नगरी की महिमा गाते हुए कहा- कि यह सदाशिव की नगरी सदा पूजने योग्य है... सभी शास्त्रों, संत-महात्माओं ने इस नगरी की अपार महिमा गाई है। यह सारे भारत में सनातन धर्म विद्या का निकेतन है। इस नगरी में साधु-संत, ब्राह्मण, ऋषि, मुनि और वैरागी रहते हैं। यह तप एवं वैराग्य की भूमि है। ऐसी पवित्र भूमि में कभी भी पाप कर्म नहीं करना चाहिए जैसे कि मांस, मछली, शराब का सेवन, जूआ, झूठ, कपट, ठगी, हिंसा आदि निषिद्ध कर्म कभी नहीं करने चाहिए।

यह सुनकर भाई किशनचंद जी ने हाथ जोड़कर स्वामी जी से कहा, हे भगवन्! आप जो कुछ भी कहते हैं, वह सत्य है, परन्तु यहाँ काशी में तो अधिक ठगी और पाप होते हैं और माँस मछली का सेवन भी अत्यधिक मात्रा में होता है। यह सब इसलिए कि शंकर भगवान ने काशी को वरदान दिया है कि "यहाँ पर पापी अथवा पुण्यात्मा, जो भी मरेगा, वह मुक्ति पायेगा... इसलिए यहाँ के लोगों को पाप कर्म करने से डर ही नहीं लगता।"

स्वामी जी ने कहा, यह बात तो सच है कि काशी नगरी को भगवान शिव जी का वरदान मिला हुआ है। परंतु अज्ञानी जीव उसका अर्थ नहीं समझते... भगवान् का कहना है, कैसा भी जीव, जो अत्यधिक दुर्जन अथवा पापी हो, अंत में काशी में आकर पाप कर्म छोड़कर, शुभ कर्म करे और भगवान का भजन करे तब ही मृत्यु

🕉 श्री सत्नाम साक्षी 🖪 🕉 श्री सत्नाम साक्षी 🖫 🕉 श्री सत्नाम साक्षी 🖫 🕉 श्री सत्नाम साक्षी 🖫 🅉 श्री सत्नाम साक्षी 🖼

άE 纲

स त् ना म सा

क्षी 卐 Š 纲 स त्

ना म सा क्षी 卐 Š 纲

स त् ना म सा क्षी

卐 Š 纲 स

त् ना म सा क्षी **5**5

άE 纲 स त् ना म

सा

क्षी

卐

के बाद वह सीधा स्वर्ग जायेगा। ऐसा नहीं है कि वह अंत तक पाप कर्म करता रहे तो भी मरने के बाद उसका

हिसाब किताब नहीं होगा और वह स्वर्ग जायेगा। वैकुण्ठपुरी भगवान विष्णु की है, स्वर्ग लोक देवराज इन्द्र का है। वहाँ पर पुण्यात्मा के सिवा कोई नहीं रह सकता.... इस बात में किसी को कोई शंका हो तो वह प्रेम और श्रद्धा पूर्वक पूछ सकता है। इस पर एक पंडित ने सभा में खड़े होकर पूछा, शास्त्रों में जो लिखा हुआ है कि कैसा भी पापी क्यों न हो, वह अगर काशी में मरेगा, तो मुक्त हो जायेगा, क्या यह झूठ है? स्वामी जी ने कहा-'वेद पुरान कहो मत झूठे, झूठा जो न विचारे।।'

शास्त्र वेद झूठे नहीं है, झूठे वे लोग हैं जो विचार नहीं करते.... संत कबीरदास जी ने भी कहा है-

मन कठोर मरे बनारस, नरक न बाचा जाई। हरि का सन्त मरे हारन भी, सगली सैन तराई।।

पापी, अत्याचारी अगर काशी में भी मरेगा तो भी नरक जाने से नहीं बच पायेगा और सीधा नरक में जायेगा परन्तु भगवान का भक्त पुण्यात्मा अगर हारन अर्थात् मगहर में भी मरेगा तो भी तर जायेगा और दूसरो जीवों का भी उद्धार करेगा.... यह भारतभूमि कर्म धर्म की भूमि है। जो जैसा बीज बोयेगा, उसे वैसा ही फल पायेगा।

जोई किसको दु:ख है देता, वो भी दुख को पाता है। जैसा जिसने बीज है बोया, तैसा वह फल खाता है।।

जो जैसा कर्म करेगा, उसे वैसा ही कर्मों के अनुसार अवश्य ही फल मिलेगा.... स्वामी जी का सद्उपदेश सुनकर उपस्थित सैकड़ों की संख्या में श्रद्धालुजन जिसमें विद्वतूजन, ब्राह्मण व सभी जातियों के लोग उपस्थित थे उन सबके हृदय में ज्ञान की ज्योति जागृत हुई और सबने सदैव शुभ कर्म करने का प्रण-संकल्प लिया।

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

άE

纲

स त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

纲

स

त्

ना

म सा

क्षी

卐

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त् ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

άE 纲 स त् ना

म

सा क्षी 卐 άE

纲 स त् ना म सा

क्षी 55 άE 纲 स त् ना

म सा क्षी 卐 Š 纲 स

त् ना म सा क्षी **5**5

άE 纲 स त् ना

म

सा

क्षी

卐

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा–75

भक्ति करनी कढिन है.....

एक समय सक्खर जिले के इजमत नगर का भाई गोविन्दराम युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के पास आया और कहने लगा कि मैं दो दिन पूर्व बाजार से निकलते हुए कुछ लोगों को वैराग्यपूर्ण भजन गाते हुए देखा, पता करने पर मालूम हुआ कि वे आपके द्वारा रचित भजन गाँकर आनन्दित हो रहे थे, सो उसी समय विचार किया कि आपके पावन दर्शन करके कुछ लाभ प्राप्त करना है। सो चरण-शरण में आ पहुँचा है। स्वामी जी बोले, बहुत अच्छा हुआ कि आप यहाँ पर आये। अब आप भोजन करें और रात को सत्संग में आकर बैठना।

रात्रि को भाई गोविन्दराम सत्संग श्रवण करके अगले दिन प्रातःकाल स्वामी जी के श्रीचरणों में मस्तक झुकाकर कहने लगा- 'भगवन्! सेवक पर भी अपनी कृपा दृष्टि करें। मुझे भक्ति वैराग्य का ज्ञान प्रदान करें।' स्वामी जी ने मुस्कराकर उसकी तरफ देखा और कहने लगे- 'हे तातृ! आपकी पोशाक, उठना बैठना अफसरों के समान है, शरीर पर बहुत से आभूषण भी धारण कर रखे हैं। संसार में परमात्मा की भक्ति करना कोई सरल कार्य नहीं है। यह मार्ग बहुत कठिन है। यह एक दो दिन का काम नहीं है। संसार में प्रेम लगाना सरल है किंतु अंत तक उसे निभाना बहुत कठिन है। **'भक्ति करनी कठिन है- ज्यों खड्ग की धार।।'** इसलिये आप इस बात को छोड़कर अपने आनन्द में आनन्दित रहिये। यह सुनकर भाई गोविंदराम अपने कमरे में आये और सारे कीमती वस्त्राभूषण उतारकर सादे वस्त्र पहनकर श्री गुरु महाराज जी के श्री चरणों में आकर पुनः निवेदन करते हुए कहने लगे, 'भगवन्! अब तो सेवक पर कृपा दृष्टि करके अपना सेवक बनाने की अनुकम्पा करें।'

भाई गोविन्दराम का पूर्ण प्रेम व दृढ़ निश्चय देखकर सद्गुरु महाराज जी ने पवित्र सिंधु नदी के तट पर विधिपूर्वक गोविन्दराम को गुरुमन्त्र की दीक्षा प्रदान की। मुझे आज्ञा दें तो स्वतंत्र होकर आपके चरणों में रहकर भगवद् भक्ति करूँ। इतना सुनकर श्री गुरु महाराज जी ने सुंदर उपदेश दिया- त्याग दो प्रकार का होता है- 9. स्थूल त्याग, २. सूक्ष्म त्याग.

- 1. स्थूल त्याग : उसे कहते हैं कि संसार का सारा व्यवहार व धन पुत्रादि का त्याग करके किसी एकांत स्थान अथवा गंगा के पवित्र किनारे पर निश्चिन्त होकर एकमात्र परमात्मा का ही भजन स्मरण ध्यान करता रहे।
- 2. सूक्ष्म त्याग : उसे कहते हैं कि मन से भोगों की वासना का त्याग करके वेदविहित वर्णाश्रम धर्म का पालन करते हुए परमात्मा का भजन करता रहे। जो भी कर्म करे वह अनासक्त होकर करे। अपने घर को धर्मशाला की तरह समझ- कर अपने परिवार व अपने को मुसाफिर समझकर संसार में विचरे, धन पदार्थ को परमात्मा की दी हुई धरोहर समझकर उसको योग्य सेवक की तरह देख-भाल करता हुआ स्वयं भी उसका उपयोग करे और दूसरों की भी सेवा करे व गुरुमुंत्र का अभ्यास करे। इसलिये कल से तुम अपने व्यवहार कार्य में लग जाओ और व्यवहार के साथ परमात्मा की भक्ति-नाम सुमरण भी करते रहो, जिससे तुम्हारा कल्याण होगा।

इसी प्रकार श्री गुरुदेव के पावन दर्शन-सत्संग श्रवण कर अनेक लोगों ने भक्तिपथ का रास्ता अपनाया। S. M. R. शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

άE 纲 स

त् ना म

सा क्षी

Š 纲 स

ना म सा क्षी 卐 άE

纲 स त् ना म सा

क्षी 卐 Š 纲 स त् ना

> **5**5 άE

卐

त्

म सा क्षी 纲 स त्

ना

म

सा

क्षी

卐

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा–76

सूखी नहर में पानी लहराने लगा.....

हम आये तव शरण में, राखो हमरी लाज। कह टेऊँ निज दास लख, करिये पूर्ण काज।।

एक बार कार्तिक मास का समय, युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज कहरनि गाँव में छह दिनों तक रहे और वहाँ पर सत्संग सरिता में लोगों को अमृतरस का भरपूर पान कराया... सभी भक्तजन गुरुदेव का दर्शन व सत्संग श्रवण करके बड़े ही आनन्दित हुए।

इस गाँव के निवासी खेतिहर थे अर्थात् सबकी खेती बाड़ी हुआ करती थी, इस गाँव में नहर के पानी से ही खेतों में सिंचाई हुआ करती थी कहने का तात्पर्य कि इस गाँव की सिंचाई का मुख्य स्त्रोत नहर का पानी ही था और उक्त नहर में पिछले कई दिनों से पानी वर्षा न होने के कारण सूख गया था जिससे सारे ग्रामवासी एवं समीप के भी अनेक गाँवों के निवासी पानी न होने से अपनी फसलों की सिंचाई नहीं कर पा रहे थे। फसल सूख गई थी। बहुत नुक्सान हो रहा था। इस कारण सभी किसान भाई बहुत दुःखी और परेशान थे।

एक दिन सत्संग सभा में स्वामी जी का स्वागत करते हुए कहरनि गाँव के मुखिया साहब ने स्वामी जी से करबद्ध प्रार्थना करते हुए कहा कि उनके गाँव में नहर का पानी नहीं आ रहा है। जिससे यहाँ के किसान भाई बहुत परेशान हैं। आप ऐसा आशीर्वाद दीजिए कि उसमें पर्याप्त पानी आ जाये और आगे इस तरह की कोई तकलीफ़ न हो... सद्गुरु महाराज जी ने उनकी करुणामय प्रार्थना सुनकर कहा- '**ईश्वर सब ठीक कर देंगे**'- पूज्यश्री ने ओजस्वी वाणी में पल्लव पाया... और परमात्मा से प्रार्थना की... महापुरुषों की सद्वाणी सार्थक हुई और उस वर्ष भरपूर वर्षा हुई...

सद्गुरु महाराज जी की ऐसी महती कृपा हुई कि कुछ दिनों में ही नहर पानी से लबालब भर गई और बताते हैं कि फिर कभी उस गाँव में पानी की कमी नहीं हुई। वह नहर सदा लबालब भरा ही रहा। चहुँ ओर खुशियाँ छा गईं... सभी ग्रामवासी प्रसन्न होकर गुरुदेव भगवान की जय-जयकार करने लगे।

ऐसे परम पूजनीय सत्पुरुष योगीराज सर्व ऋिद्ध सिद्धियों के मालिक सर्व जीवों का कल्याण करने वाले आचार्य श्री सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के पावन श्रीचरणों में कोटि-कोटि नमन-वन्दन!

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

網

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

麲

स त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

ॐ श्री स त्

स त् ना म

म सा क्षी **५**

3ँ% श्री स त् ना म सा

55333月月月月日日日</l>

क्षी

卐

άE

श्री स त्ना म साक्षी **५** ॐ श्री स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा-77

अन्त समय में दर्शन देकर – भक्त मंघर को किया निहाल

भगवत अपने दास का- निशिदिन है रखवार। कह टेऊँ भूलत नहीं- हरदम करत सम्भार।।

सिंध प्रदेश का छोटा सा मलदसी गाँव, यहाँ पर मंघर भगत रहा करते थे। जो कि गाने-बजाने में निपुण व पारंगत था। मंघर भगत का पूरा जीवन भक्ति करते हुए ही प्रभु परमात्मा व अपने सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की महिमा का प्रचार किया करते थे। कभी-कभी वे युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की संत मण्डली में भी शामिल होते थे। अब अवस्था बढ़ चली थी। शरीर साथ नहीं दे पा रहा था। प्राकृतिक प्रक्रिया के अन्तर्गत उनके तन में भी दिनोंदिन कमजोरी आने लगी थी और अब उन्हें व उनके परिवार वालों को भी लगने लगा था कि अंत समय निकट है।

आचार्यश्री के प्रिय शिष्यों में से **मंघर भगत** भी जाने जाते थे। मंघर भगत की तो जैसे हर साँस में सद्गुरु महाराज जी का नाम ही रहता था। एक बार मंघर भगत का स्वास्थ्य इतना गिर गया कि वे अचेत से हो गये। पिरजनों पिरवार वालों ने उनका अंत समय जानकर, जमीन को गौ गोबर से लीप पोत कर उस पर उनको सुला दिया। कुछ ही क्षणों बाद जब उनको थोड़ा सा होश आया तो अपने को नीचे जमीन पर लेटा हुआ देखकर अपने पिरवार वालों से बोले कि तुम लोगों ने मुझे नीचे क्यों लेटाया हुआ है, मैं अपने प्यारे श्री गुरुदेव के दर्शन करने के पहले नहीं जाऊँगा.... मेरे शरीर का अवसान अपने श्री गुरुदेव के दर्शनों के बाद ही होगा.... मंघर भगत को यह पक्का विश्वास था।

स्वामी जी उस समय सिंध में लोगों को धर्ममार्ग में लगाने के लिए रटन करते हुए सिंध की दूसरी दिशा में थे, जो मलदसी गाँव से कोसों दूर थी.... अब सच्चे भक्त की हृदयस्पर्शी पुकार भला भगवत्स्वरूप सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के कानों तक क्यों कर न पहुँचेगी... इधर मलदसी गाँव में मंघर भगत को उनके परिवार वाले कह रहे हैं कि यह कैसे संभव होगा? स्वामी जी तो बहुत दूर गये हुए हैं और आपकी स्थित....बड़ी नाजुक है। अभी यह कह ही रहे थे कि अचानक एक अलोकिक दिव्य प्रकाश से वह क्षेत्र कौंध सा उठा... क्या देखते हैं कि आचार्यश्री सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज एक हाथ में डण्डा... दूसरे हाथ में चिप्पी धारण किये हुए आते दिखाई पड़े... सबके शरीर में खुशी से आश्चर्यमिश्रित सिहरन सी दौड़ गई। पूज्य महाराज श्री ने आते ही मंघर भगत के सिर पर वात्सल्य का हाथ फेरते हुए 'सत्नाम साक्षी' का पावन सुमरण कराया और श्री गुरुदेव के दर्शन कर वह बहुत गद्-गद् हुआ... मंघर भगत ने अपने प्यारे गुरुदेव के दर्शन करते ही बड़े ही शान्तभाव से सत्नाम साक्षी कहते हुए देहोत्सर्ग किया।

इस अलोकिक घटना को देखकर मलदसी गाँव के लोग भावविभोर होकर 'सद्गुरु भगवान के श्रीचरणों की धूल' मस्तक पर लगाकर अपने को भाग्यशाली मानने लगे।

ऐसे थे करुण भाव मन-हृदय की सच्ची पुकार सुनने वाले सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज! उनके पावन श्रीचरणों में पूर्ण भावभक्ति से अनन्त नमन-वन्दन!

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

30

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

άE 纲 स त् ना म सा क्षी 卐 άE 纲 स त् ना म सा क्षी 卐 Š 纲

स

त्

ना

म

सा क्षी

卐

άE

纲

स

त्

ना

म सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा–78

ईसर भक्त की सुनी पुकार – सांईं ने दिया मोक्ष द्वार

जीवन मुक्ति संत जन, दिल के बड़े उदार। कह टेऊँ व्यवहार में, होवत सदा बहार।।

मंगलमूर्ति सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज जिन्होंने जन कल्याणार्थ श्री प्रेम प्रकाश मण्डल व टण्डोआदम में श्री अमरापुर दरबार (डिब) की स्थापना की। डिब में अनेक संत साधु महात्मा व सेवाधारी आचार्यश्री के साथ रहकर अपने जीवन उद्धार के लिए नाम सुमरण सेवा व साधना किया करते थे। आचार्यश्री लोगों को सत्मार्ग की राह पर चलाने के लिए नित्य रटन पर रहते थे, पूज्य महाराज श्री के साथ उनकी आज्ञा से मण्डली में कुछ संत प्रेमी भी चलते थे। एक बार श्री गुरुदेव भगवान जब देशारटन पर बेराणी गाँव में थे जो टण्डोआदम से सैकड़ों कोस की दूरी पर था। अब इधर क्या घटना घटती है उस ओर ध्यान देवें...

श्री अमरापुर दरबार पर भगत ईसर भी सेवा साधना में रहते थे। उन्होंने अपने जीवन का अधिकांश समय गुरुदेव भगवान की सेवा, नाम जप, प्रभु आराधना व गुरु दरबार की सेवा में ही लगाया हुआ था। एक बार अचानक ईसर भगत गंभीर रूप से बीमार पड़ गये। वैद्य डॉक्टरों ने उनके बचने की कोई उम्मीद नहीं दिखाई। इधर ईसर भगत जिसका मन सदैव युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज से ही जुड़ा रहता था, उसका हृदय अपने श्री गुरुदेव भगवान स्वामी टेऊँराम जी महाराज को ही पुकार रहा था। हृदय में यही सद्भाव लिये बस अपने गुरुदेव भगवान सद्गुरु टेऊँराम भगवान के दर्शनों के लिए ही वह तड़प रहा था। दुखी प्यारे देख भक्त को- मन में ...

सद्गुरु महाराज जी थे सैकड़ों कोस दूर.... लेकिन कहते हैं न कि भक्त यदि सच्चे मन से प्रभु परमात्मा गुरुदेव को पुकारे/स्मरण करे तो हृदय की तार उन तक पहुँच जाती है और फिर प्रभु परमात्मा गुरुदेव स्वयं दौड़ पड़ते हैं अपने भक्त से मिलने के लिए....

भगत ईसर के हृदय की करुण पुकार सद्गुरु महाराज जी तक तुरंत ही पहुँच गई... बस कुछ ही क्षणों में समस्त ऋद्धियों-सिद्धियों के दाता सद्गुरु महाराजजी श्री अमरापुर दरबार आ पहुँचे.... ईसर भगत के सिर को गोदी में लेकर सत्नाम साक्षी – साखी शिवोऽम् का सुमरण कराया और ईसर भगत जिसकी श्वास केवल सद्गुरु भगवान के दर्शनों में ही अटकी थी... सद्गुरु महाराज जी के मंगल दर्शन करते ही पंचभौतिक देह को छोड़कर अमरापुर धाम को चले गये... अगले दिन ईसर भगत की अंतिम यात्रा में स्वयं आचार्यश्री ने कंधा दिया और ऐसे सौभाग्य पर भला ईसर भगत को मुक्ति क्यों कर न मिलेगी... जिसके ऊपर साक्षात् परमेश्वर स्वरूप सद्गुरु भगवान की कृपा का वरद् हस्त हो....

कहाँ बेराणी गाँव? कहाँ टण्डोआदम? बस- हृदय में चाहिए सच्ची भाव-भक्ति और पूर्ण समपर्ण रूपी अटूट विश्वास... तो क्यों कर न होगा - भक्तों का बेड़ा पार! फिर विधि-विधान से श्री गुरुदेव भगवान के पावन सानिध्य में उनका अंतिम संस्कार हुआ और उसे परम पद प्राप्त हुआ।

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

網

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

ॐ श्री स

स त् ना म

म सा क्षी

卐

ॐ श्री स त

त् ना म सा क्षी

ज % श्री स त् ना म

सा क्षी **५** औ स त्

ना म सा क्षी **5** % श्री

स त्ना म सा क्षी 'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा–79

खटू भक्त की पुकार – खप्न में हुई साकार

सत्गुरु सम केवट नहीं, देखा जगत मंझार। कह टेऊँ भव सिन्धु से, सबको करहै पार।।

हालिन गाँव का निवासी खटू भगत जो कि युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का अनन्य भक्त था और सिंध में जगह- जगह सद्गुरु महाराज जी की प्रेमा-भक्ति के गुणानुवाद गाया करता था... उम्र का पड़ाव, प्राकृतिक शारीरिक प्रक्रिया अन्तर्गत उसका तन भी अब वृद्धता को प्राप्त हो चुका था... लेकिन तार सद्गुरु महाराज जी से दिन-रात जुड़ी हुई थी... कहते हैं न कि जिस बात का दिन भर चिन्तन-मनन किया जाए तो स्वप्न में भी वही बातें- चित्रित होकर आती रहती हैं। बार-बार उसी का स्मरण कराती हैं!

एक बार उसकी क्षीण काया ने रात के अंतिम प्रहर अर्थात् भोरवेले को स्वप्न में सद्गुरु महाराज जी को पुकारा कि स्वामी जी, अब मेरे तन का अंत समय आ गया है, आप आकर मेरी अंत वेली सहाई करें। स्वप्न में की गई सच्ची पुकार ईश्वरावतार सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के हृदय तक पहुँची... भक्त के दिल से निकली सच्ची पुकार वो चाहे स्वप्न में ही क्यों न हो, सद्गुरु महाराज जी के हृदय तक क्यों कर न पहुँचेगी....

इतना तो करना स्वामी - जब प्राण तन से निकले...

बस- फिर क्या था- वहीं जंगल से ही सद्गुरु महाराज जी अकेले ही पैदल ही निकल पड़े हालिन गाँव.... और कुछ ही घंटों में पूज्य गुरु महाराज जी 'भगत खटू' के निवास भवन पर पहुँच गये तब खटू भगत की चल रही थीं अंतिम श्वासें... उनके नेत्रों ने जब भगवत् स्वरूप सद्गुरु महाराज जी के दर्शन िकये तो आँखें दिव्यता से चमक उठीं, खटू भगत के चेहरे पर एक अद्भुत शांति दिखाई देने लगी... हृदय गद्-गद् हो गया! उठकर उसने सद्गुरु महाराज जी को दण्डवत् प्रणाम िकया और श्री गुरु-चरणों को धोकर मुख में चरणामृत का पान िकया, सद्गुरु महाराज जी ने अपने प्यारे खटू भगत का प्रणाम स्वीकार करते हुए 'सत्नाम साक्षी - सत्नाम साक्षी'... का उच्चारण िकया और 'सत्नाम साक्षी' कहते हुए उसी क्षण खटू भगत ने सद्गुरु महाराज जी की उपस्थित में देहोत्सर्ग िकया। अब भला ऐसे भक्तों की मुक्ति तो होनी ही है ऐसे भक्त तो निश्चय ही गुरुनगरी अमरापुर वैंकुठधाम में निवास करेंगे, ऐसा हमारा दृढ़ विश्वास है। स्वप्न में की गई पुकार भी होती है साकार! अर्थात् अंत समय में श्री गुरुदेव भगवान के दर्शन कर परम पद प्राप्त िकया। धन्य-धन्य ऐसे भक्त- जिन्हें अंत समय में भी स्वामी जी का दर्शन प्राप्त हुआ!

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

纲

स

त्

ना

म

सा क्षी

卐

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना

म

सा क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

ॐ श्री

स

त्

ना

म

सा

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

麲

स

त् ना

म

सा

क्षी 55

άE

纲

स

त्

ना म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

άE 纲

स त् ना म

सा क्षी

> Š 纲

स त् ना म सा

क्षी 卐 Š 纲

स त् ना म सा

क्षी 卐 Š 纲 स

त् ना म सा

> 卐 άE 纲

> > ना

म

सा

क्षी

卐

卐

क्षी

स त् 'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा–80

दर्शन से किया – चालीहा व्रत पूर्ण

हरि भक्त के संग से हरि भक्ती मिल जाय। कह टेऊँ हरि भक्ति से, हरि का दर्शन पाय।

सिंध हिंद के महान् यशस्वी संत, महान कर्मयोगी, युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का इस धरा धाम पर आना और सबके कष्ट-क्लेश मिटाकर हम सबको उस सत्मार्ग की ओर लगाने का समूचा श्रेय माता कृष्णादेवी के चालीस दिवसीय व्रत उपासना को ही जाता है। सर्वप्रथम माता कृष्णादेवी ने ही ४० दिन फलाहार खाकर एवं भगवत् नाम सुमरण कर चालीहा व्रत पूर्ण किया था। चालीसवें दिन स्वप्न में भगवान ने आकर दर्शन दिया और बोले- हम शीघ्र ही आपके घर अवतार लेकर आ रहे हैं.... ऐसा आश्वासन पाकर माता कृष्णादेवी ने ४१ वें दिन उपवास पूरा किया... समय पाकर माता को तपस्या का सफल मिला।

हम सबके हृदय में भी गुरुदेव व प्रभु परमात्मा के प्रति भक्ति-भाव प्रगाढ़ हो। इसी श्रद्धा- प्रेम से आज समूचा संसार जयंती महोत्सव से चालीस दिवस पूर्व 'चालीहा व्रत उपासना पर्व' को श्रद्धा भक्ति-भाव से मनाते हैं और इसके लिए विविध धार्मिक आध्यात्मिक सत्कार्य किये जाते हैं।

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के स्वर्णिम काल का वह मार्मिक प्रसंग, "स्वामी टेऊँराम चालीहा वृत उपासना" तत्कालीन समय में भी भक्तों द्वारा की जाती थी।

एक समय सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज को प्रेमी भक्तों द्वारा पता लगा कि श्री गुरुदेव भगवान के दर्शनों की लालसा हेतु गौंसपुर के भाई मन्नाराम की धर्मपत्नी माता पदीबाई ने भी चालीहा व्रत रखा है और वह प्रभु परमात्मा व श्री गुरुदेव का अखण्ड नाम सुमरण कर रही है तथा अपने आप को एक कमरे में बद करके रखा है। उसका संकल्प है कि जब तक युगपुरुष कर्मयोगी सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के दर्शन नहीं होंगे... तब तक मैं इस कमरे से बाहर नहीं निकलूँगी और व्रत भी चलता रहेगा। बड़ा ही कठोर तप था।

άE 纲 स त् ना म सा क्षी 卐 άE 纲 स त् ना म सा क्षी 卐 Š 纲 स त् ना म सा 卐 άE 纲 स त् ना म सा क्षी **5**5 άE 纲 स त् ना म सा क्षी 卐

ऐसा दृढ़ निश्चय करके ही माता पदी ने चालीहे व्रत की समय-सीमा को पूरा किया। व्रत पूरा करके निकलने के लिए घर वालों व पास पड़ौस रिश्तेदारों पंचों के अनुनय विनय को भी अस्वीकार कर दिया। माता पदी बाई भक्ति-भाव मिश्रित मृदुल वाणी में पूर्ण आस्था से बोली कि यदि मेरा प्रेम भाव सच्चा है और मेरी गुरुभिक्त भी सच्ची है तो मेरे घर सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज जरूर आएँगे और अपनी दासी को दर्शन देंगे.... यह मेरा पक्का विश्वास है अट्ट आस्था है।

थक हारकर कंधकोट व गौंसपुर के पंचों ने टण्डोआदम पहुँचकर पूज्य सद्गुरु महाराजजी को सारी बात बताई। करुणानिधान, भक्तों की हर शुभ इच्छा पूरी करने वाले, सर्व ऋिद्ध-सिद्धि के मालिक, भक्तवत्सल, आचार्य श्री सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज, यह सुनकर तत्काल उठ खड़े हुए और बोले, चलो अभी चलते हैं... उस भक्तिमती माता जी के घर... माता पदी इतना कष्ट उठाकर प्रभु परमात्मा की भक्ति कर रही है तो हम भी उस माता के दर्शन करेंगे...

देखो! श्री गुरुदेव भगवान की कैसी निर्मानता! कहाँ माता का संकल्प था कि मैं सद्गुरु महाराज जी के दर्शन करके ही व्रत खोलूँगी और कहाँ पूर्ण महायोगी, भक्तवत्सल, परम दयालु सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज कह रहे हैं कि हम भी उस माता के दर्शन करेंगे। इसे कहते हैं भक्तऔर भगवान का अनन्य प्रेम.... भक्त की भगवान के प्रति अट्टट श्रद्धा....

श्री गुरुदेव भगवान का मंगल आगमन गौंसपुर में होता है... माता पदी करती है सद्गुरु महाराज जी का दिव्य दर्शन.... सचमुच में उस समय जिन्होंने यह दृश्य देखा होगा, वे भक्त बड़े भाग्यशाली रहे होंगे और माता पदी कमरे से बाहर निकल कर सद्गुरु महाराज जी के श्रीचरणों में हर्ष-विभोर होकर कोटि-कोटि वन्दन करती है। सद्गुरु महाराज जी आशीर्वाद देकर स्वयं माता के व्रत को खुलवाते हैं और यहीं पर सद्गुरु महाराज जी के सानिध्य में हवन-यज्ञ, धार्मिक अनुष्ठान व भजन-सत्संग भी होता है। इसी के साथ सभी को श्री गुरुदेव भगवान का आशीर्वाद प्राप्त होता है।

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

30

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी **५**५

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

άE 纲 स

त् ना म

सा क्षी 卐 Š

纲 स त् ना म

सा क्षी 卐 άE 纲 स त्

ना म सा क्षी 卐

άE 纲 स त्

ना म सा क्षी

55 άE 纲 स

त् ना म सा क्षी 卐

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु खामी टेऊँराम गुण गाथा–81

गुरु मन्त्र रूपी टिकिट करती है – भवसागर से पार

टेऊँ नौका नाम की, करणधार गुरु होय। बिन श्रम भव सिन्धु से, पार जात सब कोय।।

गुरुदेव - सतुगुरु इस भवसागर से तो पार लगाते ही हैं शिष्यों को इहलोक में ले जाकर परलोक में भी उनकी सार संभाल करते हैं। मंगलमूर्ति आचार्य श्री सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज एक जिज्ञासु शिष्य की शंका का किस प्रकार निवारण करते हैं यह हम सब जिज्ञासुँ शिष्यों के लिए भी अनुकरणीय प्रेरणास्पद प्रसंग है-

युगपुरुष श्री सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के उस समय का एक पावन प्रसंग- जब पूज्य महाराज श्री हैदराबाद से श्री अमरापुर दरबार टण्डोआदम पधारे थे। वहाँ कुछ दिन रहने के पश्चातू एक भक्त प्रसाद लेकर सतुगुरु महाराज जी के पास आया। स्वामी जी ने उन्हें टुकड़ा रोटी और चटनी (ढोढो-चटणी) खिलायी और जल पिलाया इसके बाद उस प्रेमी की ओर बड़े ही स्नेह और वात्सल्य पूर्वक देखते हुए पूछा, बाबा! कैसे हैं? ख़ुश प्रसन्न तो हैं ना? बतलाइए तो कहाँ रहते हैं? कैसे आना हआ?

इतना पूछने भर से उस प्रेमी की आँखें जल से छलछला उठीं और रोकर स्वामी जी से कहने लगा- हे भगवन्! मैं आपके चरणों का दास हूँ। चैत्र मेले के अवसर पर आप से 'नाम'दान लिया था। उसमें मुझे एक शंका हो गयी है कि आप हमें यहाँ ही (इस संसार में) नहीं पहचानते तो परलोक में जब हमसे पूछताछ होगी, तब वहाँ आप हमें कैसे पहचान कर मदद करेंगे....

स्वामी जी मंद-मंद मुस्करा उठे और कहा, बाबा! आप किसी प्रकार की चिन्ता न करें, जो 'गुरु मन्त्र' आपको मिला है, उसे ही पक्की तरह याद रखो.... वही तुम्हारा सहायक बनेगा और कल्याण करेगा।

सद्गुरु सम केवल नहीं - देखा जगत मंझार। कह टेऊँ भव सिन्ध से - सबको करहैं पार।।

शेष हमारे पहचानने की वहाँ जरूरत नहीं है। आप हमें अच्छी तरह पहचान लेना। जैसे अगर कोई व्यक्ति टिकट लेकर गाड़ी में बैठेगा, तो उस व्यक्ति (टी.टी.ई.) को केवल टिकिट ही दिखाना पड़ता है, वह टी.टी. ई. ऐसे नहीं पूछेगा कि आपकी जाति क्या है, काम क्या करते हो? टिकिट किससे ली है उसे तो केवल टिकिट ही देखना पडता है।

उसी प्रकार से जिन जिज्ञासुओं ने पूर्ण सतुगुरु देव से 'मन्त्र रूपी टिकिट' लिया है, वे बिना रुकावट के ब्रह्मलोक अमरापुर धाम में जाकर पहुँचते हैं। उनके मार्ग में इन्द्रलोक, सूर्यलोक, यमलोक आदि जहाँ-जहाँ भी उनसे पूछताछ होती है, वहाँ पर वे गुरुदेव के नाम का पास (टिकिट) दिखाते हैं। हमने भी आपको 'नाम' रूपी पास (टिकिट) दे दी है... उसका सतत् अभ्यास कर पूर्ण पद की प्राप्ति हो जायेगी। गुरुदेव का दिया हुआ 'नाम' ही सतुगुरु का रूप है।

शब्द गुरू का रूप है, गुरू शब्द के माहिं। कहे टेऊँ यूं जान के, निसदिन सुमरो ताहिं।।

वह भक्त श्री सत्गुरु महाराज जी के श्रीमुख से ऐसे मधुर यथार्थ वचन सुनकर अत्यंत आनन्दित हुआ और उसके मन की सारी शंकाएँ मिट गईं। उसे विश्वास हो गया अब मेरा कल्याण निश्चित होगा।

शतू-शतू नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

網

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

ॐ श्री स त्

त् ना म

सा क्षी **५**

ॐ श्री सत्नम्स

क्षी **५५** % श्री स

म साक्षी **५** % श्री स

ना

त् ना म सा क्षी

सा

क्षी

卐

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी' **सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा–82**

किसने भेजा भोजन प्रसाद – कौन था लाने वाला

स्वार्थ बिन सेवा करे, सबको दे सन्मान। टेऊँ समता में रहे, सोई सन्त पछान।।

समदृष्टि रखकर बिना किसी स्वार्थ के सदैव सबको सम्मान देना व सेवा करना ये संतों के प्रमुख लक्षण होते हैं। युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के जीवन में ये सभी सद्गुण विद्यमान थे। कोई भी अतिथि, संत–महात्मा, गरीब, अनाथ आ जावे तो उसकी सेवा बड़े ही स्नेह भाव से किया करते थे।

एक समय खण्डू गाँव, जहाँ युगपुरुष स्वामी टेऊँराम जी महाराज का जन्म स्थान है, वहाँ पर संत-महात्माओं की मण्डली आ गई। संतों को भूख- प्यास भी बहुत लगी थी। संयोग भी कुछ ऐसा बना कि उस समय घर पर कुछ भी राशन सामग्री नहीं थी। सभी लोग चिन्ता में पड़ गये। तब माता कृष्णादेवी ने सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज से कहा- सांईं बेटा! घर में तो कुछ भी भोजन-सामग्री नहीं है, न ही आटा, न ही चावल, न ही दाल.... न ही कोई सीदा-सामान... इन संत-महात्माओं को भोजन कैसे करायेंगे...?

तपस्वी-अवधूती संतों को किस बात की चिन्ता.... ये तो पूर्ण सिद्ध होते हैं। उन्हें तो केवल माँ अन्नपूर्णा देवी से कहने की देरी है.... वो तो सदैव संत-महापुरुषों की सेवा में तत्पर रहती है। तब स्वामी जी ने माता से कहा- माँ! आप चिन्ता न करें... प्रभु परमात्मा सब भली करेंगे... उनका काम वो ही जाने... आप तो केवल अच्छी तरह संत मण्डली की सेवा करो और आसन दो। दोपहर में सभी संतों को भोजन-प्रसाद अवश्य ही खिलायेंगे....

इतना कहकर स्वामी जी तो बैठ गये भजनानन्द की मौज में... मन की तार जोड़ दी उस प्रभु परमात्मा से.... किसी भी प्रकार की चिन्ता नहीं... घर परिवार वालों को चिन्ता होने लगी कि संतों को भोजन कैसे करायेंगे.... लीला पुरुषोत्तम गुरुदेव सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज की लीला को कौन समझे... . कब कौन सी लीला रच दें....

माता कृष्णादेवी सोच ही रही थीं कि अचानक तीन-चार भक्त लोग माता जी के पास आये और कहने लगे- माता- माता जी! ये भोजन स्वीकार करें.... भोजन-प्रसाद भी कम से कम ४५-५० लोगों का था। पूछने पर कहा- आज भाई ईसरदास सालारे वाले के यहाँ उत्सव है, उन्होंने ही भोजन भेजा है.... भोजन आदरपूर्वक स्वीकार कर माता ने सभी संत-महात्माओं को भरपेट भोजन-प्रसाद खिलाया... सभी संत बड़े ही प्रसन्नचित्त होकर अपने स्थान को लौट गये। सायंकाल जानकारी करने पर ज्ञात हुआ कि कि ईसरदास के यहाँ तो कोई भी उत्सव नहीं है.... अब कौन समझे ऐसे दुर्लभ योगियों की लीलाओं को.... हमारी समझ से कोसों दूर.... उनकी लीला वो ही जाने! महापुरुषों के भजनानन्द में होती है अलौकिक शक्ति! उसी से सारे कार्य सिद्ध हो जाते हैं।

शतु-शतु नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

網

स

त्

ना म

सा

क्षी

55

άE

網

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

網

स

त्

ना

म

सा

ॐ श्री स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

Š

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

纲

स

त्

ना

म सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा–83

सनातन धर्म के रक्षक – सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज

धर्म अपने माहिं हरदम - प्यार कर नटना नहीं। सीस जावे जान दे - पर धर्म से हटना नहीं।।

सिन्ध के कादरपुर शहर में एक कब्रिस्तान था, जहाँ पर एक मुस्लिम पीर की मज़ार (कब्र) थी। वहाँ पुत्र प्राप्ति हेतु किसी के कहने पर हिन्दू धर्मावलम्बी कर्मचन्द नाम का व्यक्ति परिवार सहित जाकर बैठ गया किन्तु कहते हैं न, **संत तो सनातन धर्म के खम्भे होते हैं।** धर्म पालन करने के लिए अपने प्राणों तक की आहुति दे देते हैं। मनुष्यों को धर्म पालन करवाने के लिये समय-समय पर सदुपदेश देकर उन्हें सच्चे मार्ग पर लगाते हैं। अनेक लोगों के समझाने पर भी कर्मचन्द उस मजार से उठने के लिए तैयार ही नहीं हो रहा था। तभी लीला पुरुषोत्तम अन्तर्यामी युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज उस स्थान पर पहुँच गये, जहाँ कर्मचन्द परिवार सिहत बैठा था। सारा समाचार जानकर स्वामी जी ने कर्मचन्द से पूछा- भाई, तुम यहाँ क्यों बैठे हो? इतने उदास क्यों हो? क्या कारण है? तब कर्मचन्द स्वामी जी के आगे हाथ जोड़कर प्रार्थना करने लगा- हे मेरे टेऊँराम बाबा! अन्तर्यामी प्रभृ! मुझ पर कृपा करो.... हमारे घर में संतान नहीं है.... बिना संतान के मन अशान्त रहता है.... घर सूना-सूना लगता है.... बस-स्वामी जी! आप इस दास पर कृपा कर दो। सद्गुरु महाराज जी भी अपनी अवधूती मौज में थे। कौन समझे महापुरुषों की रमझ और ब्रह्मानन्द की मस्ती को... उन्हें तो सिर्फ कृपा दृष्टि करने की देरी है। जिसके ऊपर कृपा कर दें उसका तो जीवन ही सँवर जाता है। ऐसी कृपा दृष्टि स्वामी जी ने उस भक्त कर्मचन्द के ऊपर की... स्वामी जी ने कहा- चलो हमारे साथ.... हम भगवान से तुम्हें पुत्र दिलवायेंगे.... सिद्ध महापुरुषों के तो कहने की देरी होती है, कब किसके ऊपर कृपा दृष्टि हो जाये.... स्वामी जी ने अपना आशीर्वाद स्वरूप वृहद् हस्त उसके ऊपर रखा... वृहद् हस्त यानी वरदान देना.... गुरु महाराज जी ने कहा- तुम अपने घर जाओ और निरन्तर 'सत्नाम साक्षी.... सत्नाम साक्षी.... ' महामन्त्र का जाप करते रहो। प्रभु परमात्मा तुम्हारी मनोकामना शीघ्र ही पूर्ण करेंगे। सिद्ध महापुरुषों का कहा कभी निरर्थक नहीं हो सकता। सद्गुरु महाराज जी के वचनों पर पक्का विश्वास कर कर्मचन्द परिवार सहित निरन्तर 'सत्नाम साक्षी' गुरुमंत्र का जाप करता रहा... समय पाकर भगवद् कृपा और युग महापुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के आशीर्वाद से उसे पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। स्वामी जी की ऐसी लीला देखकर गद्गद् हो गया और वह गुरु महाराज का शिष्य बन गया। ऐसे अनेक हिन्दू धर्मावलम्बियों को स्वामी जी ने सत्यमार्ग पर लगायां.... अपनी जाति व धर्म से प्रेम करना सिखाया....

हमें भी अपने धर्म से कभी विमुख नहीं होना चाहिए। अपना धर्म ही सर्वश्रेष्ठ होता है। इसी प्रकार हिन्द- सिन्ध में देशारटन कर हिन्दू धर्म का प्रचार-प्रसार कर पुनः सनातन धर्म की स्थापना की। ऐसे थे सनातन धर्म के रक्षक धर्मावतार भगवद स्वरूप सद्गुरु श्री स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

纲

स त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

ॐ श्री सत्नाम साक्षी फ ॐ श्री सत्नाम साक्षी फ ॐ श्री सत्नाम साक्षी फ ॐ श्री सत्नाम साक्षी फ

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

άE 纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

Š

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

Š

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

सद्गुरू स्वामी टेऊँराम गुण गाथा–८४

गुरु और शिष्य का स्नेहात्मक अनोखा मिलन

गुरु का दर्श देख के - टेऊँ भया निहाल। सब अंग फूले फाग ज्यों - देखा दीन दयाल।।

गुरु व शिष्य का अनोखा व अटूट सम्बन्ध होता है। अगर शिष्य का गुरु के प्रति समर्पण भाव है तो गुरु भी पूर्ण रूप से शिष्य का आधार बिन्दु होता है। जब एक दूसरे के प्रति स्नेह भाव हो तब शिष्य का गुरु के प्रति और गुरु का शिष्य के प्रति गहरा अतुलनीय सम्बन्ध बन जाता है। शिष्य की स्मृति सदैव श्री गुरु के चरणों में स्थित होती है और गुरु अपने शिष्य की पालना करते है। जैसे माता घर का कोई भी कार्य क्यों न कर रही हो पर उसका पूरा ध्यान नन्हें बालक पर टिका रहता है। किसी कारण बालक अगर माँ से दूर भी हो जाए तो माँ का वात्सलय उसे बच्चे की ओर स्वतः ही खींच लेता है। ऐसा ही गुरु-शिष्य का अनोखा अट्ट सम्बन्ध दादा गुरु श्री सांईं आसूरामजी महाराज व सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज का था!

एक समय दादा गुरु सांईं आसूरामजी महाराज अपने हालाना गाँव में बैठे हुए थे। एकाएक उनका ध्यान स्वामी टेऊँरामजी की ओर गया.... मन ही मन अपने बालवतू शिष्य से मिलने हेतु खण्डू गाँव स्वामी टेऊँराम जी के पास जाने को उद्यत हुए... कहा भी गया है 'सत्गुरु शिष्य की करत पालना, माता पिता ज्यों बालक की ' तब दादा जी निकल पड़े अपने प्रिय शिष्य की पालना करने... एक ओर गुरु के मन शिष्य से मिलने की उत्कंठा तो दूसरी ओर स्वामी टेऊँराम जी के मन में भी गुरु दर्शन की लालसा, उसी वक्त जाग्रत हो उठी... मन ही मन गुरु दर्शन की लालसा लिये निकल पड़े स्वामी टेऊँराम... जिस प्रकार भगवान को भक्त की और भक्त को भगवान के दर्शनों की हृदय में तीव्र लालसा होती है, उसी प्रकार आज यहाँ भी गुरु को शिष्य की और शिष्य को गुरु के दर्शनों की प्यास खींच रही है, दोनों एक दूसरे से मिलने को आतुर.... हृदय की पुकार हृदय तक... तीव्र उत्कंटा...

दादा सांईं आसूरामजी महाराज निकले अपने गाँव से और शिष्य टेऊँराम निकले गुरु दर्शनों के लिये अपने गाँव से.... देखो! कितना अनोखा व अटूट सम्बन्ध है। दोनों के मन में थी मिलन की आस, एक-दूसरे से मिलने की आतुरता.... ऐसा होता है गुरु-शिष्य के हृदय की तार का मिलन मार्ग में चलते चले जा रहे थे एक ओर गुरुदेव दादा सांईं आसूरामजी और दूसरी ओर स्वामी टेऊँराम जी.... राह के बीचों-बीच हुआ गुरु शिष्य का अनोखा मिलन.... दोनों एक-दूसरे को बड़े स्नेह भाव से देख रहे थे... प्रेम विब्लता छलक रही थी.... गुरुदेव के दर्शन कर स्वामी टेऊँराम के प्रेमाश्रु बह चले.... तब निकट पहँचकर स्वामी टेऊँराम अपने गुरुदेव दादा सांईं आसूरामजी के श्रीचरणों में नत मस्तक हुए... दण्डवत् प्रणाम किया। गुरुदेव ने स्नेहपूर्वक टेऊँराम को गले लगाया। श्री गुरुदेव का अपने शिष्य पर इतना स्नेह, इतना दुलार, इतनी कृपा.... तो ऐसा होता है गुरु और शिष्य का अनूठा- अतुलनीय, अवर्णनीय स्नेहात्मक सम्बन्ध....

S. M. R.

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

麲

स

त्

ना

म

सा क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

ॐ श्री स त्

स त् ना म

म सा क्षी **५**५

ॐ श्री स त् ना

म सा क्षी **५५** ॐ श्री स

त् ना म सा क्षी

ॐ श्री स त् ना म सा

क्षी **5** 3% श्री स

3ँ श्री सत्नाम साक्षी 15 'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा–८५

'गुरुदेव साई आसूराम' के प्रति सेवा–भाव

गुरु की सेवा जो करे - गुरु की आज्ञा मान। कह टेऊँ गुरु नाम रट - गुरुमुख सो पहिचान।।

सेवा भी एक प्रकार से भगवत् भक्ति ही होती है। सेवा से अभिमान दूर होता है और निश्चलता-निर्मानता का भाव आता है। साथ ही शरीर स्वस्थ व निरोगी रहता है। अगर वह सेवा भी "श्री गुरुदेव" की हो- तो सोने में सुहागा.... श्री गुरुदेव का आशीर्वाद हृदय से मिलता है। श्री गुरुदेव प्रसन्न अर्थात् भगवान् प्रसन्न.... ऐसे ही थे सेवा अवतारी गुरुभक्त युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज....

स्वामी टेऊँराम जी महाराज के गुरु, जिसे सब 'दादा गुरुदेव सांईं' कहा करते थे। वे दादा सांईं आसूराम जी महाराज नवाहालन में, जो टण्डोआदम से थोड़ी दूरी पर था, स्वामी जी दादा सांईं आसूराम जी महाराज से मिलने के लिए बिना किसी को बताये गुप्त रूप से सेवा करने जाया करते थे। एक दिन स्वामी जी पैदल ही पैदल चुपचाप 'दादा गुरुदेव सांईं आसूराम जी महाराज' के यहाँ जा रहे थे, कुछ संतों ने देख लिया... देखकर निवेदन करने लगे- 'प्रभो! इस समय आप अकेले ही अकेले इधर की ओर जा रहे हैं, कोई आपकी सेवा में भी नहीं है, यदि आप उचित समझें तो हम भी चलें...'

स्वामी जी ने कहा- 'भाई, हमें नवाहालन जाना था, इसिलए अकेले ही जा रहे हैं....' 'फिर हमें भी सेवा में ले चलें....', संतों ने विनती की... तब स्वामी जी ने कहा- 'नहीं भाई नहीं. .. वहाँ आपको जो ले चलूँगा तो फिर गुरुदेव दादा सांईं की सेवा मेरे हाथ से निकल जायेगी.... आप लोग जो वहाँ पर सेवा करेंगे.... फिर मैं क्या करूँगा? मुझे वहाँ श्री गुरुदेव भगवान की अकेले ही सेवा करनी है.... अर्थात् गुरु की सेवा शिष्य को ही करनी चाहिये....' 'इसिलये ही तो मैं चुपचाप एकांत में निकल जाता हूँ... जिससे वहाँ दादा सांईं (सांईं आसूराम साहिब) की सेवा का मुझे अवसर मिल सके।'

सेवा में तत्पर रहे - कबहूँ चूकत नाहिं। स्वामी के मन भावही - सेवक मानो ताहिं।।

ऐसा था गुरुसेवा के प्रति आचार्यश्री सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का निष्ठा-भाव! शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

纲

स

त्

ना

म

सा क्षी

卐

άE

麲

स

त्

ना

म

सा क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

ॐ श्री स त्

त् ना म

म सा क्षी **५**

ॐ श्री स त् ना म

r सा की **भ**ॐ श्री स त्

ना

म सा क्षा **५ %** श्री स त्

म साक्षी **५** ॐ श्री स

ना

म

सा

क्षी

卐

ना

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा–86

अहिंसा परमो धर्मः

अहिंसा ही परम धर्म, परम तप और परम सत्य है अहिंसा से ही धर्म की प्रवृत्ति होती है। अहिंसा सत्यमस्तेयं शौचिमिन्द्रियानिग्रहः। एतं सामासिकं धर्मं चार्तुवर्ण्यब्रवीन्मनुः।। (मनुस्मृति अ. 10/63)

अर्थात् हिंसा न करना, सत्य बोलना, चोरी न करना, पवित्र रहना, इन्द्रियों का संयम ये चारों वर्णों के धर्म शास्त्रों में कहे हैं। युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज में अहिंसा का गुण भी विशेष रूप से विद्यमान था।

एक समय स्वामी जी खेबरन गाँव में भक्त देवनराज के आश्रम पहुँचे। वहाँ के प्रेमी भक्तों ने स्वामी जी को बताया- यहाँ आश्रम पर बकरों की बिल चढ़ाई जाती है और स्वामी जी से आग्रह किया कि ये बिल बन्द करवाई जाये जिससे सैकड़ों निरीह पशुओं का वध होने से बच जायेगा। तब स्वामी जी ने सत्संग-प्रवचन के माध्यम से उपदेश देते हुए समझाया-

अन्य क्षेत्रे कृतं पापं पुण्य क्षेत्रे विनिश्यति। पुण्य क्षेत्रे कृतं पापं वज्रलेपो भविष्यति।। (स्कन्द पुराण)

अर्थात् अन्य स्थानों पर किया हुआ पाप पवित्र स्थानों पर मिटता है परन्तु पवित्र स्थानों पर किया हुआ पाप वज्र लेप के समान कभी न मिटने वाला होता है और मुनि वेदव्यास जी ने कहा है-

अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचन्द्रयम्। परोपकाराय पुण्याय पापाय पर पीड़नम्।।

वेदव्यास जी महाराज ने १८ पुराण लिखे हैं परन्तु दो ही बातें मुख्य रूप से कही हैं कि परोपकार ही सबसे बड़ा पुण्य है और मन कर्म वचन से दूसरे को दुःख देना हिंसा करना ही सबसे बड़ा पाप है।

स्वामी जी ने भी सत्संग में सब प्रेमियों को प्रतिज्ञा दिलवाई कि आज से हम कभी भी कहीं भी किसी पशु की बिल नहीं चढ़ायेंगे और न माँसाहारी (तामसी) भोजन का आहार करेंगे।

श्री गुरु महाराज जी के भजन उपदेश का प्रेमियों पर गहरा असर पड़ा और प्रेमियों ने प्रतिज्ञा कर कहा कि आज से हम किसी भी स्थान पर न बिल चढ़ायेंगे और न ही माँसाहार का उपयोग करेंगे... अहिंसा कायरता की निशानी नहीं वरनू यह तो बहादुरी का हथियार है।

स्वामी जी जब जंगलों में तपस्या करने जाते थे तब उनके तपबल के प्रभाव से एक दूसरे के विपरीत आचरण वाले.... शत्रुता भाव रखने वाले पशु भी आपस में वैर हिंसा नहीं करते थे।

अन्य मनुष्यों को अपनी वाणी अथवा कर्म से किसी प्रकार का कष्ट न पहुँचाए तभी संसार में शान्ति स्थापित हो सकती है। सभी के साथ सद्व्यवहार करना चाहिए और मधुर वचन बोलने चाहिए... कोई ऐसा कार्य नहीं करना चाहिए जिससे दूसरे के मन को पीड़ा पहुँचे या जो स्वयं को अच्छा न लगता हो...

जो व्यक्ति अहिंसा के गुण को अपना लेता है उसमें मानवता के सभी गुण स्वतः ही समाहित हो जाते हैं। उसका चित्त शांत और मन प्रसन्न रहता है और जीवन आनन्दमय रहता है। यदि सभी लोग अहिंसा को अपना लें तो उनके जीवन से कष्ट पीड़ाओं का अन्त हो जायेगा... सभी सुखमय जीवन बिता सकेंगे।

ऐसे ही स्वामी जी ने समय-समय पर अनेक उपेदश देंकर जीवों को सद्मार्ग पर लगाया और अहिंसा धर्म का पालन पूर्ण रूप से किया!

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

網

स

त्

ना

म सा

क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना

म

सा क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा क्षी

55

ॐ श्री

स

त्

ना

म

सा

άE 纲 स

त् ना म

सा क्षी 卐

άE 纲 स त् ना म

सा क्षी 卐 άE 纲 स त्

ना म सा क्षी 卐 Š 纲 स

त् ना म सा क्षी

55 άE

纲 स त् ना म सा क्षी

卐

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा–८७

रहमान बना – भक्त रसखान

एक बार सिन्ध का मशहूर चोर रहमान सद्गुरु महाराज जी के आश्रम में चोरी करने आया। हालांकि इससे पहले आश्रम में चोरी करने आया प्रत्येक चोर पकड़ा गया था पर रहमान कभी भी पकड़ा नहीं गया था, इसलिये अति-विश्वासी होकर वह भगवद्-स्वरूप युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के आश्रम श्री अमरापुर दरबार पर चोरी करने आया। और देखो उसकी हिम्मत कि वह सदुगुरु महाराज जी के कमरे में ही चोरी करने गया... इतने में ही भगवद् प्रेरणा से प्रेरित होकर एक संत जी वहाँ आये। सद्गुरु महाराज जी के कमरे का दरवाजा खुला देखकर, चोर होने की आशंका से उन्होंने सब संतों को वहाँ बुलाया। सभी संत एकत्रित होकर कमरे में आये एवं उन्होंने रहमान चोर को पकड लियां सभी संत उस चोर को मारने लगे तो एक संत ने कहा कि- यह तो सदुगुरु महाराज जी का अपराधी है, इसे दण्ड भी स्वामी जी ही देंगें...

थोड़ी देर बाद युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज वहाँ पधारे. सभी संतों ने रहमान को स्वामी जी के समक्ष प्रस्तुत किया। श्री गुरुदेव की विराट निर्मल छवि तथा हाथ में डण्डा देखकर रहमान भयभीत होने लगा... परन्तु रहमान की आशा के विपरीत महाराज जी ने प्रेमपूर्वक रहमान से उसका परिचय पूछा- सदुगुरु महाराज जी के प्रेम भाव से गदुगदु होकर रहमान ने उनके समक्ष अपनी वास्तविकता प्रकट कर दी... इतने में ही एक सज्जन प्रेमी द्वारा सूचित किये जाने पर पुलिस भी वहाँ आ गई... तब दरोगा (इन्सपेक्टर) ने आते ही सर्वप्रथम ईश्वरतुल्य स्वामी जी के चरणों में नमन किया एवं रहमान चोर के बारे में पूछा- तब स्वामी जी ने किसी भी चोर की आश्रम में उपस्थिति से मना कर दिया... इस पर दरोगा ने एक कोने में हाथ जोड़े खड़े भय से काँपते हुए रहमान के बारे में पूछा... स्वामी जी ने कहा कि- "यह तो रसखान है, कोई चोर नहीं... यह तो दुनिया के चित्त-चोर भगवान श्रीकृष्णजी का भक्त है..." स्वामी जी से ऐसा उत्तर सुनकर दरोगा वहाँ से चला गया।

युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की ऐसी समदर्शिता देखकर रहमान गुरुदेव के श्रीचरणों में गिर गया एवं अपनी भूलों गुनाहों के लिए माफी माँगने लगा... रहमान का सच्चा समर्पण भाव देखकर सद्गुरु महाराज जी ने उससे कहा- "अब तुम भी कृष्णभक्त रसखान की तरह, रसखान बनकर भगवान श्रीकृष्ण की भक्ति करो... ईश्वर तुम्हारा कल्याण करेंगे।" इस पर स्वामी जी की वन्दना करते हुए रहमान ने कहा-

भटकत फिरत, चोरी करत, दर-दर पे रहमान। टेऊँराम गुरु कृपा करे, बना दिया रसखान।।

इस प्रकार स्वामी जी ने उस रहमान चोर को, भक्त रसखान बना दिया... महाराज जी की ईश्वरीय समदर्शिता से प्रभावित होकर किसी कवि ने कहा है- 'स्वामी टेऊँराम सुजानी, थे ज्ञानी, ध्यानी, दानी। वो सब में राम को देख रहा, कोई और नहीं।।'फिर वह रसखान चोरी छोड़कर गुरु भक्त बन गया। उसे नया जीवन मिल गया।

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

網

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

網

स

त्

ना म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

άE 纲 स

त् ना म

सा क्षी 卐 άE

纲 स त् ना म

सा क्षी 卐 Š 纲 स त्

ना म सा क्षी **5**5

άE 纲 स त् ना

म सा क्षी **5**5 άE 纲

स त् ना म सा

क्षी

卐

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा–88

दान में देरी नहीं.....

युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज भगवद् भजन करते देशारटन किया करते थे कभी कहाँ तो कभी कहाँ? भगवद् भिक्त में मस्त... ऐसे ही एक समय भगत कंवरराम जी का सत्संग-भजन सुनने उनकी सभा में पहुँच गये... सत्संग के मध्य में ही एक याचक ने भगत कंवरराम जी से वस्त्र की माँग की... भगत साहब ने कहा- भाई! कोई वस्त्र मिलने दो तो मैं आपको दे दूँगा... भगत कंवरराम साहब का नियम था कि भजन-सत्संग में जो पैसा, वस्त्र मिलता था वो सब अनाथ गरीबों में तत्काल बाँट देते थे... हृदय उदारचित्त था... उनके साथ बहुत से गरीब फकीर चलते थे। कुछ समय बाद उसी फकीर ने पुनः वस्त्र की मांग की... भगत जी थोड़ी देर शान्त रहे... इधर-उधर देखा...

तब युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने सारी सभा के सामने अपना चोला उतारकर भगत कंवरराम साहब को दिया और कहा- आप इसे ये वस्त्र दे देंवे... उन दिनों स्वामी जी शरीर पर तीन ही वस्त्र धारण किया करते थे- चोला, लंगोटी व टोपी... स्वयं को मात्र लंगोटी में रखकर दूसरे का अंग ढका... स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने...

संत संत के प्राण हैं - संत संत पर ध्यान। सबके प्यारे संत हैं - करते सबका मान।।

स्वामी जी की ऐसी परम उदारता देखकर भगत कंवरराम साहब अभिभूत होकर कहने लगे- स्वामी टेऊँराम! आप धन्य हैं, आप धन्य हैं... आपने भरी सभा में अपने मान को न देखकर चोला उतारकर इसे दे दिया, आपने हमारा मान बढ़ाया... आप सच में ही महान सत्पुरुष हैं।

सिद्धान्त : अवसर अनुकूल यदि दान तत्परता से किया जाए तो वही दान सबसे उत्तम श्रेष्ठतम दान होता है।

दोनों महापुरुषों को शत्-शत् नमन - कोटि-कोटि वंदन!

धन-धन युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

30

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE 纲

स

त्

ना

म

सा

άE 纲 स त्

ना म

सा क्षी 卐

Š 纲 स त् ना म

सा क्षी 卐 Š 纲 स

त् ना म सा क्षी 卐 Š 纲

स त् ना म सा क्षी **5**5

άE 纲 स त् ना म

सा

क्षी

卐

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा–89

जयपुर में कैसे बना – तीर्थ श्री अमरापुर स्थान

इकतारा हाथ में लिए और संत मण्डली को साथ लेकर भजनानन्द की मस्ती में युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज देशारटन करते थे। यत्र-तत्र तीर्थयात्रा एवं जिज्ञासुओं को सत्संगामृत का पान करवाने हेतु चल तीर्थ के समान स्थान-स्थान पर जाकर ज्ञान सरोवर में डुबिकयाँ लगवाते थे। जिज्ञासु उस पावन सत्संग सरोवर में स्नान कर अपना जीवन धन्य-धन्य बनाते थे।

ऐसे ही एक समय यात्रा करते हुए हरिद्वार, काशी, दिल्ली, मथुरा वृन्दावन होकर गुलाबी शहर जयपुर पहुँच गये... उस वक्त युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का कोई भी परिचित भक्त जयपुर में नहीं हुआ करता था। चाँदपोल दरवाजे के पास हनुमान मंदिर के समीप एक महात्मा की कुटिया थी। संतश्री ने बड़े ही श्रद्धा प्रेमभाव से स्वामी जी को अपनी कुटिया में रहने के लिए स्थान दिया। स्वामी जी सन्त मण्डली के साथ तीन-चार दिन जयपुर शहर रहकर प्रमुख स्थानों के दर्शन किए। एक दिन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज, स्वामी सर्वानन्द जी संत मण्डली के साथ भ्रमण करते हुए स्टेशन की ओर निकल रहे थे... उसी मार्ग में उन्होंने एक सुरम्य जंगल देखा- जहाँ आसपास का वातावरण बड़ा ही मनमोहक एवं वृक्ष पेड़ पौधों से बड़ा ही रमणीक लग रहा था- उसी के बीचों बीच सुन्दर पानी का तालाब बना हुआ था।

स्वामी जी ने कहा कि यह शहर सचमुच मनमोहक है और यहाँ के लोगों में भक्ति भाव व धर्म-कर्म में बड़ी आस्था है... और यह स्थल तो सचमुच में बड़ा ही सुंदर रमणीक है... कहते हैं कि संत महापुरुषों के श्रीचरण जिस स्थान पर पड़ते हैं वह तीर्थ बन जाता है तथा महापुरुष तपस्वियों के हृदय में जो भाव आते हैं वह स्वतः भगवद् प्रेरणा होती है कि इस भूमि पर 'अध्यातम स्थल' होना चाहिए... संतों की तपस्या का प्रभाव- संकल्प शक्ति श्रीचरण का उस स्थान पर प्रभाव पडा और भगवद् प्रेरणा से समय पाकर वह फलीभूत होता है... वहाँ ही तीर्थ श्री अमरापुर स्थान बनाा!

इस प्रकार सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का मन जयपुर में रमा अवश्य था; किन्तु वे अपने जीवन-काल में फिर जयपुर नहीं आ सके... हाँ, स्वामी सर्वानन्द जी ने इस बात को याद रखा और १६४७ में देश विभाजन के कुछ समय बाद लघु काशी कहने जाने वाले गुलाबी नगरी जयपुर में ही डेरा जमाया... भगवद् कृपा व स्वामी जी के आशीर्वाद से उसी तालाब वाले स्थान पर श्री अमराप्र स्थान (पवित्रतम तीर्थ स्थल) बना... जिसे गुरुभक्त स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने बड़े लग्न, परिश्रम से बनाकर सद्गुरु महाराज जी के संकल्प को साकार किया। आज वही पवित्र तीर्थ श्री अमरापुर स्थान, जयपुर श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का मुख्यालय है... जो आज विश्व के सुविख्यात तीर्थ स्थलों में माना जाता है... यहाँ पर स्वामी जी का 'समाधि स्थल' भी बना हुआ है. यह आस्था, अध्यात्म और श्रद्धा का केन्द्र है, जहाँ प्रतिदिन हजारों श्रद्धालु नत मस्तक होते हैं।

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना म

सा

क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE 纲

स

त्

ना

म

सा

ॐ श्री सतुनाम साक्षी फ ॐ श्री सतुनाम साक्षी फ

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

ॐ श्री

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

Š

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

30

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

Š

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा–90

हून्दलदास ब्राह्मण बना शिष्य

युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज सिन्ध में पहुँचे हुए सिद्ध महापुरुष थे। जो भी एक बार स्वामी जी के दर्शन या सत्संग श्रवण कर लेता था, वह उन्हीं का दीवाना भक्त हो जाता था... वह चाहे निम्न जाति धर्म का हो या फिर उच्च वर्ण कुल का... बस हो जाता स्वामी जी का भक्त... उस मुर्शिद, संत, फकीर, दरवेश में न जाने कैसी अद्भुत शक्ति थी, जिनके दर्शन मात्र से अलौकिक आनन्द प्राप्त हो जाता था... ऐसे कामिल पुरुष विलक्षण ही होते हैं। हर साधारण व्यक्ति उन्हें पहचान भी नहीं सकता... उनको पहचानने के लिये परख व सुक्ष्म दिव्य दृष्टि की आवश्यकता पड़ती है...

ऐसे ही सिन्ध के प्रतिष्ठित हुन्दलदांस ब्राह्मण ने पहली बार युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का दर्शन व सत्संग श्रवण किया, बस! तब से वह स्वामी जी का भक्त हो गया... प्रेमाश्रु बहाकर हाथ जोड़कर कहने लगा- हे भगवन्! दास बहुत ही भूखा-प्यासा है, आपके द्वार पर आया है, आप अपने ज्ञान के भण्डार से कुछ प्रसाद खिलावें-पिलावें... तािक मन में सुख-शान्ति प्राप्त हो सके।

ब्राह्मण हुन्दलदास हाथ जोड़कर कहने लगा– हे प्रभु दीनानाथ! मैं बहुत पढ़-लिख चुका हूँ... मैंने शास्त्रों का बहुत अध्ययन किया है... सभी शास्त्र कहते हैं कि बिना गुरु के आत्मा का साक्षात्कार नहीं होगा और नहीं मन को श्रान्ति प्राप्त होगी और मुक्ति भी सम्भव नहीं... मैं कितने समय से सच्चे सद्गुरु की खोज में था। कितने ही संत-महापुरुषों से ज्ञानचर्चा हुई, अनेक संतों का दर्शन, सत्संग श्रवण किया, पर मेरा मन कहीं नहीं लगा। बस! अब आपका दीदार-दर्शन व सत्संग श्रवण करने से मेरे मन में पूर्ण विश्वास हो गया कि आप ही मेरा उद्धार करेंगे... आप को ही मैं सब कुछ मानता हूँ, आपके नूर नूरानी, तेजोमय मुखमण्डल के दर्शन से संतप्त हृदय को सुख व शान्ति की प्राप्ति हुई है... ऐसा था स्वामी जी की भक्ति-तपस्या का अद्भुत प्रभाव... जो भी दर्शन करता, बस- उन्हीं का हो जाता... तब हृदय द्रवित हुन्दल ब्राह्मण ने कहा-

गंगा मथुरा काशी फिर्चा, फिर्चा तीर्थ सारे। कहाँ नहीं मुझ प्रभु मिलिया, आयो शरण तुम्हारे।।

हे दीनानाथ, भक्तवत्सल! मैं आपकी शरण में हूँ... मेरा उद्धार कीजिए... हमें प्रभु मिलन की राह बतायें, जिससे आत्मा का साक्षात्कार करके मोक्ष को प्राप्त कर सकूँ... जिस प्रकार अर्जुन का मोह नष्ट होने के बाद भगवान ने उसे अपना शिष्य स्वीकार किया। पहले समय में श्री गुरुदेव इतनी शीघ्र शिष्यत्व स्वीकार नहीं करते थे... पहले शिष्य की परीक्षा ली जाती थी... अगर वह परीक्षा में सफल हो जाता था तभी उसे गुरुमंत्र की दीक्षा दी जाती थी। समर्थ गुरु रामदांस जी ने शिवाजी से, रामकृष्ण परमहंस ने विवेकानन्द से और सद्गुरु साई आसूरामजी महाराज ने स्वामी टेऊँराम जी महाराज से अनेक गृढ़ परीक्षाऐं लेने के बाद ही शिष्यत्व स्वीकार किया। ऐसे ही स्वामी जी ने भी हुन्दल ब्राह्मण को, परीक्षा लेने हेतु आश्रम की सेवा आदि का कार्यभार सौंपा। सेवा से ही तन मन का अहंकार चूर होता है। निर्मलता आती है। अभिमान दूर होता है। इस प्रकार से हुन्दल ब्राह्मण बड़े श्रद्धाभाव से आश्रम व संतों की सेवा करने लगा। झाड़ू लगाना, भोजन खिलाना, सत्संग पण्डाल की साफ-सफाई करना ऐसी अनेक सेवाऐं गुरु आश्रम में करने लगा। स्वामी जी ने देखा और सोचा कि इसमें अब उच्च जाति या विद्या का अभिमान-गर्व नहीं रह गया है। निःसंकोच सेवा करता है तथा संतों के प्रति मृदुता का व्यवहार व श्रद्धा भाव है। ऐसे अनेक भाव देख अधिकारी समझकर हुन्दल ब्राह्मण को 'गुरुमंत्र' की दीक्षा दी... इस मार्ग में हुन्दल ब्राह्मण को घर परिवार में अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ा, उन्हें अपनी जाति से निकाल दिया गया... भक्ति-प्रेम मार्ग तो वैसे भी कठिन होता है।

भक्ति करनी कठिन है - सुगम न ताँको जान। टेऊँ भक्ति सो करे - त्यागे जो अभिमान।।

जाति, धर्म, कुल, मान-मर्यादाओं के सामने अनेक विषम परिस्थितियों व कठिनाईयों का सामना करना पड़ा, किन्तु वे अपने श्री गुरुदेव भगवान की भक्ति में पूर्णरूप से सफल सिद्ध हुए। तब द्रवीभूत हृदय से गुरुदेव के समक्ष ये भाव रखा-

गंगा काशी गिरनार तक, खोजा चारों धाम। हुन्दल के मन भाइया, सत्गुरु टेऊँराम।।

इसके उपरांत पूरे जीवन भर गुरु आश्रम की सेवा-सुमरन करके अपना कल्याण किया। ऐसे थे धर्म, जाति, भव बन्धनों से मुक्त कराने वाले भक्तवत्सल, प्रभू परमात्मा के साक्षात् स्वरूप श्री सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज!

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

纲

स

त्

ना

म सा

क्षी

卐

άE

網

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना म

सा

क्षी

🕉 श्री सत्नाम साक्षी 🖪 🕉 श्री सत्नाम साक्षी 🖫 🕉 श्री सत्नाम साक्षी 🖫 🕉 श्री सत्नाम साक्षी 🖫 🅉 श्री सत्नाम साक्षी 🖼

3ॐ श्री स त्

त त् ना म

सा क्षी **५** ॐ

श्री स त्ना म सा

५ % श्री स त्ना स

क्षी **५५** ॐ श्री स त् ना

ਸ ਜ ਸ ਸ ਸ ਸ ਲੀ **ਮ** % ਸ਼ ਸ

ना म सा क्षी **५**

त्

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा–91

भक्त की सुनी पुकार – गुरुदेव आए उसके द्वार

कित सद्गुरु, कित दीन मैं - छोले बेचनहार। सुन पुकार मण्डली बिना - आये गुरु गमटार।।

एक सीधा सादा भक्त था युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का। मन में थी गुरु के प्रति सच्ची लग्न और सच्चा भाव... नित्य प्रति स्वामी जी के दर्शन करके ही जाता था अपने कार्य क्षेत्र। अनन्य भक्ति का भावुक था वह भक्त... अपनी आजीविका चलाने के लिये वह छोले बेचा करता था। नित्य प्रति गाँव-गाँव छोले ले जाकर बेचता और घर परिवार का पालन पोषण करता था। गरीब था पर मन का सच्चा एवं भावुक...

एक समय किसी क्षेत्र में वह छोले बेच रहा था। सायंकाल का समय था, छोले भी थोड़े ही बचे थे। अकस्मात् वहाँ से युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज संत मण्डली सिहत अन्यत्र स्थान पर जा रहे थे। स्वामी जी को देखकर बड़ा ही पुलकायमान हुआ। तुरंत ही मन में भाव जाग्रत हुआ कि स्वामी जी मेरे छोले खायें... पर मन में विचार आया कि स्वामी जी की मण्डली तो बहुत बड़ी है... मेरे पास इतने छोले है नहीं, जो मैं सभी को छोले खिला सकूँ... मन ही मन सोचने लगा... अब मैं क्या करूँ... इसी उधेड़बुन में था...

छोले खिलाने का मन तो था पर छोले कम थे... उस समय स्वामी जी के साथ ३०-३५ संत-महात्मा व भक्तजन थे। मन ही मन निर्मल स्वच्छन्द भाव से छोले स्वीकार करने के लिए श्री सद्गुरु महाराज जी से प्रार्थना करने लगा।

अर्न्तयामी श्री सद्गुरु महाराज ने सुन ली उस भक्त की भावभरी पुकार... मार्ग में चलते-चलते स्वामी जी अचानक रुक गये। सभी संत सेवाधारियों से कहा- आप सभी चलो, हम कुछ देर में आते हैं... कौन समझे फकड़ महापुरुषों की लीलाओं को... एक दो संतों को रोककर अन्य सभी को आगे भेज दिया।

वह भक्त आँखें बंद करके मन ही मन प्रार्थना में निमग्न था कि साक्षात् परमात्म स्वरूप सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज वहाँ पहुँच गये... स्वामी जी ने बड़े ही दुलार से कहा- अरे भक्त! हमें बहुत भूख लगी है, छोले खिलाओ... जैसे ही उस भक्त ने यह सुनकर आँखें खोली- सारे शरीर में खुशी-रोमाँच के मारे सिहरन होने लगी... उस समय के इस अद्भुत दृश्य का बयां करना इस कलम में ताकत नहीं... क्या देखता है- अरे! श्री गुरु महाराज जी! आश्चर्य चिकत खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहा... प्रेमाश्रुओं से आँखें भीग गयीं...

भाव विभोर होकर बार-बार वन्दन करने लगा... उसे विश्वास ही नहीं हो रहा था कि स्वामी जी मेरे सामने खड़े होकर मुझसे छोले माँग रहे हैं... इतना प्रेमातुर हो गया कि कुछ समझ ही न आ रहा था कि मैं क्या करूँ... कैसे खिलाऊँ छोले...

जैसे भीलनी, भगवान श्रीराम को देखकर, विदुरजी भगवान श्री कृष्ण को देखकर बड़े भाव विमुक्त हो गये थे वैसे ही आज स्वामी जी को देखकर उस भक्त की स्थित हो गई...

'भीलनी के बेर, सुदामा के तन्दुल, विदुर का साग, कर्माबाई की खिचड़ी' वैसा भावातुर हो उस भक्त ने स्वामी जी को एक दोने में छोले खिलाए... भक्त के भाव को निहारकर स्वामी जी ने बड़े चाव के साथ धीरे-धीरे खाये वह छोले... वह अनूठा दृश्य-गुरु और भक्त के भाव का, दर्शन करने लायक था... काफी समय तक वह भक्त स्वामी जी के दर्शनानन्द का लाभ लेता रहा... कुछ समय पश्चात् स्वामी जी उस अनन्य भक्त को आशीर्वाद देकर आगे चले गये। तभी कहा गया है- 'भाव का भूखा हूँ मैं, बस भाव ही इक सार है'। ऐसे थे भक्त वत्सल भगवत् स्वरूप श्री सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

網

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना

म सा

क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

άE 纲 स

त् ना म

सा क्षी 卐

άE 纲 स त् ना म सा

क्षी 卐 Š 纲 स त् ना म

सा क्षी 卐 άE 纲 स त्

ना म सा क्षी **5**5

άE 纲 स त् ना म सा क्षी 卐

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा–92

भ्रम संशयों के निवारक

एक समय युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज मण्डली सहित देशारटन करते हुए अदरत गाँव पहुँचे। जहाँ पर भाई मंगलराम की धर्मपत्नि भ्रम-संशयों के कारण चन्द्रदर्शन की रात को झलती थी... लोग दूर-दूर से कष्ट निवारण के लिए आते थे उसके पास... बहुत भीड़ होती थी एकत्र... सारा घर-परिवार एवं उसके पति भी इस भ्रम जाल से होते थे बहुत परेशान... बहुत समझाते पर भी वह नहीं मानती थी। वह कहती थी मुझमें देवता निवास करता है, पर था ऐसा कुछ भी नहीं, व्यर्थ ही भोले भाले लोग होते थे परेशान...

तब एक दिन मंगलराम ने हाथ जोड़ स्वामी जी से प्रार्थना की- हे प्रभु! मैं अपनी पत्नि के इस कार्य से बहुत दुःखी हूँ... बिना किसी कारण ही हर चन्द्रदर्शन तिथि को लोग यहाँ एकत्रित हो जाते हैं। आप उनको इस भ्रम जाल से मुक्त करें... आप ही तारणहार हो... सबके रक्षक-पालनहार हो... आप ही संसार के हर्ता-कर्ता और दुःख-दर्द निवारक परमात्मा के स्वरूप हो... स्वामी जी ने कहा- तुम चिन्ता मत करो, प्रभु परमात्मा सब ठीक कर देंगे।

चन्द्रदर्शन के दिन संध्या काल के समय स्वामी जी भ्रमण करते हुए पहुँचे उसी स्थान पर, जहाँ मंगलराम की पत्नि चन्द्रदर्शन के दिन झूलती थी। स्वामी जी ने देखा- वहाँ स्त्री-पुरुषों की बहुत सी भीड़ थी। उनके बीचों-बीच बाल खोलकर वह औरत झल रही थी... लोग उस स्त्री के पास अपनी-अपनी व्यथा सुनाने पहुँचे... भोली भाली जनता को उस स्त्री में आने वाला देवता सत्य प्रतीत होता था। किन्तु ऐसा कुछ भी नहीं था। 'मन भूता-मन प्रेता' मन से ही संकल्प-विकल्प और संशय भ्रम पैदा होते हैं। संतों-फकीरों की अपनी मौज, भजनानन्द की अनोखी मस्ती... न जाने कब कौन सी लीला रच दें... उनके लिए क्या भ्रम क्या संशय... सब दोषों से मुक्त कराने वाले साक्षातु ईश्वर के अंश नाना संशय भ्रम जाल, तंत्र-मंत्र, ज्योतिष, भूत-प्रेत आदि कष्ट-दुःखों से दूर करने के लिये समय-समय पर संत-महापुरुषों का इस भूलोक पर अंश अवतार होता है।

स्वामी जी ने ऐसी विचित्र स्थिति देखकर बड़े ही वात्सलय भाव से उस स्त्री को कहा- हे पुत्री! आप जो यह कार्य कर रही हैं, वह ठीक नहीं है...

आप यह संशय-भ्रम वाले कार्य छोड़कर प्रभु परमात्मा की सच्ची भक्ति करो और अपना जीवन सफल बनाओ। किन्तु उस औरत ने कोई उत्तर नहीं दिया और जोर जोर से झुलने लगी... स्वामी जी ने दो-तीन बार कहकर उसे काफी समझाया, पर वह तो झूमने में ही मस्त रही। न जाने महापुरुष-संत-दरवेश कब किसके ऊपर कृपादृष्टि कर जीवन परिवर्तन कर दें! ये कोई नहीं जानता... वे तो नजरों से ही निहाल कर देते हैं... बस! उन दिव्य महापुरुषों की कृपा बरसनी चाहिए।

तब स्वामी जी ने एक लीला रची- संत गुरुमुखदास से कहा- यह जिन्न (भूत) स्त्री के बालों में छिपा है... आप एक जलती हुई लकड़ी लेकर आओ और इस स्त्री के बालों पर लगाओ, ताकि सारे बाल जल जायें और वह जिन्न भी स्वयं ही यहां से चला जाये... जैसे ही संत गुरुमुखदास जलती हुई लकड़ी लाकर बालों पर लगाने लगे... उसी समय वह स्त्री चौंकते हुए पीछे हट गई और कहने लगी, आग दूर रखो, दूर रखो... अब देवता चला गया... और स्वामी जी के आगे नत मस्तक होकर क्षमा याचना करने लगी... स्वामी जी! मुझे क्षमा कर दो... मैं अब आपके कहे अनुसार भगवान का भजन करूँगी और जीवन को सफल बनाऊँगी। वहाँ था कुछ भी नहीं सिर्फ लोग भ्रमित थे!

युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की कृपा व आशीर्वाद से उस माता का जीवन सँवर गया और नया जीवन प्राप्त हुआ। तो ऐसी होती है महापुरुषों की अनन्य कृपा... बस, जिसके ऊपर कृपा हो जाए उसका जीवन सँवर जाता है।

स्वामी जी का कथन था- जीवन में कभी भ्रम-संशयों के जाल में नहीं पड़ना चाहिए. हाथों की रेखा दिखाना, भूत- प्रेत, तंत्र-मंत्र विद्या, ज्योतिष, धागा-फीणा, जाद्-टोना आदि से दूर रहना चाहिए। निर्भय होकर जीवन जीएँ। प्रभु परमात्मा से सदैव अभय का दान मांगें... भगवान का चिन्तन व गुरु मंत्र ही सर्व दुःखों की निवृति का मार्ग है।

शतू-शतू नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी 55

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

άE 纲 स

त् ना म

सा क्षी 卐

Š 纲 स त् ना म

सा क्षी 卐 άE 纲

स त् ना म सा क्षी

55 άE 纲 स त्

ना म सा क्षी

55 άE 纲 स त् ना

म सा क्षी 卐

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरू खामी टेऊँराम गुण गाथा–93

संत की निंदा करना महापाप

टण्डेआदम का निवासी भाई लालचन्द, जो सदैव सही अर्थों में सच्चे युगपुरुष योगीराज श्री सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज व संतों की निन्दा करता रहता था; क्योंकि उस समय स्वामी जी के भक्ति- तपस्या की कीर्ति चहुँ ओर तेजी से फैल रही थी... सभी लोग स्वामी जी को अवतारी पुरुष मानते थे। यह बात उससे देखी नहीं जाती थी। अतः संतों को बहुत बुरा-भला कहता रहता था। और संतों की निन्दा करता रहता... संत-महात्माओं की परमात्मा के प्रति अलौकिक मस्ती... उनके लिये क्या निन्दा? क्या यश... वे तो भगवान के बंदे होते हैं। अपनी अलख जगाने में मस्त... उन्हें तो प्रभू परमात्मा में पूर्ण विश्वास होता है। सब कुछ करने कराने वाले परमात्मा ही हैं। कैसा भी दुष्प्रचार करें पर उनके मन में कोई प्रतिक्रिया नहीं, न ही उसके प्रति भले-बूरे का विचार करना....

भाई लालचन्द ने स्वामी जी के लिये उल्टे-सीधे लेख अखबार में छपवाये... जिससे स्वामी जी का अपमान हो, उन्हें नीचा दिखाया जा सके... पर स्वामी जी की अपनी मौज- वैराग्यवृति... मान-अपमान, राग-द्वेष, स्तृति-निन्दा, यश-अपयश सभी वृत्तियों से परे... किसी प्रकार का कोई विरोध प्रदर्शन नहीं... अर्थातृ ऐसी बातों पर कोई ध्यान न देना। उधर लालचन्द रास्ते में खड़ा होकर इस बात की प्रतीक्षा कर रहा था कि साधु-संतों ने अखबार पढ़कर क्या प्रतिक्रया की... संत-महापुरुषों ने तो कुछ नहीं कहा! वे तो चूप रहे, पर संत की निन्दा-अपमान भगवान से सहन नहीं होती... वे दण्ड अवश्य ही देते हैं या फिर प्रकृति उसे दण्ड देती है... खण्डू में बाढ़ आना, प्लेग बीमारी फैलना आदि ये प्राकृतिक कोप 'सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ' को सताने का ही परिणाम था...

उसी समय भगवान की ऐसी लीला हुई कि जिस रास्ते पर लालचन्द खड़ा था। वहाँ पर एक भंयकर काले सर्प ने उसे डस लिया... वह उसी रास्ते पर गिर पड़ा... चीखा-चिल्लाया पर किसी ने नहीं सुनी... असहनीय पीड़ा से अत्यधिक व्याकुल... जहर धीरे-धीरे शरीर में फैल रहा था। तभी कहा गया है-

> प्रभु किसे नहीं मारता, पापी नहीं है राम। आप ही मर जात है, कर कर खोटे काम।।

भगवान बिना कारण किसी को नहीं मारता, व्यक्ति स्वयं खोटे कर्म करके अपनी मृत्यु को बुलाता है। संत की निन्दा अर्थातु भगवान का अपमान... भगवान अपने संत-भत्तों की निन्दा- अपमान कभी सहन नहीं कर सकते ! उसे दण्ड अवश्य ही देते हैं...

आखिरकार लालचन्द जैसे-तैसे चलकर अपने घर पहुँचा, उसे इस हाल में देखकर घर-परिवार वाले बड़े हैरान हो गये... डाक्टर बुलवाया गया। किन्तु पूरे शरीर में विष फैल चुका था, बचने का कोई उपाय नहीं था। थोड़ी देर बाद लालचन्द की मृत्यु हो गई। संत की निन्दा करने से भगवान ने उसे शीघ्र ही दण्ड दे दिया...

सच्चे संत-महात्मा तो सदैव परोपकारी होते हैं। वे कभी भी किसी का बुरा नहीं चाहते और न ही किसी को श्राप देते हैं। परन्तू जो मनुष्य निन्दक है वे स्वयं मृत्यू को बढ़ावा देते हैं।

'भगवान के घर देर है पर अन्धेर नहीं' जिनके मन में अभिमान होता है कि ये साधू-संत-फकीर हमारा क्या कर लेंगे... किन्तू उन्हें मालूम नहीं, जो कार्य भगवान न कर सके, वह कार्य सच्चा संत-फकीर कर सकता है... उनके पास होती है तप- तपस्या-भक्ति की अद्भुत शक्ति... वे ऋद्धि-सिद्धि के मालिक होते हैं... वे जैसा चाहें वैसा कार्य कर सकते हैं... इसलिए जीवन में कभी भी किसी दरवेश-फकीर-साधु-संत-मुर्शिद का अपमान नहीं करना चाहिये और ना ही सताना चाहिये। अन्यथा उसका दुष्परिणाम होता है। महापुरुष तो मान-अपमान से परे होते हैं।

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

Š

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा–94

भगवान ने भेजा आश्रम सेवा हेतु एक बैल.....

सिन्ध प्रदेश के टण्डाआदम में स्थित श्री अमरापुर दरबार (डिब्) रेत के टीले पर बने होने के कारण दूर दूर से होते थे डिब् के दर्शन... दो सौ चौतीस एकड़ में फैला युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का सुविख्यात तीर्थ स्थल... गौशाला, कुँआ, छोटी छोटी घास-फूस की बनी पर्ण कुटियाऐं, खेती बाड़ी, वृक्ष-पेड़ पौधे और चहुँ ओर हिर-हिरियाली... बड़ा ही मनमोहक रमणीय स्थान, अध्यात्म- साधना का पवित्र केन्द्र... संत महात्माओं की तपःस्थली... ऐसा अद्भुत नैसर्गिक नज़ारा था सद्गुरु महाराज जी के पवित्र तीर्थ श्री अमरापुर डिब् का... संत-भक्त जिस समय भी स्वामी जी के समक्ष आश्रम की सेवा हेतु किसी भी वस्तु पदार्थ की माँग करते थे... उस समय स्वामी जी के मुख से निकला वचन सिद्ध व सार्थक होता था... जिन्हें भगवान पर पूर्ण विश्वास होता है उनके लिये असम्भव कुछ भी नहीं।

ऐसे ही एक समय श्री अमरापुर दरबार पर युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज वैराग्यमयी स्थिति में भ्रमण कर रहे थे। भक्ति की अनोखी आभा मुख मण्डल पर शोभित हो रही थी। शरद पूर्णिमा के समान अमृत बरसता दिखाई दे रहा था, स्वामी जी के दैदीप्यमान मुख मण्डल पर... उसी समय संत खीयाराम हाथ जोड़कर स्वामी जी के पास आकर विनम्र भाव से प्रार्थना करने लगा... हे प्रभु! आश्रम खेती बाड़ी एवं कुँए से जल निकालने हेतु एक बैल की आवश्यकता है, जिससे भूमि को उपजाऊ बनाया जा सके और दरबार के लिए सिक्जियाँ व अत्र आदि की फसल बोई जा सके... उस समय आश्रम का सारा सेवा कार्य संत महात्माओं को सौंपा जाता था। कोई खेती बाड़ी कोई भण्डारगृह, कोई बाग़- बग़ीचा तो कोई साफ़-सफ़ाई आदि की सेवा संभाल करते थे।

भगवत अपने दास का, निशि दिन है रखवार। कह टेऊँ भूलत नहीं, हरदम करत सम्भार।।

स्वामी जी ने कहा- आप चिन्ता न करें... भगवान स्वयं ही आश्रम की सेवा हेतु बैल भेज देंगे... भगवान पर विश्वास करो... बस, स्वामी जी के कहने भर की देर थी... दूसरे दिन मोहर्रम नाम का एक मुसलमान आया और हाथ जोड़कर स्वामी जी से कहा- हे फकीर सांई! मैं यह बैल आश्रम (दरबार) पर संत महात्माओं की सेवा में दे रहा हूँ... प्रभु! आप इसे स्वीकार कीजिए... मुझे मालिक (भगवान) का फरमान हुआ है...

तत्पश्चात् बैल लाकर उस मुसलमान ने आश्रम पर रहट से बाँध दिया और स्वामी जी से प्रार्थना की.. मुझे भी मालिक से मिलने का मार्ग बतलाकर अपना मुरीद (शिष्य) बनाने की कृपा करें... स्वामी जी ने आगे चलकर 'मोहर्रम मुसलमान' को नाम दान की दीक्षा देकर शिष्य बनाया।

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की ऐसी अद्भुत अचरज भरी शक्ति-लीला देखकर सभी संत-सेवादारी अचिम्भित हो गये... कल ही स्वामी जी से बैल की बात कही थी और आज ही आश्रम पर बैल आ गया... स्वामी जी आप धन्य हो... आपकी लीला अपरम्पार है... ऐसे थे लीला पुरुषोत्तम ईश्वरीय अवतार सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

άE

網

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

纲

स

त् ना

म

सा

क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना म

सा

क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

🕉 श्री सत्नाम साक्षी \rfloor 🕉 श्री सत्नाम साक्षी 🖫 🕉 श्री सत्नाम साक्षी 🖫 ॐ श्री सत्नाम साक्षी 🖫 ॐ श्री सत्नाम साक्षी 🖼

ॐ श्री स त्

स त् ना म

सा क्षी **५** ॐ

श्री स त् ना म सा

सा क्षी **५५** ॐ श्री स त्

ना

म सा क्षा ५५ % श्री स त न म

. साक्षी **५५** ॐ श्री सत्ना

म

सा

क्षी

卐

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा–95

दुःख भंजन पालनहार.....

यह बात उस समय की है जब श्री अमरापुर दरबार (डिब्) का निर्माण कार्य चल रहा था। युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की कृपादृष्टि व आशीर्वाद से धीरे-धीरे टीले पर दीवार बनकर तैयार हो गई थी। चबूतरा भी काफी ऊँचा बन गया था। सभी संत सेवाधारी सेवा कार्य में तत्परता से जुटे हुए थे। इसी बीच सेवाधारियों को एक गर्डर ऊपर चढ़ाना था और वे मोटे रस्से की सहायता से गर्डर चढ़ाने लगे। तभी अचानक आधे मन भार का वह लोहे का गर्डर भाई मंघनराम के सिर पर गिर गया... गर्डर गिरते ही भाई मंघनराम लहूलुहान होकर अचेत हो गया और गिर पड़ा... सभी संत- सेवाधारी भयभीत हो गये... किन्तु कहते हैं न- 'जिसके ऊपर तूं स्वामी, सो दु:ख कैसा पावे' जिनके पालनहार-रक्षक स्वयं साथ हों, उसे फिर किस प्रकार की चिंता या भय? तपस्वी महापुरुषों के लिए कौन सा कार्य असंभव... वे तो अपनी कृपादृष्टि से ही सब दु:ख दर्द दूर कर देते हैं।

भाई मंघनराम को स्वामी जी के श्रीचरणों में लाकर सुला दिया और सभी संत सेवादारी प्रार्थना करने लगे- हे प्रभु! इसका दुःख दर्द दूर कर जीवन दान देकर बचाइए...

उसी समय स्वामी जी ने अद्भुत लीला रचकर सुरमा मँगवा लिया और जहाँ-जहाँ सिर पर चोट आयी थी? वहाँ सुरमा डालकर अपने वृहद् हस्त से दबाकर अर्थात् आशीर्वाद देकर कसकर पट्टी बाँध दी और तो और जैसे माता बालक को गोदी में सुलाकर दुलार करती है वैसे ही स्वामी जी ने उसे अपनी गोद में सुलाकर चादर पहना दी... महापुरुषों की इतनी रहमत-कृपा हो जाये तो फिर उसका बाल भी बांका कैसे हो सकता है...? कैसा भी दुर्लभ-दुर्गम असाध्य कार्य क्यों न हो, संत महापुरुषों की कृपा कभी निरर्थक नहीं हो सकती... स्वामी जी ने सभी को धैर्य बँधाते हुए कहा- आप चिन्ता न करें... भगवान सब कृष्ठ ठीक कर देंगे...

स्वामी जी के आशीर्वाद का ऐसा प्रभाव पड़ा कि कुछ समय पश्चात् भाई मंघनराम सत्नाम साक्षी-सत्नाम साक्षी कहने लगा... फिर स्वामी जी ने देसी घी में आधा तोला हल्दी मिलाकर, मंघनराम को पिलाकर पुनः सुला दिया। स्वामी जी की ऐसी अद्भुत लीला बनी कि एक घंटे के पश्चात् भाई मंघनराम बिल्कुल स्वस्थ हो गया और उठकर सेवा कार्य करने लगा... उसे ऐसा महसूस हुआ जैसे कुछ हुआ ही न हो... सारी पीड़ा समाप्त हो गई... एकदम स्वस्थ हो गया।

सभी संत-सेवाधारी सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की ऐसी अद्भुत अचरजमयी लीला देखकर जय-जयकार करने लगे। स्वामी जी आप धन्य हो... आप साक्षात् ईश्वरीय अवतार हो...

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

30

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी **५**५

ॐ श्री

स

त्

ना

म

सा

ॐ श्री स त्

स त् ना म

ना म सा क्षी **५**

ॐ श्री सत्नाम साक्षी #

¥5% श्रीसत्नाम साक्षी ¥5

άE

纲

स

त्

ना म साक्षी **55** 3³ 8 8 8 1 8

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

' ॥ 'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा–96

वकील भगवानदास बना गुरु महाराज जी का शिष्य.....

संत समागम तब मिले - जबहीं जागे भाग। कह टेऊँ सत्संग बिन - होय न हरि अनुराग।।

शिकारपुर का रहने वाला प्रतिष्ठित वकील भगवानदास... जो किसी भी साधु-संत को नहीं मानता था। उसे था अपनी पद प्रतिष्ठा व धन-दौलत का नशा... वकील होने के कारण भयभीत रहते थे सभी नगरवासी... अगर कोई सज्जन व्यक्ति आसपास संत-महात्माओं का सत्संग करवाता तो उन्हें वकील भगवानदास का भय लगा रहता था... कुछ कह न दे। वह कभी भी किसी संत के सत्संग में या दर्शनार्थ नहीं जाता था। साधु-संतों से कोसों दूर... किसी संत-महापुरुष को प्रणाम करना तो दूर उन्हें मानता तक नहीं था... किन्तु कहते हैं जिनके ऊपर भगवत् या गुरुदेव की कृपा हो जाये तो उसका जीवन क्षणांश में ही बदल जाता है... ऐसे ही उस वकील ने जब श्री गुरुदेव का दर्शन-दीदार किया तब जीवन में आया परिवर्तन!

एक समय शिकारपुर में वकील भगवानदास के पास ही युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के सत्संग का विशाल भव्य आयोजन, कुछ भक्तों ने मिलकर रखा... आसपास रहने वाले भयभीत हो रहे थे; क्योंकि इस शहर का बड़ा ही प्रभावशाली वकील भगवानदास कहीं नाराज होकर सत्संग में विघ्न बाधा न डाल दे... पर भगवत् कृपा से ऐसा कुछ नहीं हुआ। किन्तु ईश्वर की लीला ऐसी बनी कि दूर से सुनाई पड़ रही स्वामी जी की ओजभरी वाणी उसके हृदय को छू गई... न जाने सद्गुरु महाराज जी में कैसा चमत्कार जादू था... जो भी एक बार दर्शन या सत्संग श्रवण करता था, बस! हो जाता था स्वामी जी का दीवाना... वकील भगवानदास के साथ भी वैसा ही हुआ। जो कभी किसी संत के सत्संग-दर्शन में नहीं गया, वह आज स्वयं विनम्र भाव से स्वामी जी के पास आया- हे त्रिलोकीनाथ! आपने हमारे शहर पर बड़ी कृपा की है... हम सभी नगरवासी धन्य धन्य हो गये।जो आप जैसे महापुरुष पधारे हैं। आप प्रतिदिन सत्संग इसी स्थान पर करें... दूसरी जगह जाने की आवश्यकता नहीं... वहाँ के लोग यह देखकर हैरान होने लगे... जिस वकील से हम भयभीत हो रहे थे, वह सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के पास प्रार्थना कर रहा है... और तो और स्वयं वकील भगवानदास ने बडा विशाल सत्संग पण्डाल बनवाकर स्वामी जी का सत्संग करवाने लगा... न जाने कैसी दिव्य अलुप्त शक्ति के मालिक थे सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज... जो पत्थर दिल इन्सान को भी मोम जैसा बना दिया... इतना ही नहीं, वह प्रतिष्ठित वकील पूरे दिन भर संत-महात्माओं की बड़े श्रद्धा भाव के साथ सेवा करता, यहाँ तक कि दो समय का भोजन भी पूरा न लेता, केवल सेवा में संलग्न... बड़े-बड़े भण्डारे का आयोजन करवाने लगा... पूरे परिवार बाल बच्चों के संत-महात्माओं की सेवा करता और सत्संग भजन भाव में मस्त हो जाता... स्वामी जी ने उसकी सेवा से प्रसन्नचित्त होकर पच्चीस दिन तक शिकारपूर में सत्संग किया। शहर में सदैव यही चर्चा होती थी कि जिस व्यक्ति ने कभी भी किसी साधू-संत की सेवा नहीं की थी, कभी एक पैसा दान-पुण्य में खर्च नहीं किया था, वह आज सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की कृपा से ऐसा निर्मल स्वभाव वाला और उदार चित्त कैसे हो गया? पूरे भण्डारे का खर्च... गरीबों को दान-दक्षिणा देना... सत्संग पण्डाल का खर्च आदि स्वयं वहन करने लगा... ऐसी होती है संत-फकीर-मूर्शिदों की भक्तों के ऊपर अनन्त कृपा... बस फिर क्या था- वकील भगवानदास स्वामी जी का शिष्य बनकर जीवन भर संतों की सेवा करके अपना जीवन सफल किया।

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

άE 纲 स त्

ना म

सा क्षी 卐 άE 纲

स त् ना म सा क्षी 卐 άE

纲 स त् ना म सा क्षी 卐

άE 纲 स त् ना

म

सा क्षी **5**5 άE 纲 स त् ना म सा

क्षी

卐

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा–97

कालीदास पटेल को प्राप्त हुई पाँच संतान

युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज सदैव सैर (रटन) करते थे। सैलानियों की तरह यत्र-तत्र भ्रमण कर अन्धकार में डूबे लोगों में ज्ञान की ज्योति जगाते रहते थे। 'वाह वाह मौज, फकीरां दी' ऐसे ही एक समय देशारटन करते हुए, आज से लगभग ६०-६५ वर्ष पूर्व युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज अमदाबाद शहर पहुँच गये। उस समय यहाँ के किसी भी व्यक्ति विशेष से परिचित नहीं थे। तब भजन व भ्रमण करते- करते श्री कालीदास पटेल के घर पहुँच गये। वह बड़ा ही संतसेवी व धर्मनिष्ठ भक्त था। कालीदास भी संत महात्माओं को देखकर बड़े गद्गद् हुए... आज श्री गुरुदेव भगवान की इस दास पर बड़ी कृपा हुई है... बड़े ही श्रद्धा भाव के साथ श्री सद्गुरु महाराज जी व संत मण्डली के रहने खाने की व्यवस्था कर आसन दिया... श्री गुरु महाराज जी संत मण्डली के साथ ५-७ दिन तक यहाँ रहकर भजन सत्संग की मौज के साथ भोजन आदि का भी आनन्द लिया।

इस बीच एक दिन कालीदास भक्त उदास बैठे थे। उनको इस तरह बैठा देखकर स्वामी जी ने पूछा- अरे भाई! आप उदास क्यों बैठे हो? तभी कालीदास हाथ जोड़कर नेत्रों से अश्रुधारा बहाते हुए कहा-हे प्रभु! अन्तर्यामी बाबा जी! हमें संतान नहीं है, बिना संतान के घर परिवार खाली-खाली रहता है... हे कृपानिधान! मेरे ऊपर दया करो... कृपा करो... जिससे मुझे संतान सुख की प्राप्ति हो जाये। उस वक्त सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज भजनानन्द की मौज में बैठे थे... कहते हैं जब दरवेश संत फकीर रब की बंदगी में बैठे हों- उस वक्त कृपा हो जाये तो सर्व मनोरथ सिद्ध हो जाते हैं... ऐसा ही कालीदास पटेल के साथ हुआ। महापुरुषों की कृपा बरस पड़ी...

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने आशीर्वाद दे दिया... आप चिन्ता मत करो... भगवद् कृपा से तुम्हें पाँच संतान की प्राप्ति होगी... श्री गुरु महाराज जी आशीर्वाद देकर चले गये।

समय पाकर महापुरुषों की वाणी सत्य साबित हुई... कालीदास के दो पुत्र एवं तीन पुत्रियाँ हुई... जिसमें विक्रम भाई, सुकेतु भाई दो पुत्र एवं भामनि, तक्षशिला व ज्योतिका नाम की तीन पुत्रियाँ... उनका परिवार खुशहाल हो गया। बारम्बार स्वामी जी की कृतज्ञता-आभार मानने लगे। धन्य-धन्य हैं श्री गुरुदेव भगवान! तो ऐसी होती है संत तपस्वियों की महती कृपा! आज भी उस परिवार में युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की चरण पादुका, चटाई (जहाँ पर स्वामी जी बैठते थे) और स्वामी जी की चार-पाँच तस्वीरें रखी हुई हैं... चरण पादुका अमदाबाद में अभी हाल ही में बने नवनिर्मित प्रेम प्रकाश आश्रम में कुछ दिन दर्शनार्थ रखने के बाद श्री अमरापुर स्थान जयपुर में दर्शनार्थ रखी गयी हैं...

(यह सारा वृतान्त कालीदास पटेल के परिवारजनों ध्रुमिति, निशि, विदेही पटेल एवं अरुणादेवी पटेल ने संतों को सुनाया।)

शतू-शतू नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

άE 纲 स

त् ना म

सा क्षी 卐

Š 纲 स त् ना म

सा क्षी 卐 Š 纲 स त्

ना म सा क्षी 卐 άE 纲 स

त् ना म सा क्षी **5**5

Š 夘 स त् ना म

सा

क्षी

卐

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा–98

सत कृपा प्रसाद कभी निरर्थक नहीं हो सकता

आज्ञा गुरु की भंग कर - विचरे जो संसार। कह टेऊँ ताँका कभी - होवत न निस्तार।।

एक समय एक माता जो शारीरिक व्याधि अर्थात् घुटने के दर्द से पीड़ित थी। गुरु दर के प्रति विश्वास भी था उसमें अडिग... युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के प्रति था अटूट श्रद्धा भाव। नित्य नियम से जाती थी सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के दरबार... प्रतिदिन सत्संग श्रवण करना, सेवा करना उसकी आदत में आ चुका था। सुखी सम्पन्न परिवार, किसी भी प्रकार की कमी नहीं थी, गुरु कृपा से सब कुशल मंगल, प्रसन्नचित्त... बस था तो थोड़ा शारीरिक दु:ख घुटनों का दर्त... जिससे सेवा करने व चलने फिरने में होती थी बहुत परेशानी...

एक दिन समर्थ सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज बैठे थे नीम वृक्ष के छाँव तले भजनानन्द की मौज मस्ती में... वृत्ति थी एकाकार, मन की तार जुड़ी हुई थी प्रभु परमात्मा से... सत्पुरुषों की बन्दगी भी अद्भुत होती है, भक्ति की आभा मुख मण्डल पर शोभित, अवधूती मस्ती...

उस स्थिति में पहुँच गई वह माता स्वामी जी के पास। सुना दिया अपने घुटने का दुःख दर्द- हे मेरे मालिक! हे कृपानिधान प्रभु! आप दया करो, कृपा करो, मेरे दुःख दर्द दूर करो...

संत-महापुरुषों का क्या... कब किसके ऊपर रहमत कर दें, कृपा कर दें... ऐसी कृपा उस माता के ऊपर भी हुई... स्वामी जी जिस नीम वृक्ष के छाँव तले वैराग्यमयी स्थिति में बैठे थे उसी नीम के वृक्ष की आठ-दस पत्तियाँ माता को दे दीं... जाओ माता! इसे घोट कर पी लेना... परमात्मा की कृपा से सब ठीक हो जायेगा... कौन समझे महापुरुषों की लीला को... एक तो घुटनों का दर्द, जिसमें ठण्डी वस्तु पीना सख्त मना होती है और दूसरी ओर स्वामी जी का कृपा प्रसाद... और नीम वैसे भी बहुत ठण्डी होती है। अब माता नीम के पत्ते घर ले जा रही थी। रास्ते में किसी परिचित व्यक्ति को यह बात बताई, उसने कह दिया- अरे, ऐसा मत करना। नीम और दर्द यह तो विरोधाभास है। नीम का रस तो बहुत ठण्डा होता है यह घुटने के दर्द को और ज्यादा बढ़ा देगा... अभी चलने लायक तो हो फिर बिल्कुल भी चल नहीं सकोगी... ऐसा सुनकर माता का विश्वास डगमगा गया... अब वह सोच विचार में पड गई 'क्या करूँ, क्या न करूँ'? कहते हैं 'महापुरुषों द्वारा दिया गया प्रसाद "अमृतफल" होता है '... वह व्यर्थ नहीं हो सकता... श्रीमद्भागवत में भी संतों द्वारा दिये फल से ही 'गोकर्ण' का जन्म हुआ था। मच्छन्दरनाथ गुरु के विभूति (राख) से 'गोरखनाथ' का जन्म हुआ। ऐसे सिद्ध संतों की वस्तू व वचन निरर्थक नहीं हो सकते... जो कह दिया या जो वस्तु अभिमंत्रित करके दे दी वह 'अमृत' के समान काम करती है...

उस माता ने दूसरे के कहने पर पत्ते फेंक दिये। किन्तु किसी कारण या लीलाधर की लीलावश तीन-चार पत्ते उसकी पोटली में रह गये। अब माता ने सोचा- चलो! पूरे पत्तों का रस तो नहीं पीऊँगी... ये तीन-चार पत्ते रह गये हैं, इसी का रस निकालकर पी लूँ... क्या मालूम स्वामी जी की कृपा-रहमत हो जाये... 'सन्देह अविश्वास' के कारण ही मनुष्य संत-महापुरुषों को न पहचानने की भूल कर बैठता है।

सिद्ध तपस्वियों का 'कृपा प्रसाद' मिथ्या व निरर्थक नहीं हो सकता... उसका फल तो अवश्य ही प्राप्त होता है। फिर क्या था- उस माता ने उन तीन-चार पत्तों का रस निकालकर 'सत्नाम साक्षी - सत्नाम साक्षी '... कहकर पी लिया। थोड़ी देर के बाद माता को राहत महसूस हुई, दर्द भी कुछ कम हुआ... अब मन ही मन पश्चाताप करने लगी। अरे, मुझसे तो बहुत बड़ी भूल हो गई। मैंने दूसरे के कहने पर नीम के पत्ते फेंक दिये. कहते हैं न "अब पछताय क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत" समय निकल जाने पर पछतावे के सिवाय भी हाथ में नहीं आता! माता पुनः सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के पास आई। स्वामी जी! मुझे माफ कर दो, मुझसे भारी भूल हो गई, मुझे थोड़ा कृपा प्रसाद और दे दो...

सद्गुरु श्री स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने कहा- माता! अब वह समय-घड़ी-पल निकल गया। उस समय की स्थिति कुछ अद्भुत और विलक्षण थी... वो स्थिति परमात्मा की होती है... जो उस समय संत-महापुरुषों से पा लेता है उसका जीवन स्वतः ही सँवर जाता है... जो रह गया- सो रह गया... कौन समझे ऐसे दुर्लभ योगी सत्पुरुषों को... जिसके ऊपर कृपादृष्टि पड गई, वह इस भवसागर से पार हो गया। अतः संत कृपा प्रसाद का कभी निरादर नहीं करें।

शतु-शतु नमन - धन-धन सदुगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

άE

纲

स

त्

ना

म

सा क्षी

卐

άE

網

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

άE 纲

त् ना म

सा क्षी

> Š 纲 स

ना म सा क्षी 卐

纲 स त् ना म सा

Š 纲 स त् ना म

सा क्षी **5**5 纲 स

卐 त्

स

Š

55

άE

त् ना म

卐

सा क्षी 'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा–99

सारा सामान चोर ले गए – संतों को रहना पड़ा भूखा

सुख-दु:ख में सम रहत जो - ताँको ज्ञानी जान। सुख-दु:ख जिहँ भासत नहीं - टेऊँ सो भगवान।।

भजन-साधना में अनेक कष्ट झेलने पड़ते हैं, कठिनाईयाँ भी बहुत आती हैं, पर जो प्रभु परमात्मा की बंदगी करते हैं... भक्ति में रमे रहते हैं, उन्हें किसी भी प्रकार का दुःख स्पर्श तक नहीं करता... युगपुरुष सद्गुरु श्री स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने भक्ति-भजन, तप साधना कर रेत के टीले पर जब श्री अमरापुर दरबार (डिब्) का निर्माण किया। तब पूरा आश्रम ख़ुला हुआ था... चहुँ ओर जंगल व झाड़ियाँ थीं, कोई भी व्यक्ति कभी भी कहीं से भी आ सकता था... तीन-चार कच्ची घास-फूस की झोपड़ियाँ थीं एवं पाल- चद्दर ढककर सीधा-सामान आदि रखे जाते थे... आँधी-त्रफान से भी कई बार नुक्सान होता था पर स्वयं शक्ति के मालिक... प्रभु स्मरण में स्थित रहने वालों के लिए क्या नफा...? क्या नुक्सान...? सदैव सम भाव में स्थित... कोई भी दुःख नहीं, कोई क्षोभ या भय नहीं, मस्ती में मस्त... न आने की ख़ुशी न जाने का गम... ऐसे ही एक दिन युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज और सारे संत सेवाधारी भजन सत्संग में बैठे थे। भजनानंद की मौज लगी हुई थी। किसी को कोई सुध-बुध नहीं... न समय का भान... न कोई चिन्ता... बस! भक्ति रस का आनन्द ही आनन्द! उसी समय कुछ चोर आश्रम पर आये और पाल-चद्दर बर्तन, बल्कि सारा खाने का सामान भी चुरा कर ले गये... केरों का पतीला, जो चूल्हे पर रखा था वह भी उतार कर ले गये... अर्थात् सभी वस्तुएँ उठाकर ले गये... उस दिन साधु संतों को भूखे ही रहना पड़ा, जीवन में संत पुरुषों को ऐसी अनेक किठनाईयों का सामना करना पड़ता है पर संत तपस्वियों को किसी प्रकार का कोई दुःख नहीं होता। वे किसी के आगे हाथ नहीं फैलाते... सदैव परमात्म चिन्तन में स्थित रहते हैं। ऐसा था आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का संयमशील जीवन... जिन्हें न जाने कितनी बार ऐसी कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ा...

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

纲

स

त्

ना

म

सा क्षी

卐

άE

麲

स

त्

ना

म सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

άE 纲 स त् ना

म

सा क्षी 卐 Š 纲

स त् ना म सा क्षी

卐 Š 纲 स त् ना म सा

क्षी 卐 Š 纲 स त् ना

म सा क्षी **5**5 άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु खामी टेऊँराम गुण गाथा–100

वचनबद्ध व भक्त वत्सल

एक समय युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने एक ऐसी ही अद्भुत लीला रची जो अविश्वसनीय-सी लगती है... हमारी समझ से कोसों दूर, फिर भी है यह सत्य कथा... जो संत- महात्माओं ने प्रत्यक्ष रूप में देखी। श्री अमरापुर दरबार पर प्रतिदिन प्रातः लस्सी, ढ़ोढा-चटणी या दलियाँ-खीर प्रसाद संत-महात्माओं को दिया जाता था। **सदगरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज** भी अल्पाहार दलियाँ-खीर प्रतिदिन प्रसाद स्वरूप लेते थे। ऐसे ही एक समय एक माता जी की इच्छा हुई कि मैं भी स्वामी जी को दलियाँ-खीर प्रसाद खिलाऊँ... स्वामी जी को रोज प्रार्थना करती... सद्गुरु महाराज जी कहते- माता! आप चिन्ता मत करो, हम आपको अपने आप बता देंगे। तब आप खीर- दलियाँ लेकर आना। समय व्यतीत होता रहा। माता को प्रतिदिन इंतजार रहता... कब स्वामी जी खीर- दलियाँ लाने के लिये कहेंगे... स्वामी जी को खिलाने की तीव्र उत्कण्ठा व प्रबल भाव था। कब कृपा होगी इस दासी पर... ये ही भाव था माता का... समय की न रुकने वाली गति, होती बड़ी बलवान... शरीर नश्वर, संसार के हर प्राणी को यह पँचभौतिक शरीर त्यागना पड़ता है, विधि-विधान के अनुसार। कुछ समय पश्चात सदगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज पारब्रह्म की महाज्योति में लीन हो गये... ज्ञात होने पर भोली भाली माता वहाँ आयी। माता ने कहा- स्वामी जी! आप ऐसे नहीं जा सकते... मुझे वचन दिया था- हम तुम्हारी खीर खायेंगे... अब कौन समझाये उस भोली भाली माता को... जिसका दृढ़ विश्वास था श्री गुरु महाराज जी के वचन पर... संतों ने समझाने का बहुत प्रयास किया पर वह माता भाव से भावित होकर कुछ भी सूनने को तैयार न हुई। तब कुछ संतों ने कहा- चलो माता! आप सद्गुरु महाराज जी के लिये दलियाँ और खीर लेकर आओ... माता शीघ्र ही घर जाकर बड़े स्नेह भाव से खीर-दलियाँ बनाकर लाई... स्वामी जी के आगे खीर-दलियाँ रख दी और कहा- हे गुरुदेव भगवान! आपने ही कहा था कि हम तुम्हारी खीर-दिलयाँ खायेंगे... अब इसे स्वीकार कीजिए...

संतों ने भी माता का भाव देखकर थोड़ी देर के लिये खीर स्वामी जी के समक्ष रख दी... एक ओर शोकाकुल, उदासी, मायूसी का माहौल छाया हुआ था तो दूसरी ओर माता का अनन्य भाव... कहते हैं कि विश्वास में बड़ी शक्ति होती है। जड वस्तु से बनी मूर्ति या प्रतिमा में भी चेतन शक्ति आ जाती है और प्रत्यक्ष रूप में दर्शन देती है। नामदेव ने पत्थर की मूर्ति से भगवान प्रकट किया, मीरा ने जहर को अमृत बना दिया, ज्ञानेश्वर पत्थर के पहाड पर बैठकर आगे चल आये, हरिदास महाराज ने पत्थर की मूर्ति से आँसु बहा दिए... ये सभी प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। ऐसे ही माता की प्रेमा भक्ति ने **सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज** को खीर-दलियाँ खाने के लिए बाधित कर दिया... अनहोनी सत्य साबित हुई... कुछ समय पश्चात् स्वामी जी उठे और माता से कहा- लाओ खीर और दिलयाँ दो... हमें बड़ी भूख लगी है... स्वामी जी ने बड़े ही प्रेम भाव से खीर प्रसाद खाया... और माता को आशीर्वाद दिया। माता को दिया वचन सार्थक कर पुनः परमधाम को प्राप्त हो गये। यह सब देखकर आसपास बैठा संत मण्डल भी बड़े विस्मय में पड़ गया... ये तो अद्भुत चमत्कारिक शक्ति है... श्री गुरु महाराज जी तो साक्षातु ईश्वरीय अवतार हैं... इन्हें समझ पाना बडा कठिन है...

युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की ऐसी रहस्यमयी लीलाओं को कोई विरला ही समझ सकता है। सिद्ध-तपस्वी को समझना अर्थात् भगवान को प्राप्त करना। ऐसे थे वचनबद्ध पूर्ण परमेश्वर स्वरूप सदुगुरु श्री स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

30

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

30

纲

स

त्

ना

म

सा

ॐ श्री स त्

स त् ना म

म सा क्षी **५**

ॐ श्री स त् ना स

ति क्षी **५५** ॐ श्री स त्ना म

सा क्षी **५** ॐ श्री स त्ना म

म साक्षी **५५** ॐ श्री स

ना

म

सा

क्षी

卐

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा–101

दिव्य सानिध्यता से बनाया नास्तिकों को आस्तिक.....

संसार में प्रत्येक प्राणी अपने गुण, कर्म, स्वभाव को लेकर जन्म लेता है। जन्म जन्मांतरों के संस्कारों के आधार पर कोई नास्तिक विचारों को लेकर उत्पन्न होता है तो कोई आस्तिक विचारों को लेकर उत्पन्न होता है। प्रायः देखा गया है कि संसार में ऐसे लोग बहुत ही कम मात्रा में मिलेंगे जो दैवीय गुणों से भरे हों, वरना अधिकांशतः नास्तिक स्तर वाले ही लोगों की संख्या मिलेगी। धर्मप्राण भारत की भी वर्तमान में ऐसी स्थिति होती जा रही है। किन्तु एक समय वो था, जब सिंधु देश में धर्म का हास हो रहा था, असंख्य हिन्दू लोग अपने धर्म से विमुख होकर अन्यान्य धर्म की ओर उन्मुख हो रहे थे, धर्म का व धार्मिक विधि विधानों एवं शास्त्रों का मखौल उड़ाया जा रहा था, माँस मदिरा, जुआ नशा आदि में ही जिनका जीवन व्यतीत होता था, ईश्वर नाम की कोई चीज है यह तो उनको पता तक नहीं था तभी ऐसे समय में जिस महापुरुष ने सिंध की नैया को पार लगाया वे थे- युगपुरुष आचार्य सद्गुरुस्वामी टेऊँराम जी महाराज!

जब भी धराधाम पर कोई संबोध प्राप्त सद्गुरु अवतिरत होता है, तो अवश्य ही कुछ न कुछ क्रांति होती है.. . आचार्य जी के अवतरण से भी अनंत धर्म कार्य सम्पन्न हुए, उनमें जो सबसे मुख्य था, धर्म विमुख जनता को सही मार्ग पर लाना। इसके लिए उन्होंने सम्पूर्ण सिंध देश की धर्मयात्रा की... यात्रा के दौरान उन्होंने लोगों की दयनीय दशा को देखा, उनकी ऐसी स्थिति को देखकर उनका हृदय करुणा से भर गया। अतः उन्होंने अपने को कष्ट देकर भी उनके उद्धार का बीड़ा उठाया...

इसी संदर्भ में सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने लिखा है-

जिसका जीवन पशु समाना, खाना पीना फिरत अजाना शुभ कर्मों का मार्ग बता तिस, राम का नाम जपाया था मेरा सत्गरु टेऊँराम जगत में, जीव उबारन आया था

इससे यह प्रतीत हो रहा है कि उन वेद विरुद्ध आचरण करने वाले नास्तिकों को आचार्य जी ने किस प्रकार से आस्तिक बनाना प्रारम्भ किया। नास्तिक का अर्थ है जो वेद विरुद्ध, शास्त्र विरुद्ध आचरण करे एवं ईश्वर की सत्ता में विश्वास न करे, उसे नास्तिक कहा जाता है। आचार्य जी ने ऐसे नास्तिकों को कैसे आस्तिक बनाया, देखें-

सत्संग सुंदर रास रचाए, प्रेम किया प्रचारा सब जीवों के मन को मोह्या, बंसी मधुर बजाए स्वामी सत्गुरु टेऊँराम आए, जिन सोए जीव जगाए.....

सत्संग व सद् उपदेशों के माध्यम से धीरे-धीरे प्रेम की मधुर मुरली बजाकर उन सोये हुए (नास्तिकों को) जीवों को जगाकर उन्हें हिर के मार्ग में लगा दिया। उनके शुष्क हृदयों को प्रभु प्रेम के मधुर रस से भरकर उन्हें भी प्रभु प्रेमी व सुहृदयी बना दिया...

इस प्रकार से हम देखते हैं कि **आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज** का इस सृष्टि के जीवों पर अनन्त उपकार हैं, उनके दिव्य सानिध्यता में असंख्य वीतराग युवक तैयार हुए जिसके माध्यम से सृष्टि का अनंत कल्याण हुआ और हो रहा है...

ऐसी दिव्यात्मा युगपुरुष पूज्य श्री परम गुरुदेव आचार्य श्री सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज को हमारा शत् शत् नमन है!

शत-शत नमन- धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

麲

स त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

ॐ श्री स

च त् ना

म सा क्षी

> **५५** ॐ श्री स

त् ना म सा

म साक्षी **५**5 30

320 別 स त् ना म

सा क्षी फ ॐ

%위근구구근관관관관관등기기<td

卐

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा–102

जिसका आश्रम, जिसकी प्रेरणा से बना – वही आकर बनायेगा

भक्तों के वश में रहे, कह टेऊँ भगवान। योग क्षेम तांका करे, सुख सम्पति मान।।

परमात्मा प्रत्येक युग में भक्त-दासों व संत-महात्माओं के दुःख दूर करते हैं। भक्त नामदेव, सैना, सधना, प्रह्लाद, ध्रुव व कबीरदास आदि भक्त-किवयों के समय समय पर कार्य पूर्ण किये हैं। भक्त धन्ना के कहू के खेत से गेहूँ बना दिये तो ज्ञानेश्वर के कहे अनुसार एक भैंसे से गायत्री मंत्र उच्चारण करवा दिए... द्रोपदी को सभा में चीर (वस्त्र) देकर भरी सभा में लाज बचायी... अर्थात् जब कभी भी भक्तों पर कष्ट विपत्ति आयी है तो भगवान ने उनकी रक्षा की है। भक्तों का मान बढ़ाया है। यहाँ तक कि स्वयं का ही अपमान क्यों न हो...

इसी प्रकार युगपुरुष सद्गुरु श्री स्वामी टेऊँराम जी महाराज को भी जीवन में अनेक विपत्तियों और किठनाइयों का सामना करना पड़ा। पर कहते हैं न कि जिसे भगवान पर पूर्ण विश्वास होता है उसका बाल भी बांका नहीं होता. स्वामी जी का भी भगवान पर पूर्ण विश्वास था। मजहिबयों-भेदवादियों द्वारा िकतने ही कष्ट-दुःख दिये गये पर मुख से कभी भी किसी के प्रति श्री गुरु महाराज जी ने कुछ नहीं कहा। किसी को कड़वा शब्द नहीं बोला... कितने पिरश्रम, सेवा भाव से रेत के टीले पर आश्रम बनवाया था... वह सब ईर्ष्यालुओं ने जला दिया... कुँआ तोड़ दिया... बगीचे को तहस-नहस कर दिया, पैड़-पौधे काट दिए... झोंपड़ियाँ, चबूतरे, भण्डारगृह सभी में आग लगा दी... जिसका वर्णन शब्दों में नहीं िकया जा सकता। उस समय ऐसा आभास हो रहा था मानो कि वह प्रलयकाल की अग्न हो... अर्थात् जो सच्चे प्रभु भक्त होते हैं वे इस किठन परीक्षा में प्रभु के दरबार में पास हुए। जिन-जिन संत पुरुषों ने सच्ची भिक्त की है उन उन लोगों ने पहले दुःख ही पाया है। सोना जितना जलाया जाता है उतनी ही उसमें चमक अधिक होती है। संत-महात्माओं का जीवन भी उसी प्रकार का होता है। सत्यता में अनेक किठनाइयाँ आती हैं...

इतना सब कुछ होने पर कुछ भी नहीं कहा... आप तो प्रभु परमात्मा की लीला को देखते रहे... अनेक लोगों ने स्वामी जी व संतों से कहा- आप सामान निकाल लो.... किन्तु स्वामी जी ने कहा- जिनका सामान है, वह ही अपने आप निकालेगा... जिसने आश्रम बनवाया है, प्रेरणा दी है, वही सब कुछ आकर करेगा... हमारा कुछ भी नहीं... इतने निर्मोही, विरक्त फकड़ थे युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज।

'लक्ष्मी नारायण खड़े - धर अंग्रेजी वेष। किसने आग लगाई है- कहो हमें दरवेश।।

जिन्हों किसी भी वस्तु पदार्थ से आसक्ति, मोह ममत्व नहीं... अर्थात् संत-महात्माओं, सिद्ध पुरुषों का भगवान पर पूर्ण विश्वास... नामदेव भक्त का घर भी प्रतिद्वन्द्वियों ने जला दिया तो भक्त नामदेव ने कहा- जिसकी वस्तु थी उसी को समर्पित... किसी प्रकार का शोक-दुःख नहीं। इसी प्रकार सिद्ध योगी महापुरुष सद्गुरु श्री स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने आश्रम दरबार को जला देने पर भी किसी प्रकार की कोई प्रतिक्रिया नहीं की... न दुःख, न क्रोध न कोई मन में क्षोभ... अपनी मस्ती में मस्त, अवधूती भक्ति का आलम... फिर क्या था - स्वयं भगवान श्री लक्ष्मी नारायण यूरोप-यूरोपियन (अंग्रेजी अफसर) का रूप धारण कर आये और पुनः श्री अमरापुर आश्रम का निर्माण करवाकर भक्त का मान बढ़ाया और आश्रम की जमीन भी महाराजश्री के नाम कर दी। गीता में बताया गया कि मेरे भक्त कैसे होते हैं-

यो न हृष्यति न द्वेष्टि न शोचित न काङ्क्षति। शुभाशुभपरित्यागी भक्तिमान्यः स मे प्रियः।।

जो अनुकूल वस्तु पाकर हिर्षित नहीं होता और प्रतिकूल वस्तु पाकर दुःखी नहीं होता। जो चीज नष्ट हो गई, उसका शोक नहीं करता तथा जो वस्तु उसके पास नहीं है उसकी आकांक्षा नहीं करता और जो शत्रु और मित्र के साथ समान भाव रखता है। जो मान-अपमान में भी समान रहता है एवं 'संग विवर्जितः' आसक्ति से रहित रहता है। जीवन पर ऐसी वृति रखकर सदैव प्रभु परमात्मा के चिन्तन में स्थित रहे। अनेक किठनाइयाँ आने पर मन विचित्तत नहीं हुआ... न ही कभी किसी का अहित सोचा और न ही कभी कड़वा शब्द कहा... परमात्मा की रजा में राजी रहे... तो ऐसे थे परम योगीश्वर स्थितप्रज्ञ सद्गुरु श्री स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

άE

纲

स

त्

ना

म

सा क्षी

卐

άE

網

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

ॐ श्री स

त् ना म

म सा क्षी

卐

3ँ० श्री स

त्न म सा क्षी **५**%

्र श्री स त्ना म सा

95 95 97 स त्ना म

सा क्षी **५५** ॐ श्री स

े ना म सा क्षी **५** 'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा–103

चैत्र मेला सिंधी बारहवीं तारीख़ को ही क्यों.....

प्रेम प्रकाश मण्डल का, चैत्र मेला अभिराम। संत जनों का दर्श कर, पाओ आत्मराम।। मिले मिलाओ मिल रहो, मिले तो मेला होय। अन्तर आत्म जे मिले, मेला कहिये सोय।।

अखण्ड भारत देश! अनोखा संत-समागम! कुम्भ सदृश विशाल मेला! भक्ति-भाव से ओत-प्रोत! भजन-भोजन का अखण्ड भण्डार... सत्संग गंगा में स्नान करने का सुअवसर... जीव का परमात्म से मिलन... अध्यात्म चर्चा! नाम-दान-स्नान का त्रिवेणी संगम... युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज द्वारा स्थापित विश्व विख्यात चैत्र मेला! प्रेम प्रकाशियों का महाकुम्भ मेला! लघु काशी जयपूर गुलाबी नगर की प्रमुख शान! ऐसा है प्रेम प्रकाश मण्डल का चैत्र मेला...

एक समय टण्डा आदम में स्थित श्री अमरापुर दरबार (डिब्) पर कुछ संत-महात्मा एवं भक्तजन एकत्रित हुए। उन्होंने स्वामी जी को दण्डवत् प्रणाम किया और हाथ जोड़कर विनती करने लगे कि हे भगवन्! आप तो सैलानी संत हैं... कभी कहाँ तो कभी कहाँ... जीवों के उद्धार हेतु यत्र-तत्र भ्रमण करते हैं... नाम का उपदेश देते हैं। जन-जन के हृदय में ज्ञान का दीप प्रज्जवित कर रहे हैं। अंधकार में डूबे हुए जीवों को सत्मार्ग की राह दिखला रहे हैं। चल तीर्थ के समान सत्संग गंगा में स्नान करवा रहे हैं। अज्ञानता की नींद में सोये हुए लोगों को जगा रहे हैं... किन्तु श्री अमरापुर दरबार (डिब्र) पर अनेक संत- महात्मा एवं श्रद्धालुगण दूर-दूर से आपके दर्शनों के लिये यहाँ आते ही रहते हैं। आप तो सदैव सैलानी हैं अर्थात् भ्रमण करते रहते हैं, और इस स्थान डिब्र पर आपका रहना बहुत कम समय के लिये ही होता है। इस कारण प्रेमी भक्तजन आपके दर्शनों से वंचित निराश होकर लौट जाते हैं... अतः आपश्री के पूज्य श्रीचरणों में प्रार्थना है कि ऐसे कुछ दिन निश्चित कर दीजिए, जिससे संत, भक्त प्रेमी आपका दर्शन व सत्संग सुनकर अपना जीवन सफल बना सकें...

इस पर स्वामी जी ने सभी संत-महात्मा, सत्संगी प्रेमियों को एक बैठक में प्रस्ताव देते हुए कहा- 'इस डिब्र (बालू रेत का टीला)पर चैत्र मास की सिन्धी बारहवीं तारीख को रेत का चबूतरा और झोंपड़ियाँ बनाकर सत्संग का शुभारम्भ किया गया था... अतः चैत्र मास की सिन्धी बारह तारीख से लेकर चार दिन तक संत-महात्मा, भजन मण्डलियाँ, प्रेमी भक्तजन आदि सभी के लिये अखण्ड भजन-भोजन का समागम रखना चाहिए...'

स्वामी जी का यह सुझाव सभी संत-महात्माओं, भक्तजनों ने प्रसन्नचित्त होकर स्वीकार किया। चैत्र मास में बसन्त ऋतु होती है। रातें ठण्डी और सुहावनी होती हैं। गर्मी भी अधिक नहीं पड़ती। **हिन्दू संस्कृति का नव वर्ष भी चैत्र मास से प्रारम्भ होता है**... फसल कटाई होकर इस समय किसान भी फुर्सत में होता है (उस समय सिन्ध में अधिकांश लोग खेती-बाड़ी का कार्य ही करते थे) इसी मास में चेटीचण्ड, रामनवमी, नवरात्रा, हनुमान जयंती आदि पर्व-उत्सव मनाये जाते हैं... अतः इस मास में 'मेला' लगाना अति उत्तम होगा और **इस मेले को 'चैत्र मेला' के नाम से कहा जाये।**

इस पवित्र आध्यात्मिक चैत्र मेले में दूर-दूर के प्रेमी भक्तजन, संतों के श्रीमुख से सत्संग गंगा में स्नान कर लाभ उठा पायेंगे। इस प्रकार 'चैत्र मास की बारहवीं तारीख' को चैत्र मेला प्रतिवर्ष मनाये जाने का निश्चय हुआ...

आज भी सिद्ध तपस्वी युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज द्वारा स्थापित कुम्भ सदृश विशाल 'चैत्र मेला' लघु काशी कही जाने वाली गुलाबी नगरी जयपुर के पावन तीर्थ स्थल श्री अमरापुर स्थान (डि<u>ब</u>) पर प्रतिवर्ष बड़ी भव्यता एवं श्रद्धा, भक्ति–भाव के साथ मनाया जाता है।

पाँच दिनों तक चलने वाले कुम्भ सदृश चैत्र मेले में युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का अखण्ड भजन व भोजन (भण्डारा) 'लेने वाले बाबा टेऊँराम-देने वाले बाबा टेऊँराम' उक्ति को चिरतार्थ करता हुआ चलता है। इस अवसर पर असंख्य श्रद्धालुगण ज्ञानसिरता में डुबकी लगाकर अपने जीवन को धन्य-धन्य बनाते हैं। महापुरुषों की इस पवित्र तीर्थ स्थली श्री अमरापुर स्थान (सिद्ध पावन गुरु स्थल) को शत्-शत् नमन्!

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

網

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

3ॐ श्री स त

प त् ना म

म सा क्षी **५**

न ॐ श्री स त्न

म सा क्षी **५** औ स

त्

ना म साक्षी ५५ % श्री स त्ना

म सा क्षी **५** ॐ श्री स त्ना

म

सा

क्षी

卐

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा–१०४

भजन और भोजन तो स्वामी टेऊँराम जी का.....

हिन्द-सिन्ध में प्रसिद्ध भजन और भोजन तो युगपुरुष समर्थ सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का... अलौकिक... अखण्ड... अमृतमय...

'यत शास्त्रं प्रमाणं' अनेक प्रसँग या वृतान्तों को जब शास्त्र प्रमाणित करते हैं, फिर वह बात सिद्ध या सार्थक मानी जाती है। किन्तु अगर सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज जैसे तपस्वी सिद्ध महापुरुष के भजन और भोजन की बात करें तो प्रत्यक्षता को प्रमाण की आवश्यकता नहीं..... 'भजन और भोजन तो सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का'...

अवसर- प्रेम प्रकाश पंथ के पुरोधा युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज द्वारा स्थापित श्री अमरापुर दरबार का चैत्र मेला... स्वामी जी का मेला चाहे वो हिन्द में हो या सिन्ध में, बहुत प्रसिद्ध, दूर-दूर तक होता रहता है चैत्र मेले का यशोगान...

कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी। अद्भुत 'चैत्र मेला' जिसने भी देखा होगा, उसने हकीकत में माना कि वाकई कोई ऐसी अद्भुत शक्ति है 'सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के भजन और भोजन महाप्रसाद की...' जहाँ चैत्र मेले के पावन अवसर पर प्रतिदिन लाखों भक्त श्रद्धालुगण जयपुर के व्यस्ततम मार्ग एम. आई. रोड पर बैठकर श्री गुरु महाराज जी का भोजन प्रसादी बड़े ही प्रेम श्रद्धा भाव के साथ ग्रहण कर रहे थे... उन्हें इस बात से भी कोई फर्क नहीं पड़ रहा था कि मैं इतना प्रतिष्ठित व्यक्ति हूँ या फलां ऊँची जाति है मेरी, बस! बाबा का प्रसाद जहाँ मिला, वहीं बैठकर प्रसाद पाकर ही जाना है... चाहे लोगों के चरणों की धूल लग रही हो... एक ही भाव कि स्वामी जी का प्रसाद तो खाना ही है... अमीर हो या ग़रीब अथवा हो चाहे किसी धर्म-वर्णाश्रम का, किसी प्रकार का कोई भेद भाव नहीं... मानो कर्ण और कुबेर की तरह अखण्ड भण्डारा प्रसाद लुटा रहे हो... जैसा कि कवियों ने भी गाया है:-

मोक हली थे मड़िद जी मानी, चारई वर्ण जिमया थे जानी। मानो कर्ण कुबेर हो दानी, निर्मोही निष्काम।

ऐसे पूर्ण पुरुषोत्तम, महायोगी, तपस्वी हर कोई नहीं हो सकता... विरले ही महापुरुष थे सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज! जिन्होंने एक और सत्संग गंगा में श्रद्धालुओं को स्नान कराया तो दूसरी ओर अखण्ड भण्डारा प्रसाद चलाया। गुलाबी नगरी के नागरिकगण तो देखते ही रह जाते हैं... वाकई अद्भुत करिश्मा है इस श्री अमरापुर दरबार के चैत्र मेले का... जिसने देखा उसकी जिव्हा थकती नहीं महापुरुष- युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के गुण गाते-गाते...

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा– 105

खण्डू गाँव को बचाया बाढ़ के कहर से.....

एक समय युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज खण्डू गाँव में मरा हुआ कुता उठाकर क्या फेंक आये, पूरे शहर में प्रतिद्वन्द्वीयों ने बवाल मचा दिया... तरह तरह से अपमान करने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी... बड़ी-बड़ी पंचायत लगाकर स्वामी जी को नीचा दिखाने व दण्ड देने की कोशिशों करने लगे... कई दिनों तक व्यर्थ की पंचायत लगती रही। गुरुमुख लोग स्वामी जी के उपकार की प्रशंसा करने लगे किन्तु पूर्वाग्रही लोग न जाने कैसे कैसे दण्ड दिलवाने की कोशिशों करने लगे... जिससे संत की निन्दा हो व उन्हें नीचा दिखाया जा सके... परन्तु जिसके रखवाले स्वयं प्रभु परमात्मा हैं उन्हें किस बात का भय... वो तो अपनी अवधूती में मस्त..

उसी समय परमात्मा ने एक लीला रची.. सिन्धु नदी में बाढ़ आने लगी... बादल घनघोर होकर मूसलाधार बारिश करने लगे, बिजली चमकने लगी। चहुँ ओर पानी ही पानी... सभी खण्डू वासी भयभीत... सारे गाँव में कोलाहल मच गया। अब क्या किया जाय...? क्षण-प्रतिक्षण सिन्धु दिरया का पानी खण्डू गाँव की ओर बढ़ने लगा... समझ में नहीं आ रहा था कि अब क्या किया जाये...?

अनेक सज्जन पुरुषों ने समझाया कि संत-महापुरुषों को सताना नहीं चाहिये पर मनमुखी लोग अपनी बात पर अडिग... सज्जनों ने कहा कि हमें चलकर स्वामी जी से माफी माँगनी चाहिये, ये उन्हें सताने का ही परिणाम है... अगर ऐसा नहीं किया तो हम सब सिन्धु नदी की बाढ़ में समाप्त हो जायेंगे... धीरे-धीरे पूरा शहर व खण्डू गाँव बाढ़ की चपेट में आता जा रहा है... प्रकृति का प्रकोप दिन-प्रतिदिन तीव्रवेग से बढ़ रहा था। आखिरकार जब बचने का उपाय नहीं सूझा- तब जाकर पूरी पंचायत के लोग स्वामी जी की शरण में आये और विनम्रता से कहने लगे- हे प्रभु! हमें क्षमा करो, हमसे बहुत बड़ी भूल हुई है... आप तो बख्शणहार हैं, हमें अभयदान देकर, हमारी रक्षा करें...

स्वामी जी को तो किसी प्रकार का क्षोभ-दुःख तो था नहीं। वे तो परमात्मा की मस्ती में मस्त... सभी खण्डूवासी स्वामी जी के सम्मुख प्रार्थना करने लगे... परमात्मा की माया बड़ी प्रबल है... जिस प्रकार भगवान श्रीकृष्ण ने अनेक बार माँ यशोदा को अपने मुख में चतुर्भुज स्वरूप ब्रह्माण्ड के दर्शन कराये किन्तु माता भगवान के वास्तविक स्वरूप को पहचान न सकी... आपकी लीला अपरम्पार है... इससे पार पाना कठिन है... आपके श्रीचरणों में पंच विनय करते हैं कि जैसे भगवान श्री कृष्णचन्द्र ने गोवर्धन पर्वत उठाकर ब्रजवासियों की रक्षा की थी, उसी प्रकार आप भी सिन्धु नदी की बाढ़ से खण्डू गाँव की रक्षा कीजिये... प्रभु आप ही हमारे खेवनहार हैं...

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त् ना

म

सा

क्षी **५**५

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

άE 纲 स त् ना म सा क्षी 卐 Š 纲 स त् ना म सा क्षी 卐 άE 纲 स त् ना म सा क्षी 卐 Š 纲 स त् ना म सा क्षी **5**5 άE 纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

एक तरफ वरुण देवता का प्रकोप तो दूसरी ओर बिजली ऐसे कड़क रही जैसे प्रलय काल हो, सभी अत्यंत भयभीत... आप सर्वज्ञ हैं... आप सब कुछ जानते हैं... हमारे दोष-अवगुणों को न निहारकर, हमारी रक्षा करें भगवनृ!

खण्डू जल से घिर गया, विकल भये नर नार। वरुण देव से विनय कर, सतगुरु लियो उबार।।

तब युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने कहा- शास्त्रों का सिद्धान्त है, जीव को सदैव प्रार्थना व पुरुषार्थ करते रहना चाहिये... इसके द्वारा ही कार्य की सिद्धि होती है... अतः हम सब मिलकर प्रभु परमात्मा से प्रार्थना करते हैं। भगवान की कृपा से आज ही बरसात बंद हो जायेगी... स्वामी जी मुखारविन्दु से निकली वाणी सार्थक हुई और शीघ्र ही मूसलाधार वर्षा बंद हो गयी... स्वामी जी की आज्ञा से सिन्धु नदी के पावन तट पर हवन-यज्ञ का अनुष्ठान व दीन-हीन के लिये विशाल भण्डारे का आयोजन किया गया। वहाँ सभी संत-महात्माओं और गरीब- अनाथों को भोजन प्रसादी खिलायी गयी। साथ ही वहाँ सत्संग का कार्यक्रम भी किया गया। जिसमें सिन्ध के एक प्रसिद्ध भगत ने तो सत्संग में कहा- हमने सुना है कि पंचायत वालों ने सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज से झगड़ा किया है, जिसके परिणामस्वरूप सिन्धु नदी का पानी खतरे के निशान से ऊपर बह रहा है और बाढ़ का खतरा बना हुआ है... अतः ये बात अच्छी नहीं है... संतों को व्यर्थ में सताना नहीं चाहिये... 'सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज सर्व शित्मान हें... वह साक्षात् ईश्वरीय अवतार हैं, वह हम सबको तारने के लिये ही इस धरा धाम पर अवतार लेकर आये हैं...' हम तुच्छ बुद्धि के लोग उन्हें पहचान नहीं पा रहे हैं। आप लोगों ने अच्छा किया कि सभी पंचायत वाले स्वामी जी से क्षमा माँगकर उनके शरणागत हुए हैं... स्वामी जी अपने आप सिन्धु नदी को पीछे भेजकर आप लोगों की रक्षा करेंगे...

तब स्वामी जी ने सिन्धु नदी के पावन तट पर प्रेम भरी मस्ती में भगवान वरुणदेव की स्तुति की... 'सचिन जो दूलिह दिरया शाह..... व पल्लव- प्रार्थना....' जिसके परिणाम स्वरूप सिन्धु नदी का जल धीरे-धीरे पीछे हट गया। खण्डू गाँव डूबने से बच गया। ऐसी शक्ति देखकर सभी ने स्वामी जी का यशोगान किया और सभी नत मस्तक हो गये।

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज! S. M. R.

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

Š

麲

स

त्

ना

म सा

क्षी

55

纲

स

त्

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

'ॐ श्री सतुनाम साक्षी'

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा–106

कुम्भ में भक्तों की पुकार पर वर्षा की बहार.....

प्रयागराज इलाहाबाद का विशाल महाकुम्भ मेला... युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने लगायी थी वहाँ श्री प्रेम प्रकाश अन्न क्षेत्र छावनी... संत-महात्मा-साधू-फकीरों का अनोखा संगम... एक ओर त्रिवेणी संगम तो दूसरी ओर संत-महापुरुषों का समागम... अलौकिक दर्शन... पौष का महीना, कहीं सत्संग तो कहीं अखण्ड भजन-भोजन भण्डारा प्रसाद तो कहीं कथा व यज्ञ अनुष्ठान... चहुँ ओर आध्यात्मिक वातावरण... मठ-मण्डलेश्वर, आखाड़े, षड्दर्शन, उदासी, सन्यासी, वैरागी संतों-साधुओं का अनोखा दिव्य दर्शन व समागम... सभी की अपनी-अपनी वैदिक संस्कृति को साकार करती सुंदर छावनियाँ... अद्भुत व अवर्णनीय दृश्य था उस प्रयागराज कुम्भ मेले का... बस एक ही व्यथा थी उन प्रयागराज वासियों की... जिनके कारण वे बहुत दुःखी और चिन्तित थे। काफी समय से प्रयागराज में वर्षा न पड़ने से वहाँ की जनता और किसान बहुत परेशान थे... जिनके कारण वे साधु- संत-महन्तों पर मिथ्या दोष लगा रहे थे... आज ऐसा कोई भी सच्चा सिद्ध संत-महापुरुष नहीं है, जो हमारे शहर में वर्षा करा सके... इतने संत-महात्मा, महंत - मण्डलेश्वर कुम्भ मेले में आये हैं परन्तू सभी ने अपनी- अपनी आय बढाने के लिये सत्संग-भजन-भोजन आदि की अन्नक्षेत्र छावनी खोल रखी है। किसी भी संत को हमारे दुःख कष्टों की कोई परवाह नहीं, नादानीवश ही संतों के ऊपर इस प्रकार के दोष लगा रहे थे, उन्हें क्या मालूम कि संत तो सृष्टि के हर्ता-कर्ता व मालिक होते हैं... यह बात पूरे प्रयागराज कुम्भ मेले में फैल गई। वर्षा के न होने के कारण यहाँ के लोग बहुत दुःखी और परेशान हैं। यह बात संत-सेवाधारियों ने युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज को भी बताई... श्री गुरु महाराज जी की अवधूती मस्ती, फकीरी का आलम...

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल की अन्नक्षेत्र छावनी में नियमानुसार सत्संग- प्रवचन का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। पहले अनेक संत-महात्माओं ने सत्संग किया। तत्पश्चात् सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने ओजस्वी वाणी में कहा- संत-महात्मा तो राजाओं के भी राजा होते हैं... उनके पास किसी भी वस्तु पदार्थ की कमी नहीं होती...

चाह नहीं चिन्ता नहीं, मनुवा बेपरवाह। जिसको कुछ नहीं चाहिए, वो ही शाहन का शाह।।

उन्हें किसी चाह या चिन्ता की परवाह नहीं होती, वे तो बेपरवाह बादशाह होते हैं... जीवों के उद्धार के लिये ही ये भजन-सत्संग अन्नक्षेत्र आदि के कार्यक्रम किये जाते हैं... जिससे लोगों का कल्याण हो सके। संत-फकीरों को गरीब व असहाय नहीं समझना चाहिये वे तो परमात्मा के बन्दे हैं... उनके हाथों में अगाध शक्ति होती है... वे जब चाहें, जैसा चाहे, हर कार्य करने में समर्थ होते हैं...

स्वामी जी के प्रवचनों की यह बात सुनकर जो प्रयागराज निवासी सत्संग में खड़े थे, कहने लगे-अगर संत-महात्माओं में इतनी शक्ति है तो फिर हम शहरवासी लोग वर्षा न होने के कारण दुःखी क्यों हैं.. .? यहाँ के पशु-पक्षी सभी भूख-प्यास से व्याकुल हैं, किसानों की खेती नष्ट हो रही है.

🕉 श्री सत्नाम साक्षी 🖪 🕉 श्री सत्नाम साक्षी 🖫 🕉 श्री सत्नाम साक्षी 🖫 🕉 श्री सत्नाम साक्षी 🖫

ॐ श्री स त

स त् ना म सा

ना म सा क्षी **५**5 ॐ

श्री स त् ना म सा क्षी

53위전구干표55525

स त् ना म सा क्षी

άE

纲

कुँए-तालाब सब सूखते जा रहे हैं 'बिन पानी सब सून' वाली हमारी स्थिति हो गई है। कोई तो हमारी समस्या को दूर करे... स्वामी जी उनकी व्यथा सुनकर मौन हो गये... ध्यानस्थ हो गये... व ऊपर दृष्टि करके परमात्मा की ओर निहारने लगे!

कुछ समय बाद सद्गुरु महाराज जी ने कहा- ये सब प्रभु परमात्मा की लीलाएँ हैं। **हम सबका** कर्तव्य है- प्रार्थना करना, प्रार्थना में होती है बड़ी शक्ति.. आगे ईश्वर भला करेंगे... स्वामी जी ने बड़े ही भक्तिभाव के साथ स्वरचित सांरग भजन हृदय से गाया-

टेक: रिमझिम कर हरबार, बादल बरसे।

- बादल बनकर बरसण आया, आज सखी मन भवन सुहाया, बिजली कर चिमकार ।।
- चौदिश होई अति हिरयाली, अविन भयी अद्भुत उजियाली, चिमन खिड़ी गुलजार ।।
- 3. बुलबुल पपिहा नाचत मोरा, कोयल मैना गूंजत भौरा, मधुर करे झनकार।।
- 4. सरवर निदयां नाला भरिया, कहे टेऊँ सब कारज सरिया, होय जय-जयकार।।

स्वामीजी की वाणी में थी रूहानी शक्ति... साधनारत संगीत की स्वर सरिता... राग-रागनियों का था अनोखा अद्भुत रस... तान-तम्बूरे की थी रसीली हृदय को छूने वाली तान... और प्रभु परमात्मा ने रख लिया सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी का मान... बस! उसी समय ऐसी लीला हुई कि पूर्व दिशा की ओर से बादल घिर आये... चहुँ ओर काले-काले बादल मंडराने लगे... बिजली चमकने लगी और जोर-जोर से गर्जना होने लगी... मंद-मंद हवा चली और तेज वर्षा होने लगी... सभी प्रयागराज वासियों के चेहरे खिल उठे... स्वामी जीआपकी जय हो... हे जग के पालनहार! आप सचमुच ईश्वरीय अवतार हो... आपकी महिमा अनन्त है... फिर तो वर्षा इतनी तेज हुई कि पानी छावनियों में आ गया... सभी साधु संत परेशान होने लगे... स्वामी जी ने कहा- आप चिन्ता मत करो, आज तो घर बैठे गंगा मैया ने आकर दर्शन दिया है... प्रभु परमात्मा सब ठीक कर देंगे...

आखिरकार वह बरसात आठ दिन तक बरसती रही... सभी कुँए नदी तालाब भर गये... अब सभी ने मिलकर स्वामी जी से प्रार्थना की- हे दीनानाथ! बरसात बंद ही नहीं हो रही है, अब कृपा करके वर्षा को बंद करवा दें... स्वामी जी ने आकाश की ओर देखकर मन ही मन परमात्मा से प्रार्थना की- प्रभु! अब इन लोगों पर कृपादृष्टि करो... बस! स्वामी जी के कहने की देर थी और थोड़ी देर बाद वर्षा बंद हो गई और भगवान सूर्यदेव के दर्शन हुए... कौन समझ सकता है ऐसे अलख अविनाशी सत्पुरुषों को... हम अज्ञानी जीव उन्हें पहचान नहीं पाते और व्यर्थ ही संत- महात्माओं पर मिथ्या दोष लगाते हैं कि वे कुछ नहीं कर सकते... स्वयं ईश्वर सन्तों का मानवर्द्धन करते हैं।

ऐसा अद्भुत करिश्मा देखकर प्रयागराज के सभी नर-नारी और अनेक संत महापुरुषों को पक्का विश्वास हो गया कि सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज कोई साक्षात् ईश्वरीय अवतारी महापुरुष हैं... जिनके समक्ष अचल प्रकृति भी सदैव झुकती है...

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

άE

纲

स

त् ना

म

सा

क्षी

55

άE

網

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

ॐ श्री

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

網

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

ॐ श्री

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

3ँ० श्री स

स त् ना म

म सा क्षी **५**५

-ॐ श्री स त्

म साक्षी **५**5 % श्री स

ना म सा क्षी **5** 3 8 8 8 8

त्

श्री स त् ना स

सी **५५** ॐ श्री स त्ना

म

सा

क्षी

卐

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

सद्गुरु खामी टेऊँराम गुण गाथा–१०७

संत – फकीरों के समक्ष झुकता है सारा जहान.....

साधु होके सैर न कीता, क्यों फकीरी पाई है। मानुष होके राम न जिपया, मानुष देह लजाई है।।

सिन्ध प्रदेश में अनेकानेक संत, फकीर, मुर्शिद, सांईं, दरवेश हुए हैं, उन्हीं महापुरुषों की कड़ी में युगपुरुष परम तपस्वी सद्गुरु श्री स्वामी टेऊँराम जी महाराज एक उच्च कोटि के सिद्ध संत हुए हैं, जिन्होंने पूरा जीवन परमात्मा की बन्दगी करके सनातन धर्म का प्रचार-प्रसार कर अनन्त जीवों का मार्गदर्शन किया।

मोह अंधकार में डूबे संसारी जीव सत्पुरुषों को पहचान नहीं पाते, आँखों में अज्ञानता की पट्टी बाँधकर मिथ्या दोष और परिहास करते हैं, उन्हें क्या मालूम कि ये संत–महापुरुष की क्या मिहमा हैं..? परमात्मा की बन्दगी करने वाले साक्षात् परमात्म स्वरूप होते हैं। उनका लक्ष्य केवल भूले–भटके जीवों का उद्धार करना होता है। महायोगी सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज भी संत– महात्माओं को लेकर भिक्त–ज्ञान–प्रेम का प्रकाश करने यत्र– तत्र भ्रमण कर लोगों के हृदय में ज्ञान की ज्योति जाग्रत करते थे।

एक समय यात्रा करते हुए दोपहर के २ बजे सद्गुरु महाराज मण्डली सिहत टण्डाआदम शहर पहुँचे। फाल्गुन का महीना... गर्मी की दोपहर का समय... विचार किया कि किसी स्थान पर थोड़ा विश्राम किया जाये। दिन ढलने पर आगे चला जाए। मार्ग में एक बड़ा शिवालय बना हुआ था... जहाँ बैठने के लिए छायादार वृक्ष पेड़ पौधे और बरामदा बना हुआ था, साथ ही पानी का कुँआ भी था...

यह देखकर सभी साधु-संतों ने स्वामी जी से कहा- हे प्रभु! आपकी आज्ञा हो तो हम सब यहाँ कुछ देर आराम करें शाम को फिर यात्रा पर चला जाए। उस समय यात्रा में स्वामी जी के साथ स्वामी ग्वालानन्द जी, संत सर्वानन्द जी, संत गुरुमुखदास जी, संत बसंतराम जी, संत प्रेमानन्द जी, संत मुरलीधर, संत खीयाराम, संत हंसाराम, गोविन्दराम, वीरूराम आदि अनेक संत-महात्मा और भक्तजन थे। श्री गुरु महाराज जी की आज्ञा पाकर कुछ बरामदे में तो कुछ पेड़ों की छाया में चादर तौलिए बिछाकर बैठे ही थे कि शिवालय का पुजारी आकर क्रोध भरे स्वर में कहने लगा- आप लोग कौन हैं... यहाँ आकर क्यों बैठे हो... चलो उठो यहाँ से...

साधुओं ने बड़े ही विनम्र भाव से कहा- हम खण्डू गाँव के निवासी हैं... हमारे साथ श्री गुरु महाराज जी भी हैं... हम यात्रा पर निकले हैं। यहाँ थोड़ी देर विश्राम कर चले जायेंगे... इस पर पुजारी कहने लगा- हम यहाँ बिना किसी जान-पहचान के व्यक्तियों को बैठने नहीं देते... आप यहाँ शिवालय में मत बैठो... चले जाओ यहाँ से...

इस पर एक संत ने कहा- 'यह भगवान का मंदिर है... भगवान तो स्वयं संतों की सेवा करते हैं... वे संतों के सहायक-रक्षक होते हैं... "मैं संतिन के पीछे जाऊँ" हम थोड़ी देर विश्राम कर चले जायेंगे।' इस पर पुजारी क्रुद्ध होकर कहने लगा- 'ये ज्ञान की बातें हमें न सुनाओ, हम जानते हैं। आप

άE 纲 स त् ना म सा क्षी 卐 άE 纲 स त् ना म सा क्षी 卐 άE 纲 स त् ना म सा क्षी 卐 άE 纲 स त् ना म सा क्षी **5**5 άE 纲 स त् ना म सा

क्षी

卐

तो यहाँ से उठो और चले जाओ।' अब कौन समझाए इस नादान बुद्धि वाले पुजारी को... संतों ने बड़े स्नेह भाव से बार-बार आग्रह किया कि हम थोड़ी देर विश्राम कर चले जायेंगे... पर वह पुजारी न माना...

सद्गुरु महाराज जी, भगवान की इस लीला को देखकर मंद-मंद मुस्करा रहे थे फिर पद्मासन लगाकर ध्यानस्थ हो गये। कुछ देर तक वाद-विवाद चला... आस-पास के लोगों ने भी पुजारी को बहुत समझाया... ये भजनीक संत-महापुरुष हैं... थोड़ी देर आराम करके चले जायेंगे पर पुजारी अपने हठ पर रहा... आखिरकार संत-सेवाधारियों ने फैसला किया, चलो कहीं अन्य स्थान पर ही विश्राम कर लेंगे। किन्तु पहले थोड़ा भजन-भाव कर लें - फिर आगे चलेंगे... वैरागी, संत, महापुरुषों की अपनी मौज़, फकीरी का अनोखा आलम... सभी संतों ने निकाले अपने-अपने वाद्ययंत्र और स्वामी जी ने बड़े ही भावभरी ओजस्वी वाणी में गाया भजन-

जिहं दर में दर्द नाहे, भजु तूं परे तिहं दर खाँ, बेगम हुजे ज्ञानी, गोशो कंजाई तिहं घर खाँ....

स्वामी जी ने वैराग्य की मस्ती में सत्संग किया- जिसके दिल में दर्द नहीं है उस इंसान की संगति से दूर रहना चाहिए। भले ही वह ज्ञानवान क्यों न हो... जो दूसरों के दु:ख में सहायता नहीं करता तो ऐसे ज्ञानी की संगति से कोई लाभ नहीं होगा... उससे किनारा करना ही अच्छा है। किलयुग का कठिन समय आ गया है, जिसमें हकीकत के मुकाबले बाहरी आडम्बर पर ध्यान दिया जाता है। अतः इनसे सावधान रहना चाहिए।

स्वामी जी ने भजन व सत्संग इतने भाव भरे वैराग्य की मस्ती और दर्दभरी आवाज में गाया कि वहाँ जितनी भी जनता थी... वह शान्त हो गई। लोगों के नेत्रों से अश्रुधार बहने लगी। चहुँ ओर भीड़ लग गई... सभी पश्चाताप की अग्नि में जलने लगे... सभी का मस्तक शर्म से झुक गया... न जाने स्वामी जी की आवाज में ऐसी कौन सी जादुई शक्तिश्री कि जो कोई भी उस मार्ग से गुजर रहा था, वही रुककर बड़े ध्यान से सुनने लग जाता... ये दृश्य देखकर सभी हैरान हो गये। ये कोई साधारण मानव नहीं लगता, साक्षात् ईश्वरीय शक्ति है... जो भूले-भटके जीवों को सत्मार्ग दर्शन कराने अवतिरत हुए हैं... अर्थात् मोह अंधकार में डूबे भक्तों को पार लगाने के लिए ही होता है - संत, महापुरुष, तपिस्वयों का अवतार... स्वयं दुःख, कष्ट सहन कर दूसरों को सत्यता की राह दिखलाते हैं - ये संत-महापुरुष... ऐसे सिद्ध तपस्वी संतों द्वारा ही ज्ञान का प्रकाश होता है...

जिन जिन हरि के प्रेम में, दीना तन मन प्रान। टेऊँ तिनके कदम पर, झुक झुक पड़त जहान।।

जो परमात्मा को समर्पित हो जाता है, जिसका तन-मन परमात्मा के श्रीचरणों में लगा रहता है। समय पाकर उस तपस्वी महापुरुषों के समक्ष सारा संसार झुकता है, नत् मस्तक होता है... फिर क्या था सभी ने स्वामी जी से क्षमा याचना माँगी और आदरपूर्वक, सहसम्मान प्रेम भाव से सेवा आदि करके आशीर्वाद लिया।

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

S. M. R.

άE

纲

स त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

麲

स

त्

ना

म सा

क्षी

55

άE

麲

स त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

網

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

άE

麲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

ॐ श्री

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

'ॐ श्री सत्नाम साक्षी'

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

Š

纲

स

त्

ना

म

सा क्षी

卐

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

卐

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम गुण गाथा–108

आता जो भी गर्व बढ़ाकर – जाता गुरू को शीश नवाकर

रज्जब चले न क्रोध बल, जहाँ क्षमा तंह साध। जैसे दामिनी दरियाह पई, कर सी कौन उपाधि।।

सिन्ध प्रदेश के पहुँचे हुए युगपुरुष सिद्ध महापुरुष श्री सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के जीवन में भी अनेक कठिनाईयाँ आईं। किन्तु सत्य व धर्म पर चलने वालों के लिए क्या भय... धबराये नहीं... निर्भय होकर भगवद् भजन में तल्लीन रहे... कठिन तप-साधना-भक्ति ने सभी को झुका दिया। भगवद् भक्ति के प्रभाव से उनकी यश-कीर्ति दिन प्रतिदिन बढ़ती गई। संसार का परित्याग कर परमात्मा को समर्पित हो गये। समय पाकर सारा जहान उनके सामने नम मस्तक होने लगा।

सिन्ध प्रदेश टण्डा आदम में जब युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने तप साधना से रेत के टीले पर श्री अमरापुर दरबार (डिब्र) का निर्माण किया। तब अनेक किटनाईयों का सामना करना पड़ा... जो कार्य सरकार के लिए भी मुश्किल हो रहा था वह स्वामी जी ने सहजता से कर दिया। इतनी ऊँची-ऊँची बालू रेत के टीले को बाँधना अर्थात् असम्भव सा कार्य... यह अद्भुत रहस्यमयी सिद्ध कार्य देख प्रतिद्वन्दीयों से रहा नहीं गया... उनसे स्वामी जी की यह अचरज भरी शक्ति सहन नहीं हो पा रही थी... तो प्रतिदिन कोई न कोई निन्दनीय कार्य कर सरकारी अधिकारियों को झूठी दरख्वास्त भेज देते थे... जिससे स्वामी जी की निन्दा हो, आश्रम को तोड़ दें... किन्तु महापुरुषों की सिद्ध शक्ति अद्भुत होती है, उन्हें कोई समझ नहीं पाता.

स्वामी जी को कितना भी सताया जा रहा था किन्तु उन्होंने कभी भी किसी का अहित नहीं सोचा, न ही किसी को कुछ कहा... सदैव चुप रहे... ऐसी उल्टी-सीधी अफवाहपूर्ण झूठी बातों में आकर एक समय जिला मजिस्ट्रेट चार पाँच पुलिस किमीयों को साथ लेकर श्री अमरापुर दरबार (डिब्र) पर पहुँचा। वहाँ थोड़ा गुस्सा होकर संत महात्माओं से कहा- 'आप यहाँ क्यों बैठे हो? किसकी आज्ञा से यहाँ आये हो? ये सरकारी जंगलात है...' तब संतों ने कहा- 'भाई साहब! हमें तो यहाँ श्री गुरुदेव भगवान की आज्ञा हुई है... उन्होंने कहा है कि ये रेत के टीले की मिट्टी तेज हवा में उड़कर शहर में आ जाती है... शहरी लोग इस कारण बहुत परेशान होते हैं... वहाँ के सभी घर परिवारों वालों को बहुत नुक्सान पहुँचता है... अतः उनकी सहायतार्थ युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने हमें आज्ञा दी है कि इस रेत के टीले को लीपा-पोती (गोबर, पानी, मिट्टी) कर यहाँ सुन्दर पेड़-पोधे, बाग-बगीचे लगा दें, जिससे किसी को नुक्सान न

ॐ श्री सत्नाम साक्षी फ ॐ श्री सत्नाम साक्षी फ ॐ श्री सत्नाम साक्षी फ ॐ श्री सत्नाम साक्षी फ

άE 纲 स त् ना म सा क्षी 卐 άE 纲 स त् ना म सा क्षी 卐 άE 纲 स त् ना म सा क्षी 卐 Š 纲 स त् ना म सा क्षी **5**5 άE 纲 स त् ना

म

सा

क्षी

卐

पहुँचे... सभी इस स्थान का आनन्द ले सकें! ये सभी श्री गुरु महाराज जी के कहे अनुसार किया जा रहा है...'

इस पर मजिस्ट्रेट ने क्रोधित स्वर में कहा- 'चलो हमें भी अपने सद्गुरु महाराज जी के पास ले चलो।' तब साधु-संत उस मजिस्ट्रेट साहब को 'महायोगी सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज' के पास ले आये। उस समय स्वामी जी परमात्मा की भजनानन्द की अलोकिक मस्ती में खड़े थे... तार परमात्मा से जुड़ा हुआ था... अवधूती मस्ती, मुख मण्डल पर तेजोमय आभा...

बस! फिर क्या था। दर्शन मात्र से ही मजिस्ट्रेट का क्रोध गुस्सा न जाने कहाँ चला गया... एक टकटकी से स्वामी जी को निहारता रहा... मन ही मन प्रेम विह्ल होकर अश्रुधार बहाने लगा... कुछ क्षण बाद हाथ जोड़कर क्षमा याचना माँगने लगा... शान्तचित्त होकर प्रार्थना करने लगा... हे दरवेश फकीर सांई! हमें क्षमा कर दो... हमें नहीं मालूम कि ऐसे तेजोमय शक्ति वाले संत-महापुरुष भी इस धरा पर हैं... आपको देखकर तो ऐसा प्रतीत होता है जैसे ईश्वरीय साक्षात्कार हो रहा है... मैंने भी अनेक दरवेश फकीर संतों के दर्शन किये हैं किन्तु ऐसा अद्भुत विलक्षण दर्शन-दीदार किसी महापुरुष-संत में नहीं हुआ है, जैसा कि आज मुझे हो रहा है... मैं दूसरों के कहने पर आया तो था आश्रम हटाने को... पर यहाँ आकर आपकी सेवा, परोपकार, भक्ति-प्रेममय आध्यात्मिक वातावरण एवं आपके दर्शन-दीदार ने मेरा हृदय परिवर्तित कर दिया। ऐसी होती है महापुरुषों की अद्भुत शक्ति...

वह मजिस्ट्रेट थोड़ी देर आश्रम पर रुका। ढ़ोढा-चटनी- छाछ आदि प्रसाद खाया और दस रुपये आश्रम की सेवा हेतु भेंटा रखकर स्वामी जी को यह कह कर मथा टेककर विदा ली कि मेरे लायक कोई भी सेवा हो तो अवश्य बताना... इस प्रकार प्रतिद्वन्द्वीयों द्वारा अनेक बड़े-बड़े अधिकारी, कलेक्टर, सरपंच, तहसीलदार आदि सद्गुरु महाराज जी को नीचा दिखाने व आश्रम को तुड़वाने के लिए भेजे जाते। किन्तु भक्ति की शक्ति और परमात्म कृपा से किसी भी प्रकार की कोई आँच नहीं आयी। सभी समय समय पर श्री गुरु महाराज जी की डिब्र पर आये और स्वामी जी के दर्शन करके, ढ़ोढा-चटनी प्रसाद खाकर भेंटा दिक्षणा रखकर चले गये। शास्त्रों में आता है कि पूर्ण तत्त्ववेता और वैरागी संत-महात्माओं के दर्शन मात्र से क्रोध और बुरे संकल्प नाश हो जाते हैं। ऐसे थे परम उपासक, वीत अनुरागी सद्गुरु स्वामी श्री टेऊँराम जी महाराज!

शत्-शत् नमन - धन-धन सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज!

संकलन व संपादन 'साधक' प्रेम प्रकाशी संत मोनूराम जी श्री अमरापुर दरबार (डि<u>ब</u>), जयपुर άE

纲

स त्

ना

म

सा

क्षी

55

Š

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स त्

ना

म

सा क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा

क्षी

55

άE

纲

स

त्

ना

म

सा